राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 100/- संख्या 2355
इतिकाण्ड
अष्टम खण्ड
एक
जम्बो पोस्टर
मुफ्त!
ESiti Forum

अष्टम खण्ड

॥ इति काण्ड ॥

वरण काण्ड, ग्रहण काण्ड, हरण काण्ड, शरण काण्ड, दहन काण्ड, रण काण्ड और समर काण्ड संक्षेप में-

अब तक आपने पढ़ा कि क्रूरपाशा पूरी पृथ्वी पर ब्लैक पॉवर्स का राज्य कायम करने के लिए युद्ध छेड़ चुका है। क्रूरपाशा ने पृथ्वी पर हाहाकार मचा दिया है। मानवजाति अंत की ओर बढ़ रही है लेकिन हर युग में अवतरित हुए हैं योद्धा। इस युग में क्रूरपाशा से टकरा गए हैं नागराज और सुपर कमाण्डो ध्रुव। क्रूरपाशा ने नागराज की पत्नी और नागशक्ति की सम्राज्ञी राजकुमारी विसर्पी का हरण कर लिया है। यूं तो इस युद्ध में नागराज के साथ हैं कई

शक्तियां लेकिन क्रूरपाशा का पलड़ा भारी पड़ रहा है। नागराज की सबसे घातक और ताकतवर शक्ति उसके परम मित्र ध्रुव की जान जा चुकी है। युद्ध अब अपने चरम पर है। ना जाने कितनों की बलि ले लेगा यह युद्ध। क्या यह सुपरहीरो इस युद्ध को जीत पाएंगे या पृथ्वी पर अब राज करेगा क्रूरपाशा? आइए जानते हैं सन् 2025 के पृथ्वी के भविष्य को-
इतिकाण्ड

संजय गुप्ता की पेशकश!
राज कॉमिक्स है मेरा जनून!
प्रथम अध्याय
महाबलि
लेखक : अनुपम सिन्हा, जॉली सिन्हा
चित्र : अनुपम सिन्हा
इंकिंग : जगदीश, विनीत सिद्धार्थ, सुनील
सुलेख एवं रंग : सुनील पाण्डेय
इफेक्ट्स : जॉन पलीस, प्रवीन सिंह
सह सम्पादक : मंदार गंगेले
सम्पादक : मनीष गुप्ता
Esiti Forum
Provide By : www.ESiti.in/forum

ध्रुव सचमुच मर गया ?
हां, पिताश्री!
तूने अपनी आंखों से देखा है न ?
अलंध्या के आकाश में उड़ती हर चट्टान हमारी जासूस है! और उनमें से कुछ एक से मुझे मानव सेना की स्थिति का पता चल गया था!
कैसे? कैसे किया तूने इस असंभव को संभव?
"न जाने कैसे इतने विशाल ग्रह पर भी उन्होंने अलंध्या नगर की स्थिति पता कर ली थी और वे इधर ही बढ़ रहे थे। मैं अपनी भयंकर शक्तियों वाली इच्छाधारी नागों की सेना के साथ उधर ही बढ़ चला-"
"गणना के अनुसार हमारी और उनकी मुठभेड़ रेत सागर के छोर और अलंध्या नगर की सीमा रेखा के संगम पर होनी थी-"
"हम नागों के पास अंधेरे में भी अवरक्त किरणों की मदद से देख सकने और जीभ से सूंघकर शिकार का पता लगा सकने की अद्भुत क्षमता थी-"
"और ये क्षमता मानवों पर भारी पड़ने वाली थी! अलंध्या की कालिमा में तो हम उनको ढूंढ सकते थे, देख सकते थे-"
"पर उनको तो ये पता भी नहीं था कि उनके जल्लादों की सेना उनके एकदम पास आ चुकी है-"
"युद्ध के स्थान तक पहुंचने में हमको पूरा एक दिवस चक्र लग गया था-"
"पर उस स्थान पर तो कुछ भी नहीं था-"
"हमारी अवरक्त किरणें और सूंघ सकने वाली घ्राण शक्ति भी किसी जीवित वस्तु का कोई पता नहीं लगा पा रही थीं-"
"मानव सेना ने शायद बड़ी चालाकी से अपना रास्ता बदल दिया था-"

"परन्तु ऐसा तो वे तभी करते जब उनको उनकी तरफ बढ़ने वाले खतरे यानी नागसेना का पता होता! शायद उनको ये सूचना उसी स्त्रोत से मिल गई थी जिस स्त्रोत से उनको अलंध्या नगर की स्थिति का पता चला था-"
"मैंने दुश्मन को शीघ्रातिशीघ्र रेत में मिला देने के लिए चर्तुव्यूह बनाया था! ताकि दुश्मन को चारों तरफ से घेरकर मारा जा सके-"
"पर अब सेना को चार भागों में बांटने की मेहनत व्यर्थ हो गई थी-"
"क्योंकि लड़ने के लिए दुश्मन वहां पर था ही नहीं-"
"ऐसा सोचकर मैं खुद गलती कर रहा था-"
"पहला नुकसान नाग सेना को ही हुआ-"
"और कुछ समझने से पहले ही हम खुद चार अलग- अलग हिस्सों में बंटकर घिर चुके थे-"
"हमारे चारों तरफ बने रेतीली टीलों को तोड़ती हुई मानव सेना बाहर आ रही थी-"
थैंक्यू देवाशीष! तुम्हारी सूचना एकदम सही थी!
तुम्हारा सोचना भी सही था ध्रुव! इन सांपों की इंफ्रारेड से अंधेरे में देख सकने की मुख्य शक्ति को हमारे ऊपर लिपटे कंप्रेस्ड वॉटर और रेत के लेप ने बेकार कर दिया!
अब इन सांपों के सिरों को कुचलने का समय है, सर!

एक छोटी सी सफलता से इतने उत्साहित मत हो मानवों ! हम इच्छाधारी नाग हैं! धुंए को आग और रेत को चट्टानों में बदलने की शक्ति हमारे पास है !
रेत के लेप ने तुम्हारी जानों को सिर्फ कुछ पलों के लिए ही बचाया है !
आगे बढ़ो नागों, और दूर कर दो ब्लैक पॉवर्स की राह में बिछे इन रोड़ों को !
हमारे और तुम्हारे बीच में मौत की लक्ष्मण रेखा खिंची है, विषांक !
लेजर माइंस की लक्ष्मण रेखा !
और उसकी शक्ति का नमूना तुम्हारा एक नाग सैनिक तुमको दिखा चुका है !
तुम विसर्पी के भाई हो ! और इस नाते मैं तुमको वापस जाने का एक मौका देता हूं !
ये लाल रोशनियों के बाक्सेज सुरक्षित रास्ता दिखा रहे हैं ! इन पर चलकर तुम वापस जा सकते हो !
हम वापस जाएंगे जरूर ध्रुव ! लेकिन इन लाल रोशनियों पर चलकर नहीं...
... बल्कि तुम सबके खून से लाल हुई जमीन पर चलकर !
"रास्ता साफ हो चुका था-"
"और अब मानव सेना को इच्छाधारी नागों के कहर से बचा सकने वाला कोई भी नहीं था-"
"पर मेरा सोचना एक बार फिर से गलत था-"

" मानवों के पास जो अत्याधुनिक हथियार थे, वे नाग सेना को चमत्कारी शक्तियां होने के बावजूद भी नुकसान पहुंचा रहे थे-"
" अब हमको भी इच्छाधारी शक्तियों का प्रयोग करना ही था-"
" इससे एक फायदा और हुआ। अपनी सेना को नुकसान पहुंचते देखकर ध्रुव का ध्यान भटकने लगा-"
तेरे दिव्यास्त्र अपना निशाना नहीं ढूंढ पा रहे हैं ध्रुव!
" और दिव्यास्त्रों को चलाने के लिए मस्तिष्क का केन्द्रित होना बहुत जरूरी था-"
शायद तू अपनी सेना को गाजर-मूली की तरह कटता देखकर घबरा गया है!
" मेरी शक्तियों को उसके दिव्यास्त्र ही रोक पा रहे थे। अब मेरे पास उस पर भारी पड़ने का साफ मौका था-"
पर तेरी ये घबराहट जल्दी ही दूर हो जाएगी!
तेरी जान के साथ!
नाग, मानव सेना पर सिर्फ अपनी इच्छाधारी शक्ति के बल पर भारी पड़ रहे हैं!
इसीलिए मुकाबला बराबरी का नहीं है!
ये 'ओट अस्त्र' इस क्षेत्र में फैली हर पराशक्ति को रोक लेगा!
इच्छाधारी शक्ति को भी!
फिर मुकाबला बराबर का होगा!

"इच्छाधारी शक्तियां अब काम नहीं कर रही थीं -"
और मानवों की 'फायर पॉवर' अब 'स्नैक पॉवर' पर भारी पड़ रही थी-"
"लग तो ऐसा रहा था कि अब नाग सेना के पैर जल्दी ही उखड़ जाएंगे-"
"पर इस बार भी मैं गलत था-"
"क्योंकि ओट शक्ति ने ध्रुव की दिव्य शक्तियों को भी रोक दिया था-"
अब या तो तू ओट अस्त्र को वापस बुलाकर अपनी जान बचा ले या इसको चलता छोड़कर मानव सेना की जान बचा ले!
जान किसी एक की ही बचेगी! तेरी या मानव सेना की!
तूने कुल्हाड़ी पर पैर मार दिया है ध्रुव! क्योंकि दिव्यास्त्रों के बगैर तू मेरे सामने दो पल भी नहीं टिक पाएगा!
विषांक के पास ऐसी अद्भुत शक्तियां हैं जिनको ओट अस्त्र रोक नहीं सकता!
कड़ाक
जैसे मानसिक शक्तियां!
Provide By : www.ESiti.in/forum

और मेरे शरीर में समाई हुई क्रूरपाशा की वह अद्भुत अमृत शक्ति जो मुझे किसी निर्जीव वस्तु में कुछ देर के लिए प्राण डालने की भी अद्भुत क्षमता देती है!...
...और प्राण निकालने की भी!
"उस वक्त ध्रुव को मारने के लिए तो मेरा दुपट्टा ही काफी था-"
"पर मैं फिर गलत सोच रहा था-"
"एक दुपट्टा ध्रुव के पास भी था। और उसमें भी दिव्य प्राण थे-"
"अद्भुत युद्ध था वह-"
"दोनों वस्त्र एक-दूसरे को तार-तार करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा रहे थे-"
"और इस युद्ध का अंत तभी हुआ जब दोनों में से एक वस्त्र का अंत हो गया-"
"और वह दुपट्टा मेरा था-"
"ध्रुव और मेरा युद्ध लम्बा खिंच रहा था-"
"और घायल नाग सैनिकों की तादाद बढ़ रही थी-"
"हम शिकारी से शिकार बन रहे थे-"
"अब इस युद्ध को जीतने का एक ही तरीका था-"
"मानव सेना का सिर काटना-"

" मानव सेना का सिर, यानी ध्रुव का सिर-"
" और यह काम आसान सा था! क्योंकि ध्रुव यह नहीं जानता था कि मेरे शरीर के अन्दर ही एक और महाशक्ति मौजूद थी-"
" शरीर से आयुध पैदा कर सकने की शक्ति! और यह कोई पराशक्ति नहीं थी जिसे ओट अस्त्र का असर रोक पाता-"
" पुत्र! युद्ध जब लंबा खिंच रहा था तो तूने उसी समय परम अस्त्र का प्रयोग क्यों नहीं किया ?"
" क्योंकि मैं ध्रुव को अपने दम पर मारना चाहता था, पिताश्री-"
" और यह मैं आराम से कर सकता था! अगर ध्रुव भी उसी वक्त पास में गिरे एक नागास्त्र को न उठा लेता तो-"
" मुझे हमेशा लगता था कि फुर्ती और चपलता में मानव नागों का मुकाबला कभी नहीं कर सकते! लेकिन उसकी फुर्ती तो बेमिसाल थी-"
" अस्त्र चला सकना तो दूर वह तो पैदा होते ही अस्त्रों को काट रहा था-"
" मेरे शस्त्र कौशल में दस हज़ार की सेना को अकेले रोक सकने की क्षमता थी-"
" लेकिन फिलहाल तो ऐसा लग रहा था कि ध्रुव मेरे जैसे दस हजार सैनिकों को अकेला ही रोक सकता था-"
" और मेरे शरीर पर लगने वाले घावों की संख्या बढ़ती जा रही थी-"
" पर आखिरी दांव अभी भी मेरे पास था! ध्रुव ने मानव सेना के लिए अपनी जान को दांव पर लगाया था! पर मैं अपनी विजय के लिए नाग सेना की जान को दांव पर लगाने जा रहा था!"

"नागों से शक्ति लेने आ रहा था मैं! और ऐसा मैं आराम से कर सकता था-"
"उनका राजा हूं मैं! और ये मेरा हक है-"
"हर नाग की शक्ति मेरे शरीर में आकर जुड़ती जा रही थी! और मेरा बल दुगुने से चौगुना होता जा रहा था-"
"इस कारण से नाग सेना जरूर कमजोर पड़ रही थी-"
"परन्तु इस वक्त ध्रुव को खत्म करना ज्यादा जरूरी था-"
"अब ध्रुव मेरी शक्ति के आगे नहीं ठहर सकता था! मेरी एक-एक भुजा में एक-एक पर्वत जितना वजन और बल था-"
"ध्रुव को कुछ भी नहीं बचा सकता था! वह गंडासे के नीचे पड़े बकरे की तरह छटपटा रहा था-"
"उसके हाथ रेत में गड़ते जा रहे थे-"
"मैं समझ गया था कि ये मौत के पहले की छटपटाहट है! वह कुछ भी पकड़कर बचना चाह रहा था-"
"हां, पिताश्री! क्योंकि वह छटपटा नहीं रहा था! उस वक्त भी उसका दिमाग चल रहा था! वह रेत में कुछ ढूंढ रहा था-"
"और जो चीज वह ढूंढ रहा था, अगले ही पल वह मेरे मुंह के अंदर थी-"
ये... ये क्या है?
"पर मैं एक बार फिर गलत था-"
"फिर से गलत?"

मेरे शरीर में अंदर से तेज दबाव क्यों महसूस हो रहा है?
क्योंकि तुमने 'कंप्रेस्ड वॉटर' पी लिया है, विषांक!
और ये गर्मी और हवा पाकर फैलता है!
कितना?
हम्म्!। आइडिया तो नहीं है, पर उस शीशी के ऊपर एक लाख लीटर लिखा हुआ था!
आर्रर्रर्घघ!
"मेरी एक-एक शिराएं फटती जा रही थीं, और एक-एक करके नागशक्ति मेरे शरीर से बाहर निकलती जा रही थी-"
"अपना अंत मुझे सामने नजर आ रहा था-"
"पर मरने से पहले मुझे ध्रुव को मारना ही था-"
"मारना ही था-"
"मारना ही था-"
"तब तूने परम अस्त्र का प्रयोग किया!"
"है न?"

" हां पिताश्री! पर उससे पहले कुछ और भी हुआ-"
" ध्रुव का दिव्य वस्त्र उसके शरीर पर अपने आप ही लिपटने लगा-"
" शायद वह उसको बचाना चाह रहा था-"
" परंतु परम विनाशक तो परम था-"
" वह ध्रुव की छाती पर लिपटे दिव्य वस्त्रको भी चीरता हुआ उसके शरीर में अंदर तक जा धंसा-"
" और ध्रुव के गले से ऐसी चीख निकली जो शायद पूरे ब्रह्मांड में गूंज उठी होगी-
" और ध्रुव का बेजान शरीर अलंध्या की धरती से जा टकराया-"
" मर गया था ध्रुव-"
और दिव्य वस्त्र अब उसका कफन बन गया था-"
और उसके साथ-साथ मानव सेना का हौसला भी मर गया था।
इसीलिए जब मैं बचे-खुचे नागों के साथ लौटने लगा तो उन्होंने हमको रोकने की कोशिश तक नहीं की।
Provide By : www.ESiti.in/forum
ESiti Forum

एक मिनट! एक मिनट! ध्रुव का मृत शरीर मैं अपनी आंखों से देखना चाहता हूं!
ये सच है...
...सच है...
...सच है!
तूने सच में ध्रुव को मार दिया है!
आऊ! संभल के पिताश्री!
अब नागराज और उसके दोस्तों की बारी है! उसके बाद मेरे ब्रह्मांड पर राज की राह में बिछे हुए सारे कांटें हट जाएंगे!
और उसके बाद पूरे ब्रह्मांड पर ब्लैक पॉवर्स के शहंशाह क्रूरपाशा का राज होगा!
ही ही ही! भोले- भाले मानव!

मानव शायद सच में भोले भाले थे ! और यति भी -
वर्ना वे यूं आपस में ऐसा युद्ध न लड़ रहे होते, जिसमें जीत सिर्फ एक की ही होनी थी-
ब्लैक पॉवर्स की -
क्योंकि अभी तो ब्लैक आर्मी मैदान में उतरी तक नहीं थी, फिर भी क्रूरपाशा को चुनौती देने वाले मौत से जूझ रहे थे -
यति इस वक्त हमारे दुश्मन जरूर हैं, परन्तु फिर भी इनके रण कौशल की दाद देनी पड़ेगी !
अगर ये सीमित शक्तियों से ऐसा मुकाबला कर रहे हैं तो पूरी शक्ति मिल जाने के बाद न जाने क्या करेंगे !
अलंध्या की वायु मेरे लिए उतनी प्रतिकूल नहीं है जितनी कि पृथ्वी की वायु होती है !
वर्ना में ज्यादा देर तक इतने खतरनाक प्राणियों का मुकाबला नहीं कर पाती !
यति संख्या में बहुत अधिक हैं ! परन्तु मेरे पास भी उतनी ही शाखाएं हैं जितनी कि उनके पास बाजू हैं ! और ये शक्ति मुझे भी उसी ब्लैक एनर्जी से गुजरने के बाद मिली है, जिसने इनको खूंखार बनाया है !
नागायण
द्वितीय अध्याय
मृत्यु शोध

हर योद्धा अपनी पूरी जान लगाकर लड़ रहा था-
लेकिन यतियों की बड़ी संख्या को रोकने वाली या तो साकार- आकार थी-
और या फिर नागराज !

ये युद्ध तो हमारे हाथों से फिसल रहा है ! रणनीति बदलनी होगी...
दुश्मन की शक्तियों को समझना होगा ! और उसी के अनुसार अपने योद्धाओं को इनके सामने भेजना होगा!
काश! यतिराज यहां होते तो ये युद्ध जीतना बहुत आसान होता !
यति आमात्य!
हमारे सेनापतियों को बुलाइए! फिर मैं बताऊंगी कि किस योद्धा को किसके- किसके सामने जाना है!
" यांत्री, द्रोण से भिड़ेगा! इनसे दोस्ती के दौरान मुझे पता चल चुका है कि वह एक जैविक रोबॉट है! और यांत्री के अंदर किसी भी तरह के यंत्र पर नियंत्रण की अद्भुत क्षमता है-"
" नागरानी की शक्तियों से अभी हम परिचित नहीं हैं! इसीलिए उसके सामने शोधति यति को एक टुकड़ी के साथ भेजो! वह दुश्मन की शक्तियाँ समझने और उसके अनुसार आक्रमण करने में माहिर हैं-"
" वनपुत्र ने ब्लैक पॉवर्स को अपने अंदर समा लिया है! इसीलिए वह एक खतरनाक प्रतिद्वन्द्वी बन गया है! परन्तु मुझे विश्वास है कि वृक्षों के अनुरूप उसकी शक्तियों को डाडाल यति संभाल लेगा ! उसके पास भी कुछ वैसी ही शक्तियां हैं- "
" शायद थोड़ी ज्यादा ही ।"

" नागराज एक बड़ी मुसीबत है! उसके पास प्रलंयकारी नाग शक्तियों के साथ-साथ महाविनाशकारी दिव्यास्त्र भी हैं! उसको हराया नहीं जा सकता! सिर्फ कुछ समय के लिए रोका जा सकता है! और ये कार्य शिलाचूर के अलावा और कोई नहीं कर सकता-"
" आप एक प्रतिद्वन्द्वी को भूल रही हैं, यति रानी! और उसके पास ऐसी घातक शक्ति है जो एक ही वार में कई यतियों का संहार कर सकती है-"
" आप साकार-आकार के तिलिस्म की बात कर रहे हैं! यति आमात्य! उसके सामने मैं खुद जाऊंगी-"
" आप? पर... पर... आप तो!"
" उसको और कोई नहीं रोक सकता, अमात्य! वैसे भी दुश्मन को पता चलना चाहिए कि यतिरानी सिर्फ एक कोमल यति स्त्री नहीं है! उसने कई युद्ध अपने दम पर जीते हैं! और उसके पास भी यति भुलैया जैसी तिलिस्म की शक्तियां हैं-"

कई उम्मीदें अब टूट रही थीं-
क्या ये सच है बाबा कि ध्रुव... वीर गति को प्राप्त हुआ?
और वह भी विषांक के हाथों!
विषांक के नहीं, परम विनाशक के हाथों!
परन्तु जीना मरना तो ईश्वर के हाथ में है!
तुमने कुछ किया तो युद्ध शुरू होने से पहले ही खत्म हो जाएगा!
ओफ़! अब तो मुझे आदेश दीजिए। वर्ना ये युद्ध हमारे हाथों से फिसल जाएगा!
वैसे अभी विषांक की जिन्दगी भी खतरे में है! इस वक्त कुछ भी किया तो क्रूरपाश के लिए उसकी उपयोगिता खत्म हो जाएगी! वह मार डालेगा उसे! कुछ समय के लिए इंतजार करना ही होगा!
तो कहीं पर जश्न-
देखा महाकाल-छिद्र! ये है यतियों का असली रूप!
ये चाहे इन पांचों को हरा न पाएं, पर थकाकर कमजोर तो कर ही देंगे!
और तब शुरू होगा ब्लैक फोर्स का अटैक!
शाबाश क्रूरपाश! अब सिर्फ नागराज ही तुम्हारे रास्ते का इकलौता कांटा...
कहीं गम था-
सम्राट! सम्राट!
आपको चिकित्सक शल्य कुमार विषांक के पास बुला रहे हैं!
अतिशीघ्र!
आ रहा हूं! अभी आ रहा हूं!
क्या हुआ विषांक को?
इसका ठीक होना बहुत जरूरी है!
इनकी हालत बिगड़ती जा रही है सम्राट! इनके शरीर की सारी नसें फट चुकी हैं! हम जानते हैं कि ये आपके पुत्र हैं पर...
इसके पुत्र होने से हमारा कोई लेना-देना नहीं है!
जब तक ये जिन्दा है, नागशक्ति हमारे साथ है! अगर नागशक्ति नागराज की तरफ चली गई, तो कुछ भी हो सकता है!
पर... पर सम्राट मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि इनको कैसे बचाऊं? इन पर कोई भी दवा असर नहीं कर रही है!
इसकी जान गई तो समझ ले कि मेरी जान गई! और फिर तेरी जान किस काम की?
जान मैं बचाऊंगा!

मैं बचा सकता हूं तुम्हारे बेटे को!
कौन हो तुम? अलंद्यावासी तो लगते नहीं हो! फिर तुम यहां कैसे आए?
मौत कहीं पर भी आ सकती है!
ऐसा सभी कहते हैं!
पर मैं कहता हूं कि जिन्दगी भी कहीं पर भी आ सकती है!
मैं देता हूं जिन्दगी!
ये एक जासूस है! भेदिया है! मानवों का या नागराज का भेजा हुआ टोही है!
इसे युवराज को छूने भी मत दीजिए!
ये युवराज को मारने आया है!
ये तो वैसे ही मर रहा है!
देखो इसे! और बचाओ!
सफल हुए तो उम्मीद से ज्यादा इनाम मिलेगा!
असफल हुए तो उम्मीद से ज्यादा दर्दनाक मौत!
आऽऽऽऽर्रघ!
मुझे दोनों में से किसी चीज की जरूरत नहीं है!

वो यहां पर है!
विषांक के पास!
पर कैसे? कैसे घुस सकता है वह अलंघ्या में!
और क्या करना चाहता है वह विषांक के साथ!
रुक जाओ सम्राट! इसे विषांक को हाथ लगाने मत देना!
क्यों?
क्योंकि ये वेदाचार्य है!
रोको इसे!
अब मुझे रोकना असंभव है!
अच्छा? हिलकर दिखाओ!

इसका एक प्रतिरूप इसके शरीर से अलग हो गया है! कैसे?
ये इसका तिलिस्म रूप है! यूं समझ ले कि ये इसकी आत्मा है!
ये अपनी जान को दांव पर लगा रहा है!
दांव पर तो विषांक की जान भी थी-
क्योंकि वेदाचार्य का तिलिस्म-रूप उसके तड़पते शरीर में समा चुका था-
और विषांक का शरीर शांत हो गया था-
इनके शरीर में जीवन का कोई चिन्ह नहीं है!
युवराज विषांक मर चुके हैं सम्राट!
इस बुड्ढे की जान भी निकल चुकी है!
सत्यानाश!

वेदाचार्य ने ऐसा क्यों किया? विषांक से उसकी क्या दुश्मनी थी?
वेदाचार्य तो दुश्मनों तक की जान नहीं लेता था! शायद ये विषांक को मारकर नागशक्ति को आपसे दूर करना चाहता होगा!
ऐसा लगता तो नहीं है!
अब करना क्या है?
अब सिर्फ मैं और तुम जानते हैं कि विषांक मर चुका है! ये खबर नागसेना तक नहीं पहुंचनी चाहिए!
न... नहीं पहुंचेगी। कैसे पहुंचेगी? ही ही ही!
नहीं पहुंचेगी सम्राट!
यही अच्छा होगा!
" बस, नागराज मारा जाए! उसके बाद हमको इस राज को राज रखने की जरूरत पड़ेगी भी नहीं- "
विषांक!
ये... ये नहीं हो सकता!
हर युद्ध कुर्बानी मांगता है, विसर्पी!
पर ये कुर्बानी विषांक की ही क्यों बाबा!
पहले ध्रुव, और अब विषांक!
मैं विषांक की नहीं...
... वेदाचार्य की बात कर रहा हूं! बहुत बड़ी कुर्बानी दी है उन्होंने! और ये कुर्बानी इस परम युद्ध का रूप पलट सकती है!
अब नागशक्ति को कौन संभालेगा!
यानी आप कुछ ऐसा जानते हैं जो मैं नहीं जानती!
इंतजार करो विसर्पी!
अभी कुछ नहीं करना है!
धीरज रखो विसर्पी!
विदा!

परम युद्ध सिर्फ अलंध्या में ही नहीं, बल्कि कई जगहों पर लड़ा जा रहा था-
इसीलिए तो यह परमयुद्ध था-
बस, कहीं दुश्मन दुश्मनों से लड़ रहा था-
तो कहीं पर अपने अपनों से-
हमारा रास्ता छोड़ दो स्ट्रेंजर!
तुम अपनी जिद छोड़ दो बच्चों!
वन, टू...
हम फोर पर मारते हैं!
आऽऽऽह! शैतान बच्चों...
...थ्रीऽऽऽ
भाग जलज!
बच गया!
गलत!
हमको ये चिप का डिब्बा 'ब्वायलर रूम' तक पहुंचाना है! वहां की लेजर ओवन में ये सारी की सारी जलकर खाक हो जाएगी!
इस तरफ से आ!
लेकिन स्ट्रेंजर पीछा नहीं छोड़ रहा है!
छोड़ेगा!
वर्ना अपना मुंह तोड़ेगा!
शाबाश जलज!
तृतीय अध्याय
नहले पे दहला

फूऽऽऽ
थैंक्यू यार !
बचा लिया तूने ! भाग-भागकर...
... पैर घिस गए हैं ! हाइट एक इंच तो जरूर कम हो गई होगी !
डोंट मेंशन इट ब्रदर ! ये तो अपने बांए हाथ का काम था !
कभी बांए हाथ के बजाए बांए दिमाग से भी काम ले लिया कर !
अरे, हुआ क्या ?
पीछे देख !
मरवा दिया तूने !
ओए ! ये तो डबल स्पीड से पीछे आ रहा है !
अब तू ले ले दिमाग से काम !
लूंगा !
दाएं मुड़ !
पापा कहते हैं कि दुश्मन जिसे ताकत समझ रहा हो उसे ही उसकी कमजोरी बना दो ! बस तुम जीत गए !
पर ये तू करेगा कैसे ? और इसकी ताकत है क्या ?
इसकी स्पीड !
अब चेयर्स तो एकाएक रुक जाएंगी ! पर न्यूटन सर का कहना है...
... कि स्ट्रेंजर नहीं रुकेगा !
कमाल है !
मेरे बाएं दिमाग का !
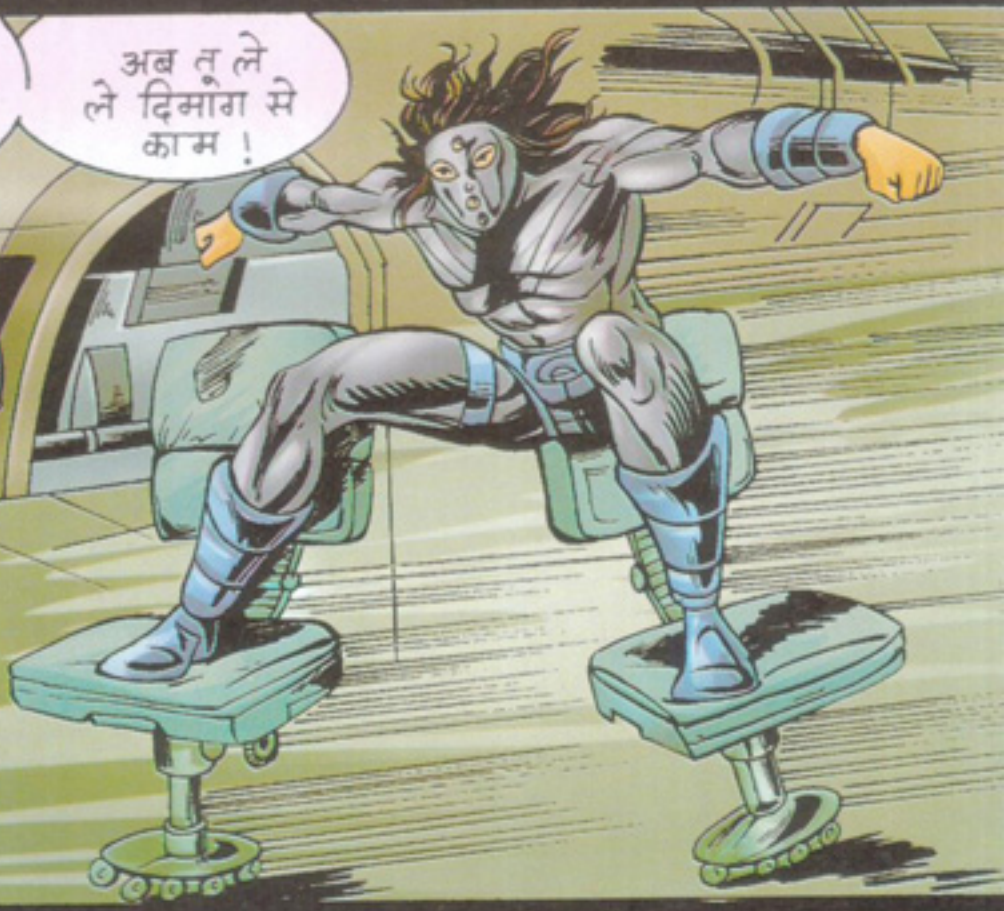
अरे!
स्ट्रेंजर कहां गया?
मुझे तो लगता है कि वह चेयर्स पर था ही नहीं!
यानी उसे पता चल गया था कि हम मोड़ पर उसका इंतजार कर रहे हैं!
पर कैसे?
क्योंकि मुझे सामने वाली मेटल वॉल पर तुम्हारी इमेज नजर आ गई थी!
ईईईई!
तुम लोगों को यहीं आना है! इस वक्त सबसे सुरक्षित स्थान डक्ट ही है!
ये तो कमाल का कलाबाज है! कूदकर सीधा डक्ट में जा घुसा!
सुरक्षित? वह तो चूहे का बिल है! एक बार घुस गए तो यहां से हमारी जान ही बाहर निकल पाएगी!
भाग ऋषि!
ढूंढो... इधर देखो
होऽऽऽ
ऋषि! जल्दी!
डक्ट में घुस!
पर अभी तू इसे चूहे का बिल कह रहा था!
अभी हम चूहे ही हैं! रोबो आर्मी इधर ही आ रही है!
पर... स्ट्रेंजर तो उनको हमारा पता बता ही देगा!

जब तक ये हमारी चुगली करेगा, तब तक तो हम न जाने कहां से कहां से कहां निकल जाएंगे!
स्ट्रेंजर को मैंने कहीं देखा है भाई!
ये डक्ट पूरी रोबो सिटी में फैली है और आपस में जुड़ी हैं! इससे कहां-कहां निकला जा सकता है ये तो खुद बाहर निकलने वाला भी नहीं बता सकता!
इसने खुद अपनी शक्ल सालों बाद देखी होगी!
तुझे भ्रम हो रहा है ब्रदर!
तू रुका क्यों है? चलता क्यों नहीं!
चल!
नहीं! मुझे भ्रम नहीं हो रहा है!
ले! तेरे चक्कर में रोबो आर्मी यहां तक आ गई है! अब स्ट्रेंजर ऊपर की तरफ इशारा करेगा और हम मारे जाएंगे!
पर... इसे मैंने कहां देखा है?
एक मिनट! स्ट्रेंजर तो ऊपर की तरफ देख भी नहीं रहा है! इशारा करना तो दूर की बात है!
कहीं ये सचमुच हमारा हमदर्द तो नहीं है!
तेरा होगा! मुझे तो कहीं दर्द नहीं है!
ऐसा कहते हैं यार!
हेलो कामरेड!
वे दोनों लड़के कहां हैं?
मैं भी उनको ही ढूंढ रहा हूं! आखिर मैं भी तो तुममें से ही एक हूं!
तू हममें से एक होता...
... तो ऐसा दिखता!
तू हममें से एक नहीं है! गद्दार है!
ओ गॉड! इनकी शक्ल तो ब्लैक पॉवर्स जैसी हो गई है! पर कैसे?
बता! कहां हैं वे शैतान बच्चे!
आऽऽऽऽ

स्ट्रेंजर ने हमारा पता नहीं बताया! बल्कि उल्टे डक्ट का दरवाजा बंद कर दिया!
ये सच में हमारी तरफ है!
पर... रोबो आर्मी को क्या हो गया है? इनमें ब्लैक पॉवर्स कैसे आ गईं?
स्ट्रेंजर इनसे जीत नहीं पाएगा। अगर ये सच में हमारी तरफ है तो हमको इसकी मदद करनी चाहिए!
अरे, तू कुछ बोलता क्यों नहीं? खाली में ही बक-बक करता जा रहा हूं!
तू क्या सोच रहा है?
यही कि मैंने स्ट्रेंजर को कहां देखा है?
लो! यहां जान की पड़ी है और ये भूली बिसरी यादें ताजा कर रहे हैं!
याद आ गया!
श्शsss चिल्ला मत। रोबो आर्मी सुन लेगी! याद आ गया तो इसमें इतना खुश होने की क्या जरूरत है!
सुन!
फुसफुसा क्यों रहा है?
तूने ही धीरे बोलने को कहा है!
फुस फुस फुस...
सच में?
तू मजाक कर रहा है? है न?
बिल्कुल नहीं!
चल मान लिया!
लेकिन इससे हमारी प्रॉब्लम कैसे सॉल्व होगी?
सुन! इसका कनेक्शन तेरे दिमाग में फिट चिप्स के निष्क्रिय होने से है!
नहीं!
जानता है वह चिप काम क्यों नहीं कर रही है?
तो सुन!
ऋषि समझाता चला गया—
ऐसा... ऐसा भी कहीं होता है!
तेरे साथ हुआ है!
यानी अगर हमारा प्लान कामयाब हो गया तो हम छः एक तरफ होंगे और दूसरी तरफ अकेले नाना जी!
और उनकी आर्मी!
बेचारे नानाजी! पर हमारा प्लान तभी कामयाब होगा...

" जब स्ट्रेंजर हारेगा, और इसको पकड़कर रोबो के सामने वहां पर ले जाया जाएगा, जहां पर हमारी मम्मियों के ऑपरेशन की तैयारी की गई है- "
" मुझे तो अपना प्लान फुस्स होता नजर आ रहा है! क्योंकि स्ट्रेंजर की फुर्ती, कलाबाजी और अक्लमंदी के आगे रोबो आर्मी वाले एक-एक करके ढेर होते जा रहे हैं- "
धाड़
इनसे एक-एक करके निपटना खतरनाक होता जा रहा है...
इनकी अगर एक 'रे' मुझसे छू भी गई तो मेरी इनिंग यहीं पर खत्म हो जाएगी!
कुछ ऐसा तरीका अपनाना पड़ेगा जिससे मैं इनको एक साथ चित कर सकूं!
तड़ाक
आऽऽऽह!

जमीन अभी तक गीली है!
और तुम्हारे कपड़े भी! अब झटका खाने की बारी तुम्हारी है!
स्ट्रेंजर भी कमाल है!
खुश मत हो! ये जीत गया मतलब हम हार गए!
हार तो तू गया है ऋषि!
क्योंकि अभी तक तुझे सच्चाई का पता नहीं है!
जलज! ये... ये क्या हो रहा है तुझे?
तेरी शक्ल ब्लैक पॉवर जैसी क्यों हो रही है?
मेरे भेजे में फिट चिप एक्टीवेट हो रही है!
ईऽऽऽऽऽ
ऋषि को शायद समझने का मौका ही नहीं मिला-
जलज! ये तुमने क्या किया?
हाऽऽऽ
वही जो ग्रैंड-मास्टर चाहते हैं! और अब तेरी बारी है, स्ट्रेंजर!
होश में आओ जलज!
मैं तुमसे लड़ना नहीं चाहता! ओफ्! ये क्या हो रहा है!

डर मत स्ट्रेंजर! तुझे मैं ज्यादा तकलीफ देकर नहीं मारूंगा!
इसने चाहे जो कुछ भी किया हो! पर उसके बावजूद भी मैं इसे नुकसान नहीं पहुंचा सकता!
ओह! रोबो फोर्स के और सैनिक आ रहे हैं!
अब मैं क्या करूं?
वे रहे! खत्म कर दो दोनों को!
क्या कहा तूने?
तू मुझे खत्म करेगा? अरे! तुझे तो मैं धीमी आंच के ऊपर रखकर भूनूंगा!
ऐसे तो सिर्फ जलज ही बोलता है!
रुको! इसकी शक्ल देखो! ये भी एक ब्लैक पॉवर है! यानी ये हमारी तरफ है!
ग्रैंडमास्टर से गद्दारी तो एक नाटक था! इन गद्दारों को खत्म करने के लिए! पकड़ लो इसे!
अब समझे मूर्खों!
पर ध्यान रहे! इसे मारना मत!
ग्रैंडमास्टर इससे बहुत कुछ पूछना चाहते हैं!
जलज की उपस्थिति ने स्ट्रेंजर के हाथ बांध दिए थे-
अब हारना ही एकमात्र रास्ता था-

और मौत ही एकमात्र छुटकारा थी-
तुमने... तुमने ये अपनी आंखों से देखा ?
हां, ग्रैंडमास्टर ! ऋषि की लाश हवा में झूल रही थी !
ओए, कमाल कर दिया तूने ! मुझ तक को गच्चा दे दिया ! पर मैं जानता था कि चाहे सारी दुनिया मेरे खिलाफ हो जाए, पर जलज मुझसे कभी गद्दारी नहीं कर सकता !
तू तो मेरी जान है, जान !
अ... ग्रैंडमास्टर ! थोड़ा धीरे से गले लगाइए ! वर्ना ये जान निकल जाएगी !
इस गद्दार को रोबॉट कुत्तों के आगे डाल दिया जाए !
और कुत्तों को 'स्लो' मोड पर सेट कर दो ताकि यह धीरे- धीरे मरे और हर चीख के साथ मुझे याद करे !
एक मिनट ग्रैंडमास्टर ! मारने से पहले इसका चेहरा तो देख लीजिए !
हमको भी तो पता चले कि आखिर इसने ऐसा क्यों किया ?
इसका मास्क उतारो !
तुझे कुछ समझ में आ रहा है ?
ऊ हूंऽऽऽ !
Provide By : www.ESitt.in/forum
ESitt Forum
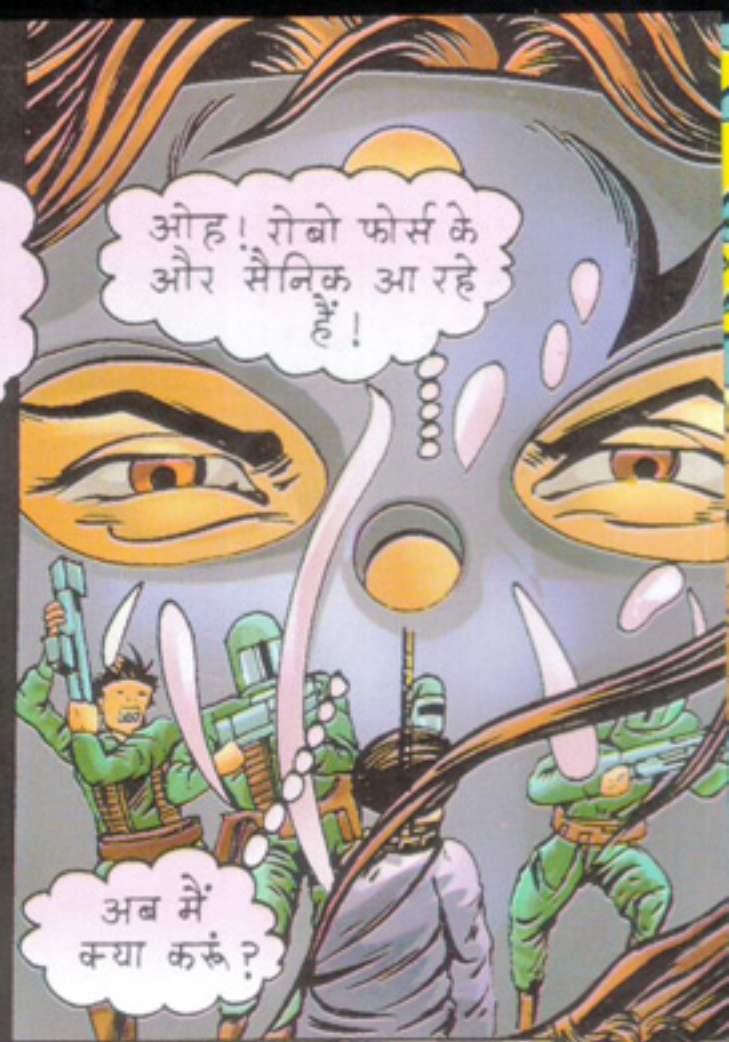
ये शक्ल तो मैंने देखी हुई है!
शक्ल नहीं ग्रैंडमास्टर! हमको इसका मकसद जानना है! क्या चाहता है ये? पर ये बहुत ढीठ है। आसानी से जबान नहीं खोलेगा!
खुलेगी!
या जबान या, इसकी खोपड़ी!
खलीली!
हुक्म ग्रैंडमास्टर!
कड़ड़ड़ाक
"इसकी जबान खुलवाओ! वर्ना इसकी खोपड़ी खोल देना-"
आऽऽऽह!

ये... ये क्या? ममी, इसको तुमने क्यों मारा?
क्योंकि ये नक्षत्र को मार रहा था! बेहोश नक्षत्र को!
अगर ये होश में होता तो मैं उंगली तक नहीं हिलाती!
उसकी जरूरत ही नहीं पड़ती!
ये नक्षत्र नहीं स्ट्रेंजर है!
होश में आओ ममी!
तुम होश में आओ रोबो!
मेरा नाम श्वेता है ममी नहीं!
इसकी तो याददाश्त वापस आ गई! शायद मेरी चिप काम नहीं कर रही है! कहीं ये कंट्रोल सेंटर में तोड़-फोड़ का नतीजा तो नहीं है!
नहीं!
ये एक ऐसी शक्ति का नतीजा है, जिससे आप परिचित नहीं हैं...
...नाना जी!
इस शक्ति को प्यार कहते हैं!
वही शक्ति! जिसने मां के प्यार के रूप में जलज के दिमाग से अपनी चिप की पॉवर को खत्म कर दिया!
और जीवन साथी का प्यार बनकर बुआजी के दिमाग से चिप की पॉवर को उखाड़ फेंका!
तू... तू जिन्दा है! पर मेरे आदमी तो कह रहे थे कि तू फांसी पर लटक रहा था!
गधे हैं! कंधे से लटकने को फांसी थोड़े ही कहते हैं! वह गले वाला फंदा तो शो के लिए था!
पर तूने ऐसा क्यों किया जलज?
तू तो ब्लैक पॉवर बन गया है न?
बन गया था!
जानते हैं कैसे नाना ग्रैंडमास्टर?
ऐसे!
तू कमाल की आंखें रोल करता है जलज!
एक सेकंड के लिए तो मैं भी डर गया था कि तू सचमुच का ब्लैक पॉवर बन गया है!

कोई मुझे बताएगा कि नक्षत्र और श्वेता का क्या कनेक्शन है?
वही जो आपका और पापा का है!
वह फोटो जो बुआ के पर्स में लगी थी!
और तभी मुझे यह भी समझ में आ गया कि जलज हमसे मिलने के बाद ही ठीक हो गया था!
आपने प्यार की ताकत को चुनौती दी थी न पापा! देखा आपने?
लड़ते-लड़ते जब मैंने इनकी शक्ल देखी तो वह मुझे पहले से देखी हुई लगी!
फिर मुझे याद आया कि वह शक्ल मैंने एक फोटो में देखी है!
बस दो और दो चार जुड़ गए! हमने प्लान बनाकर नक्षत्र की शक्ल बुआ को दिखा दी! और वह ठीक हो गई!
प्यार की ताकत से दो बच्चों ने आपको चित कर दिया!
तो उस दिन तुम नताशा को इसी से मिलाने ले जा रही थी!
पर ये सब हो क्या रहा है?
जलज कौन है?
अब मैं समझी! तुमको पसंद ही ऐसा लड़का आना था जो तुम्हारे भाई के साथ खड़ा होने की काबलियत रखता हो!
और ऐसा तो दुनिया में एक ही शख्स है! नक्षत्र!
लंबी कहानी है! बता दूंगी!
ऐसे लड़ते रहने से कोई फायदा नहीं है! हमको रोबो की 'चिप-पॉवर' को खत्म करना होगा! इसका कंट्रोल सेंटर पूरी तरह से नष्ट करके!
कोई और आइडिया?
इसका मौका तुममें से किसी को नहीं मिलेगा!
रोबो अपने दुश्मनों को मौका नहीं... मौत देता है!
शूट देम!
और कोई दूसरा रास्ता नहीं है!
हम इस ब्लैक पॉवर वाले रोबो से इस तरह लड़कर कभी जीत नहीं पाएंगे!

रोबो को अब हरा पाना नामुमकिन ही नहीं है!
अकल्पनीय है। अनइमेजिनेबल! इसकी कल्पना भी मत करना!
अव्वल तो तुम लोग इस कमरे से जिन्दा बाहर नहीं जा पाओगे!
और अगर किसी चमत्कार से ऐसा हो भी गया...
... तो तुम लोग कंट्रोल सेंटर से सौ मीटर की दूरी तक भी नहीं पहुंच पाओगे! उसकी सिक्योरिटी को मैंने दस गुना बढ़ा दिया है!
अब मुझे तो कहीं जाना है! इसीलिए मैं अब तुम सबके क्रियाकर्म में ही तुमसे मिल पाऊंगा!
मेरे लिए ये खतरा तो छोटा-मोटा है! बड़ा खतरा तो देव जाति की तरफ से है!
मैंने उनके खात्मे के लिए अपनी शक्तिशाली 'व्हर्लपूल फ्लीट' को भेजा था!
अब तक तो उन्होंने नगरी के गुंबद को अंडे की तरह फोड़ डाला होगा!
और अगर ऐसा नहीं हुआ होगा तो मुझे अगला वार सोचना होगा! इसलिए इस वक्त उधर ध्यान देना ज्यादा जरूरी है!
रोबो इन छः विनाशकों को पिंजरे में फंसे चूहों की तरह समझ रहा था-
और शायद वह सही भी था-
ये तो आते ही जा रहे हैं!
ये सैनिक इंसान हैं या काक्रोच?
हम समय खराब कर रहे हैं! हमको यहां से निकलना होगा!
पर कैसे? ये हमारा पीछा सपनों में भी नहीं छोड़ेंगे!
हम छुड़ा दें?
छुड़ा देंगा?
जलज! तेरे चश्मे में इंफ्रारेड फिट है न?
है न! उसकी मदद से मैं अंधेरे में भी देख सकता हूं!
अकड़ मत! ये काम उल्लू भी कर लेता है!
बगैर चश्मे के!
अब सुन!

और फिर- लड़ाई एकाएक रुक गई-
ये अंधेरा कैसे हो गया ?
हम सबके चश्मों में अंधेरे में भी देख सकने वाली इंफ्रा- रेड फिट है !
जो हल्की से हल्की रोशनी को भी कई गुना ज्यादा चमकीली बनाकर दिखाती है !
शैतान बच्चों ने शायद लाइटें गुल कर दी हैं !
पर इससे हमको कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है !
हम जानते थे कि तुम यही करोगे !
और तुम्हारे ऐसा करते ही हम लाइटें जला देंगे !
और फिर एक-एक बल्ब की लाइट तुमको ऐसे लगेगी जैसे कई सूरज एक साथ निकल आए हों।
घबराओ मत सोल्जर्स ! ऐसी चमक से कोई परमानेंटिली अंधा नहीं होता !
ओ ! ये चमक !
मेरी आंखें ! मुझे कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा है !
मैं अंधा हो गया !
इसका असर खत्म होते ही थोड़ी देर में हमको सब साफ- साफ दिखाई पड़ने लगेगा !
असर खत्म होते- होते सबकुछ साफ हो गया था-
अरे ! वे सब कहां चले गए ?
यानी वे डक्ट के रास्ते से भागे हैं ! डक्ट से बाहर निकलने के सारे रास्ते बंद करवा दो !
अब हम डक्ट में इनके पीछे जाएंगे ! और ये बिल में फंसे चूहों की तरह मारे जाएंगे !
वो देखो कमांडर ! डक्ट के रास्ते पर एक फटे कपड़े का टुकड़ा !
चलो !

रोबो सोल्जर्स की फौज, डक्ट के हर रास्ते को घेरने लगी-
और वह कमरा खाली हो गया-
खाली हो गया?
थैंक्स जलज! छुपने की बहुत अच्छी-अच्छी जगहें जानता है!
पर डक्ट में कपड़ा अटकाने का आइडिया तो मेरा था न!
हां, हां! पर अब हम कंट्रोल सेंटर तक कैसे जाएंगे?
हर जगह क्लोज सर्किट कैमरे लगे हुए हैं!
उसका हल है मेरे पास!
ओए! ठीक से चल! मुझे गिरा मत देना!
मुझे याद आ रहा है कि तूने मुझे उल्लू कहा था!
श श श श! यहां पर वॉयस सेंसर भी लगे हैं! वे हमारी आवाज को पहचान सकते हैं!
इन छः योद्धाओं को यह कतई आभास नहीं था कि इनकी जीत या हार-

अलंध्या में हो रहे परमयुद्ध के निर्णय को प्रभावित कर सकती थी-
तू मेरी शक्तियों को जानता नहीं है, यांत्री! मेरे पास ऐसे-ऐसे दिव्यास्त्रों का ज्ञान है जो तेरे जैसे एक यति की तो क्या, पूरे यतिलोक को ध्वंस करने की क्षमता रखते हैं!
जानता हूं। क्योंकि तेरे दिमाग में ब्रह्मांड के किसी भी दिमाग से लाख गुना ज्यादा ज्ञान भरा जा सकता है!
और तेरी यही महाशक्ति तेरी हार का कारण बनेगी!
ओह! इसके बाहर उगे स्नायु तंत्र से एक अजीब सी ऊर्जा निकल रही है!
जो मेरे दिमाग की भंडारण क्षमता को प्रभावित कर सकती है!
मेरे दिमाग में कई सारे विचार एक साथ आ रहे हैं!
मेरे स्मृति तंत्र पर जोर पड़ रहा है! शॉर्ट सर्किट हो रहा है!
तू मेरे दिमाग को नष्ट करने की कोशिश कर रहा है यांत्री। पर ब्रह्मांड की कोई भी शक्ति ऐसा नहीं कर सकती!
तू सचमुच ठीक ढंग से सोच नहीं पा रहा है!
मैं तेरे दिमाग को नष्ट नहीं कर रहा हूं! तेरे दिव्यास्त्र ज्ञान के डाटा को कॉपी कर रहा हूं!
अब दिव्यास्त्रों की शक्ति मेरे पास भी है!
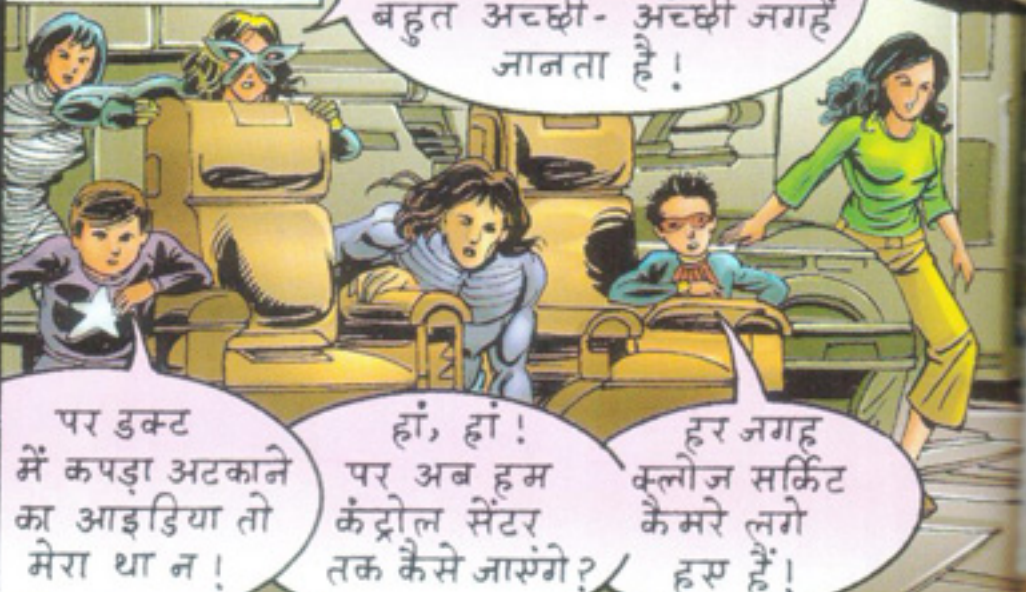
पलड़ा थोड़ा सा यतियों की तरफ झुक गया था-
और यह और झुकता ही जा रहा था-
इसने तो हम सबको बांध लिया है... हमारी हड्डियां कड़क रही हैं!
आऽऽऽ ह!
अच्छा है!
अब खींचो एक साथ!
बस, बहुत हो गया!
इस युद्ध की तीव्रता बढ़ रही थी-
और इस बढ़ती तीव्रता का अंत तभी होना था-

जब दो प्रतिद्वन्दियों में से एक के प्राण शरीर छोड़ दें-
मेरे पास शिला तो क्या, पहाड़ तक को चूर कर सकने वाले अस्त्र हैं, शिलाचूर!
परन्तु इस युद्ध का स्तर वह नहीं है जिसके लिए मुझे उन दिव्यास्त्रों का सहारा लेना पड़े!
क्या हुआ नागराज? मेरे शिला जैसे शरीर पर दिव्यास्त्रों को बेअसर होता देखकर क्या भगवान को याद कर रहा है?
तेरा अस्त्र तेरा शिला जैसा विशाल शरीर है!
तो मुझे भी महाकाय अस्त्र की मदद से...
...विशाल शरीर धारण करना पड़ेगा!
नागराज स्वयं एक अस्त्र बन गया था-
और अब मुकाबला भीषण स्तर पर पहुंच रहा था-
परम युद्ध नागराज के मित्रों या यतियों में से एक की बलि अवश्य ले लेता -
43
Provide By : www.ESiti.in/forum

अगर वह जलजला हवा में से प्रगट होकर उनके बीच में न कूद पड़ता -
किसकी चीख थी वह?
किसकी पुकार मुझे यहां पर खींच ले आई है?
और... ये जगह कौन सी है?
चतुर्थ अध्याय
जिंगालू

यतिराज!
कौन? कौन यतिराज?
आप... आप सच में जीवित हैं!
यतिराज जिंगालू जीवित हैं! जय हो यतिराज की!
रानी! यतिरानी हैं आप! मुझे सब याद आ रहा है! पर... पर ये जगह कौन सी है? मैं कहां पर आ गया हूं?
ये अलंघ्या है यतिराज! एक अलग आयाम! और ये ब्लैक पॉवर्स का गढ़ है!
लेकिन हमारे यति यहां पर क्या कर रहे हैं?
इनका ब्लैक पॉवर्स से क्या संबंध है?
फिलहाल हम ब्लैक पॉवर्स का साथ देने के लिए विवश हैं यतिराज!
विवश? क्या तुम जानती नहीं रानी यति कि यति किसी के सामने झुकते नहीं हैं! झुकते हैं तो सिर्फ प्रेम और मित्रता के आगे!
झुकना पड़ा यतिराज! आपके पुत्र के कारण झुकना पड़ा!
क्या हुआ हमारे पुत्र को?
रानी यति, जिंगालू को सब बताती चली गई -
और फिर हमको नागों से आपके प्रति किए गए धोखे का बदला भी तो लेना था!
और शक्तियां कम होने के कारण हमको कोई न कोई सहारा भी चाहिए था!
पुत्र का कारण तो ठीक है, रानी यति! पर धोखा हमको नागों ने नहीं दिया था!
वह पूरा घटनाक्रम एक नाटक था! एक चाल थी!
किसकी यतिराज?
इसकी!

इसने धोखा दिया था मुझे! ये हिमाधिपति का रूप धरकर आया था! और वे शीतनाग भी इसके शरीर से ही पैदा हुए थे! और ये सारा नाटक इसने 'आयामक' हासिल करने के लिए किया था!
बता! क्यों चाहिए था तुझे आयामक? और आयामक इस वक्त कहां पर है?
एक पल ठहरो यतिराज!
आयामक ले जाने का षड्यंत्र इसने नहीं इसके हमरूप क्रूरपाशा ने रचा होगा! इसके अंदर इतनी बड़ी स्कीम बनाने की क्षमता है ही नहीं!
पर सवाल ये है कि वह आयामक उसके लिए इतना महत्त्वपूर्ण क्यों है?
मैं तुमको जानता हूं नागराज, और इस कारण तुम्हारे विचारों का आदर भी करता हूं!
अगर तुम कह रहे हो तो शायद यही सच होगा!
पर... ये भीरूपाशा को क्या हो रहा है? ये एकाएक इतना कमजोर क्यों लग रहा है! ऐसा लगता है जैसे कि इसकी सारी शक्ति निचुड़ गई हो!
आपके यहां तक आने में जरूर कोई बड़ा रहस्य छुपा है, यतिराज!
क्योंकि नियमों के अनुसार तो आप अलंध्या में प्रवेश कर ही नहीं सकते थे!
और फिर यहां तक आने का रास्ता ढूंढना तो और भी मुश्किल है!
आप यहां तक आए कैसे?
एक ऐसी पुकार मुझे यहां तक खींचकर लाई है जो मेरे दिल के बहुत करीब है!
वह अवश्य ही आपके पुत्र की पुकार होगी!
नहीं, यतिरानी!
वह चीख आप सबने सुनी होगी...

... वह ध्रुव की पुकार थी! ध्रुव की आखिरी चीख!
ध्रुव! मेरा मित्र!
यानी... ध्रुव मर गया!
असंभव! तू झूठा है! कौन है तू?
तू जरूर क्रूरपाशा का भेजा हुआ कोई छलावा है जो हमारे इरादों को कमजोर करने के लिए आया है!
ये देवाशीष है नागराज! देवों का एक यंत्र पुरूष!
और ये झूठ बोल ही नहीं सकता!
यानी ध्रुव का सच में अंत हो गया है!
किसने मारा उसे?
विषांक ने!
परम विनाशक अस्त्र से बिंधा हुआ उसका शरीर अभी भी अलंघ्या के दूसरे छोर पर पड़ा हुआ है!
देखा रानी? ब्लैक पॉवर्स कैसे एक-एक करके छल से बल को जीतती जा रही है! पहले मैं और अब ध्रुव! क्या अभी भी आप इनके साथ हैं?
नहीं, यतिराज! ऐसा युद्ध जीतकर पुत्र को पाना हर्ष का नहीं, परम दुःख का कारण होगा!
हम यति हैं! हम पुत्र की आहुति देंगी, सत्य की नहीं!
ये शक्ति अब ब्लैक पॉवर्स के खिलाफ लड़ेगी, यतिराज!
और जीतेगी!
मुझे ध्रुव के पास जाना है! सत्य को अपनी आंखों से देखना है!
मैं तुमको लेकर चलूंगा नागराज! मुझे भी इस सूचना की सत्यता पर तब तक यकीन नहीं आएगा जब तक मैं खुद ध्रुव की नाड़ी की जांच न कर लूं!
इस मोर्चे को आप लोग संभालो!

पहले वाला जिंगालू तो एक नाग था। लेकिन ये वाला जिंगालू असली लगता है! पर इसके आते ही यतियों के ऊपर से मेरी 'ब्लैक मिस्ट' का प्रभाव खत्म हो गया है।
और अब ये मेरे खिलाफ बगावत करने का ऐलान कर रहे हैं!
ऐसा कैसे हो सकता है? मुझे तो ये भी समझ में नहीं आ रहा है कि ये जिंगालू अलंध्या में कैसे घुसा?
इसके पास ऐसी शक्ति कहां से आई?
...लेकिन तुम्हारी 'ब्लैक मिस्ट' का काला असर उस प्रेम के सामने नहीं टिक पाया जो यतियों को अपने नायक जिंगालू के प्रति है!
अब वे अपने यतिराज की बात मानेंगे! तुम्हारी नहीं!
विषांक!
तू... तू जिन्दा है मेरे पुत्र!
कैसे?
गलत, क्रूरपाशा! तुम्हारा पुत्र विषांक मर चुका है!
अब तुम्हारे सामने नागद्वीप के राजा मणिराज का पुत्र खड़ा है!
और अब मेरी भक्ति नागराज और श्वेत शक्तियों के साथ है!
उसी नागराज के साथ जिसके साथी वेदाचार्य ने तुमको मृत्यु के द्वार तक पहुंचा दिया था।
पंचम अध्याय
प्रतिज्ञा
ज़िंगालू अलंध्या में कैसे आ पाए, यह तो मुझे नहीं पता...
सही कहा! उन्होंने अपना बलिदान देकर मेरे शरीर में मौजूद तुम्हारी कोशिकाओं को अपने तिलिस्मी रूप से मार दिया!
अब विषांक आजाद है! मैं चाहूं तो अभी नाग-सेना को आदेश देकर...
...अलंध्या को मटिया मेट कर दूं! पर मैं तुमको युद्ध में हराऊंगा क्रूरपाशा! और यह रियायत सिर्फ इसलिए क्योंकि तुम कभी मेरे पिता थे!
और उसके बाद विसर्पी दीदी क्रूरपाशा के राज्य से नहीं बल्कि अपने घर से विदा होंगी!
तू क्या समझता है? ध्रुव को मौत के घाट उतारने के बाद भी क्या नागराज तुझे क्षमा कर देगा? अपना लेगा?
इस कार्य के लिए अगर मुझे मृत्यु दंड भी मिला तो उसको मैं क्षमा ही समझूंगा!

अब हमारी रण में मुलाकात होगी क्रूरपाशा!
रुक जा विषांक! मैं नागशक्ति को इतनी आसानी से अपने हाथों से नहीं जाने दूंगा! अब या तो तू मेरे साथ आएगा, या मौत के साथ जाएगा!
नागराज के पास जाने से मुझे क्रूरपाशा तो क्या, मौत तक नहीं रोक सकती!
अंगद ने एक बार रावण को अपना पैर हिलाने की चुनौती दी थी। मैं तुझे अपने कदमों को रोकने की चुनौती देता हूं!
अगर मैं लड़खड़ा भी गया तो शपथ है विष देव शंकर की, मैं वापस तुम्हारे पक्ष में आ जाऊंगा!
इसके कदमों को यहीं पर जमा दो, योद्धाओं!
एक के बाद एक-
महाशक्तिशाली ब्लैक वारिअर्स-
रस्सी की तरह विषांक के पैरों से लिपटते चले गए-
और वैसे ही खिंचते चले गए जैसे हाथी के पैर में बंधी चेन-

ईश्वर ने अगर चाहा तो अब हम रणक्षेत्र में मिलेंगे, क्रूरपाशा!
वर्ना नर्क में तो हमारी मुलाकात होगी ही होगी!
मैं खुद तुझे रोकूंगा विषांक!
और तब वायदे के अनुसार तुझे मेरे पक्ष में वापस आना ही होगा!
पिता होकर पुत्र के पैर पड़ोगे, क्रूरपाशा? ब्रह्मांड के भावी सम्राट को इतना नीचे नहीं गिरना चाहिए!
आर्र्र्र्रघ!
वेदाचार्य! तू ये कैसा अनर्थ कर गया!
शांत हो जाइए सम्राट! ब्लैक पॉवर्स जीतने के लिए नाग-शक्ति पर निर्भर नहीं है!
हम चाहे कमज़ोर न हुए हों गुरुदेव, पर दुश्मन ताकतवर ज़रूर हो जाएगा!
दुश्मन तो पहले ही कमज़ोर हो गया है!
" ध्रुव के अंत के साथ ही उनकी आधी शक्ति का अंत तो पहले ही हो गया है- "
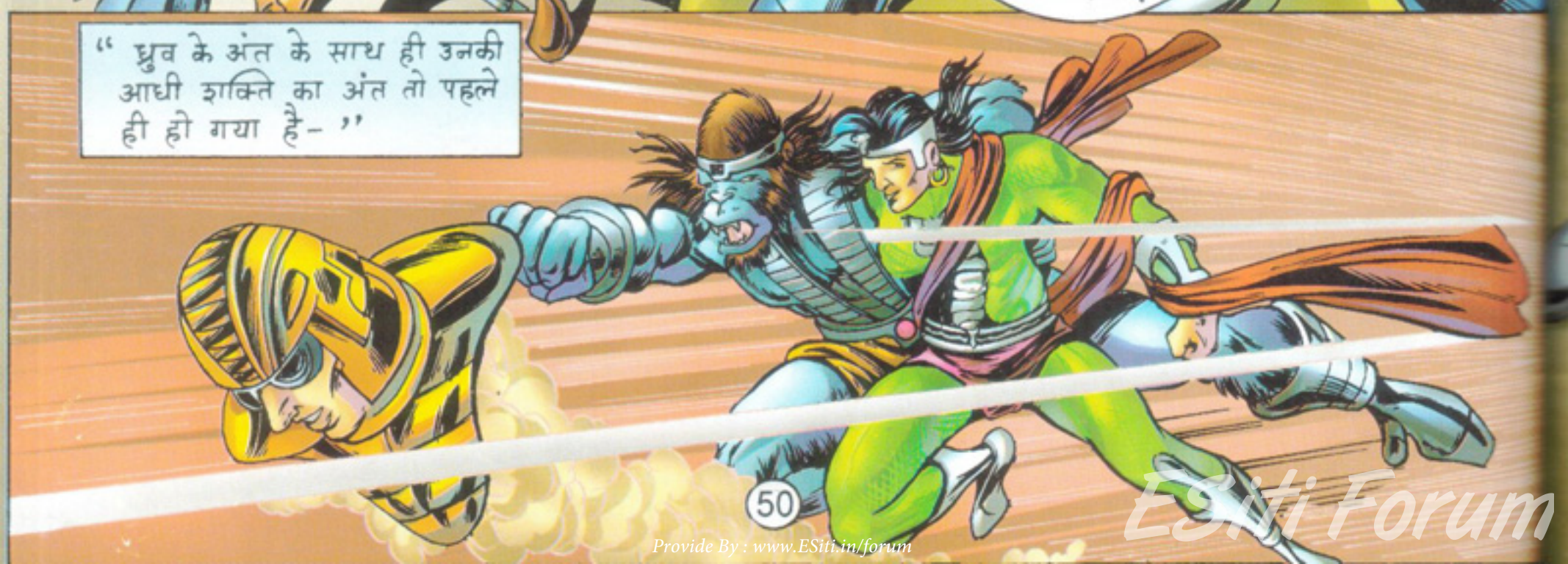
ओफ़ ! अनहोनी, होनी बन गई ! असत्य, सत्य हो गया !
ध्रुव, वीरगति को प्राप्त हुआ !
मैंने तो सोचा ही नहीं था कि मुझे इस युद्ध की इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी ! तुमको खोकर मैं विसर्पी को पा भी सका तो यह पाना भी किस काम का ?
उठो, मित्र उठो ! देखो तुम्हारा पुराना मित्र जिंगालू आया है !
तुम्हारी पुकार ही मुझे यहां तक खींचकर लाई और अब तुम ही खामोश हो गए !
मृत्यु भी कितनी कायर है ! मेरे यहां आने से पहले ही तुमको लेकर चली गई ! वर्ना या तो मृत्यु खाली हाथ लौटती या जिंगालू के प्राण लेकर !
मैं अब ये युद्ध और नहीं लड़ सकता ! नहीं लड़ सकता !
मैं... मैं वापस जा रहा हूं !

वापस जाने से पहले मुझे वापस भेज दो नागराज!
इस दुनिया से वापस भेज दो! मैं यह शरीर छोड़ देना चाहता हूं जिसके हाथों ने ध्रुव पर परम विनाशक शक्ति का वार किया!
शायद तुम्हारे हाथों से मृत्यु पाकर मेरा परलोक सुधर जाए और मेरे पापों का प्रायश्चित हो जाए!
विषांक!
मैं क्रूरपाशा के जाल को तोड़कर वापस तुम्हारी शरण में आ गया हूं नागराज! अब पूरी नागशक्ति तुम्हारी तरफ है!
मैं तुमको दंड नहीं, उत्तरदायित्व दूंगा विषांक! ब्लैक पॉवर्स को नेस्तनाबूद करके विसर्पी को मुक्त कराने का कार्य!
ध्रुव की मृत्यु के कारण मेरे हाथ-पैर शिथिल हो गए हैं! मैं अपने आपको इस युद्ध से अलग कर रहा हूं!
यानी ब्लैक पॉवर्स सफल रहीं!
उन्होंने ध्रुव का तन और नागराज का मन मार डाला!
यह सत्य नहीं है, अजनबी!
हां! ऐसा ब्लैक पॉवर्स समझती है! और यह सत्य नहीं है!
परम विनाशक का वार होने से पहले दिव्य वस्त्र ने ध्रुव को कवच की तरह घेर लिया था! ध्रुव का शरीर जरूर मर गया है...
... परन्तु दिव्यवस्त्र ने इसकी आत्मा को बाहर निकलने से रोक रखा है!
यानी... ध्रुव मर भी गया है और... जिन्दा भी है!
ठीक समझे!
परन्तु आत्मा को ज्यादा देर तक रोक पाना संभव नहीं है!
परम विनाशक के असर को जल्दी से जल्दी काटना होगा!
यानी... परम विनाशक के असर को काटा जा सकता है! कैसे?

देवों के शस्त्रागार से परम सृजन अस्त्र लाकर ! वह अस्त्र देवताओं ने कभी किसी को वरदान तक में नहीं दिया ! क्योंकि उस अस्त्र में हर अस्त्र का सृजन करने की क्षमता भी है और काली शक्तियों के द्वारा पैदा किए गए परम विनाशक जैसे हर अस्त्र को काटने की क्षमता भी है !
सिर्फ इसी अस्त्र के कारण देवता अब तक राक्षसों पर भारी पड़ते आए हैं !
तुमको वह शस्त्र लाना है और देवता तुमको ऐसा कभी नहीं करने देंगे !
एक मामूली नश्वर इंसान के प्राण बचाने के लिए वे ऐसा महायंत्र कभी नहीं देंगे !
परम सृजन अस्त्र तो उनको देना ही पड़ेगा !
वर्ना अगर ध्रुव नहीं रहा तो देवों का शास्त्रागार भी नहीं रहेगा !
बताओ अजनबी !
वहां तक कैसे पहुंचा जा सकता है ?
क्या हमको किसी दूसरे आयाम में जाना पड़ेगा ?
देवलोक एक दूसरा आयाम नहीं, बल्कि एक पूरा भिन्न ब्रह्मांड है !
वहां पर वे भी नहीं जा सकते जिनके पास आयामों के बीच आने- जाने की शक्ति है !
वहां पर जाने का माध्यम सिर्फ ध्रुव के दिव्य वस्त्र हैं ! पर इसमें प्रवेश करने की इजाजत देना या न देना वस्त्र की मर्जी है !
वस्त्र को इजाजत देनी ही होगी...
... ध्रुव को इस स्थिति में पहुंचाने वाला विषांक ही ध्रुव को इस हाल से बाहर निकालेगा !
ठहरो विषांक ! उस देव ब्रह्मांड में जाकर आज तक कोई वापस नहीं आया है !
वहां से वापस आने का रास्ता तुमको खुद ही ढूंढ़ना... ओफ़ ! चला गया !
वह वापस भी आएगा अजनबी ! जो ध्रुव को मारने की क्षमता रखता हो...
मौत भी उससे टकराने से पहले दस बार सोचेगी !

ब्लैक पॉवर्स धीरे-धीरे अपना जाल चारों तरफ फैलाती जा रही थी-
पृथ्वी के आयाम में भी-
ये रोबो के आदमी हैं! और ये अंडर ग्राउंड सिटिज पर कब्जा करने की कोशिश इसीलिए कर रहे हैं क्योंकि ब्लैक पॉवर्स के पास अंडरग्राउंड सिटीज में घुस पाने की क्षमता नहीं है!
पर इनकी ये कोशिश बेकार है! हमारे सामने ज्यादा देर तक टिक नहीं पाएंगे!
क्योंकि हमारी शक्तियों के सामने इनकी शक्तियां सिर्फ गोलियां और रेज हैं!
ब्लैक टर्मिनेटर्स-
दुश्मन को हल्का समझ रहे थे-
और यह-
उन पर भारी पड़ने वाला था-
ये... ये क्या हो रहा है! रोबो के आदमी, ब्लैक पॉवर्स में कैसे बदल रहे हैं?
बदल रहे नहीं, बदल चुके हैं!
और ये हमारे लिए अच्छा नहीं...
...आऽऽऽह!
ब्लैक एनर्जी के घातक वारों के लिए टर्मिनेटर्स तैयार नहीं थे-
और ये अधूरी तैयारी उन पर भारी पड़ रही थी-
पर तैयारी ब्लैक पॉवर्स की भी अधूरी ही थी-
टरॉरा!
घबराओ मत! देव यूनिट मदद के लिए आ गई है!
पर ब्लैक पॉवर्स यहां पर कैसे घुस आई?

ये वास्तविक ब्लैक पॉवर्स नहीं हैं, संदेव! रोबो के आदमी एकाएक ब्लैक पॉवर्स में बदलने लगे हैं!
ये क्या? हमारी स्टिंग रे तो ब्लैक पॉवर्स पर हमेशा असरदार सिद्ध हुई है! पर ये ब्लैक पॉवर्स तो कुछ अलग लग रही हैं!
इन पर खास असर होता नहीं दिख रहा!
हम अलग हों न हों, पर तुम्हारी स्टिंग रे में दम ही नहीं है देव!
'दम' जानते हो न?
ओह! समझा! इसका कारण बाद में पता करेंगे! पहले तो इस समस्या का निवारण कर लें!
इसे कहते हैं 'दम'!
आऽऽऽह! हमारी 'रेज' में पॉवर क्यों नहीं है!
क्योंकि तुम्हारे शस्त्रों को 'पॉवर' देने वाले स्वर्ण नगरी का शक्ति केन्द्र ब्लैक व्हर्लपूल से घिरा हुआ है, देवों!
ये फिलहाल तो सिर्फ तुम तक पहुंचने वाली पॉवर वेव्स को ही रोक रहा है! पर जल्दी ही ये तुम्हारी स्वर्ण नगरी के रक्षक गुंबद को दबाकर मामूली अंडे की तरह तोड़ देगा!
और फिर तुम्हारी शक्ति हमेशा के लिए मिट्टी में मिल जाएगी!
फिर पृथ्वी पर ब्लैक रोबो की ब्लैक पॉवर्स को रोकने वाला कोई नहीं रहेगा!
ऐसा हो सकने की पूरी संभावना थी-
अगर शक्ति केन्द्र बच नहीं पाता तो!
रुक जाओ जयं! शक्ति के केन्द्र में हर कोई नहीं जा सकता!
रुक जाओ जयं! शक्ति के केन्द्र में तुम्हारा जाना निषिद्ध है!

बाहर 'ब्लैक व्हर्लपूल' का दबाव स्वर्ण नगरी की रक्षा करने वाले फोर्स स्फियर पर दरारें डाल रहा था-
और अंदर 'शक्ति केन्द्र' में अफरा-तफरी मची हुई थी-
शक्ति केन्द्र से निकलने वाली ऊर्जा भूमि पर मौजूद देवों तक नहीं पहुंच पा रही है! जल का चक्रवात इसमें अवरोध पैदा कर रहा है!
और ऊर्जा पलटकर वापस आ रही है!
अब ये शक्ति केन्द्र का केन्द्र अपनी ही ऊर्जा के दबाव से तबाह होकर रहेगा!
क्या हम... शक्ति केन्द्र से ऊर्जा का निकलना बंद नहीं कर सकते!
बंद कर सकते हैं!
पर युगों से हमको ऐसा करने की जरूरत नहीं पड़ी! सही तरीका हम भूल चुके हैं!
सिर्फ धनंजय यह जानता है। और उससे संपर्क साधना अभी संभव नहीं हो पा रहा है!
ऐ... ऐ बच्चे! तुम यहां पर क्या कर रहे हो?
बाहर जाओ! तुरन्त!
महात्य! अनहोनी हो गई! हमारे शक्ति गुंबद पर दरारें पड़ रही हैं!
ओफ! हम जल से सांस तो ले सकते हैं, पर जल का वेग नहीं सहन कर सकते! अगर कवच टूटा तो स्वर्ण नगरी में कुछ नहीं बचेगा!
सिर्फ भूमि पर मौजूद देव बचेंगे! और वे भी शक्तिहीन होंगे!
ऐसा कुछ नहीं होगा! हम सब बचेंगे! और शक्ति केन्द्र भी बचेगा!
नष्ट होगा तो सिर्फ हमको चुनौती देने वाला ब्लैक व्हर्लपूल!
कौन है ये बालक?
जो हमसे अधिक ज्ञान रखता है!

ये मेरा पुत्र है महात्य ! ये बचपन से ही इस तरह की बड़ी-बड़ी बातें करता है ! पर आज तो ये हद से आगे निकल गया ! इसकी तरफ से मैं क्षमा मांगती हूं !
तुम तो स्वामी हो ! धनंजय की पत्नी ! यानी... ये जयं है ! धनंजय का पुत्र !
ये पूरी स्वर्ण नगरी सचल है ! मोबाइल ! हर इमारत अपने आप में एक यान है ! ये शक्ति केन्द्र भी !
हां ! ऐसा सुना तो मैंने भी था। पर ये सब किंवदंती है। कही सुनी, बढ़ा-चढ़ा कर कही गई बातें हैं ! वर्ना अगर ऐसा होता तो हमको कभी न कभी वे यंत्र तो दिखते जो ऐसा कर सकते हैं !
हां, महात्य ! मैं अभी इसको यहां से ले जाती हूं !
ठहरो, स्वामी ! धनंजय का पुत्र अगर बड़े बोल बोलेगा तो उसको सार्थक करने की क्षमता भी रखेगा। इसे बोलने दो !
वे यंत्र हैं और यहीं पर है ! पूरी स्वर्ण नगरी की हर एक इमारत को सचल बनाने वाला नियंत्रण यहीं पर है !
देखिए ! मैं आपको दिखाता हूं !
फर्श के पत्थर पलटने लगे और उनके नीचे से यंत्र के छोटे-छोटे हिस्से प्रकट होकर और एक दूसरे में फिट होकर, एक बड़े यंत्र का निर्माण करने लगे -
अद्भुत !
अब आप सबको अपनी-अपनी इमारतों में जाने का मानसिक संदेश भेज दें ! और उनको बता दें कि उनकी इमारत यान की तरह चलकर उनको सुरक्षित स्थान पर पहुंचा देंगी !
तुमको ये सब कैसे पता है जयं ? तुम तो शक्ति केन्द्र में पहले कभी नहीं आए ?
आया हूं मां ! आठ साल पहले !
आठ साल पहले ! पर तेरी उम्र तो सिर्फ सात साल है !
तब मैं आपके गर्भ में था। पिताजी आपको शक्ति केन्द्र का आशीर्वाद दिलाने आए थे। और तभी उन्होंने आपको ये यंत्र दिखाए थे, और इनका रहस्य बताया था !

हे भगवान ! मेरे तो पल्ले कुछ भी नहीं पड़ रहा था ! और तू सब कुछ सुन भी रहा था और समझ भी रहा था ?
संभव है, स्वामी !
उस समय बच्चों में नई कोशिकाओं का विकास हो रहा होता है ! और उस समय उनमें जो भर जाता है, वह अमिट होता है ! अभिमन्यु के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ था !
ये कैसे हो सकता है ?
तुम्हारा पुत्र देव जाति की उपलब्धियों में नए अध्याय जोड़ेगा ! तुम देखना !
महात्य ! सभी स्वर्णनगरी वासी अपनी-अपनी इमारतों में जा चुके हैं और उनको होने वाले घटनाक्रम से परिचित भी करवा दिया गया है !
ठीक है ! अब बताओ जयं कि इन इमारतों को अचल से सचल कैसे बनाया जाएगा !
इस लीवर से ! और इस शक्ति केन्द्र से हम हर इमारत की उड़ान को वैसे ही नियंत्रित कर सकेंगे जैसे अंतरिक्ष में जाने वाले यानों को पृथ्वी से किया जाता है !
ठीक है ! शुरू करो !
स्वर्ण नगरी का 'शक्ति कवच' ढहते ही-
सारी इमारतें तिनकों की तरह उड़ गईं ! हाहाहा ! ब्लैक व्हर्लपूल तो पहाड़ों तक को दूसरी दुनिया में भेज सकता है ! फिर इन मामूली इमारतों की तो औकात ही क्या है ?
पर... कुछ गड़बड़ है !
इन इमारतों की उड़ान अनियंत्रित नहीं है ! नियंत्रित है !
यानी पानी का वेग इनको नहीं बहा रहा है, ये अपनी ऊर्जा से चल रही हैं !
ये कैसे हो सकता है !
हर इमारत पानी में तैरती लड़ाकू पनडुब्बी बन गई है !
हजारों-हजार पनडुब्बियां !
और ये ब्लैक व्हर्लपूल को पैदा करने वाली मेरी पनडुब्बियों पर हमला कर रही हैं !
वाह ! ये युद्ध देखने लायक होगा !
हर कदम पर एक न एक युद्ध हो रहा था -

और ऐसे हर युद्ध का परिणाम परम युद्ध के निर्णय पर असर डाल सकता था-
क्योंकि ये सारे युद्ध आपस में एक अदृश्य तार से जुड़े हुए थे-
परिस्थिति एक तरफ से अनुकूल हो रही है तो दूसरी तरफ से प्रतिकूल!
विषांक और नाग-सेना हमारे खिलाफ खड़ी हो गई है!
यति सेना भी जिंगालू के टपक पड़ने से हमारे हाथों से फिसल गई है!
लेकिन ध्रुव अभी मृत है! नागराज शोक में डूबा हुआ है!
और विषांक ध्रुव को जीवित करने की कोशिश में एक असंभव यात्रा पर रवाना हो चुका है!
अगर हम कमजोर हुए हैं तो दुश्मन भी कमजोर हुआ है!
हमला करने का यह सर्वोत्तम अवसर है!
एक और चिन्तित करने वाली सूचना आई है!
पृथ्वी पर पापी मानव थोक में ब्लैक पॉवर्स में बदले जा रहे हैं!
और यह शक्ति उनको रोबो दे रहा है! पृथ्वी का सबसे बड़ा अपराधी!
यह पता नहीं चल पा रहा है कि वह ये सब कैसे कर रहा है?
उसका भी समय आने पर हिसाब कर लेंगे सम्राट! अभी तो अलंध्या की भूमि पर मौजूद खतरे पर ध्यान दीजिए!
ब्लैक पॉवर्स की एक शक्तिशाली अग्रिम टुकड़ी भेजकर परम युद्ध का बिगुल बजा दीजिए!
एक मिनट! कुछ गड़बड़ है जो हमारी नजरों से चूक रहा है...
... नागू नाग!
नागू कहां है? वह कहीं नजर नहीं आया?
वह जिंगालू का रूप धरकर अलंध्या जला गया! और अभी वह गायब है!
वह जरूर कोई और रूप धरकर कोई नया खेल खेल रहा है!
ब्लैक पॉवर्स बांटने का हक, जो सिर्फ हमारा है! वह उसको कैसे मिल गया?
और वह किसी भी रूप में हो सकता है!
आप मेरी तरफ ऐसे क्यों देख रहे हैं सम्राट?
तू... तू कहीं नागू तो नहीं है!
मुझे सेना भेजने की गलत सलाह देकर मुझे हरवाने के लिए आया है तू!
बता!
मैं... मैं आपका भूला-बिसरा गुरू गुरुदेव हूं, सम्राट!
कसम से!
ओफ्!
ये मुझे क्या हो रहा है?

इस नागू ने मेरा दिमाग खराब कर दिया है। मुझे पूरा यकीन है कि वह अलंध्या में ही है और किसी नए रूप में है! उसका पता लगाओ गुरुदेव!
वर्ना तब तक मुझे हर किसी पर नागू होने का शक होता रहेगा!
क्रूरपाशा की चिन्ता उचित ही है!
आखिर ये नागू गया तो गया कहां?
नागू की अनुपस्थिति भी उतनी ही खलबली मचा रही थी, जितनी कि उसकी उपस्थिति-
पर एक और चीज की उपस्थिति अब दूसरे खेमे को बेचैन करने वाली थी-
आप नागू को ढूंढें! तब तक मैं युद्ध की योजना पर काम करता हूं!
उस तरफ से भयानक आवाजें क्यों आ रही हैं?
रानी यति!
ब्लैक पॉवर्स की एक बड़ी टुकड़ी इस तरफ बढ़ी चली आ रही है!
वही हो रहा है जिसका मुझे डर था!
अपनी सीमित शक्तियों से हम मानव या नागों से तो निपट सकते हैं...
... पर ब्लैक पॉवर्स के सामने शायद ही टिक पाएं!
और अभी तो यतिराज भी यहां पर नहीं हैं!
अब क्या होगा?
यहां पर तुम्हारी सहायता के लिए हम चार मौजूद हैं!
पर खतरा सिर्फ यतियों पर ही नहीं-
नागों पर भी मंडराने वाला था-
ब्लैक पॉवर्स की एक अग्रिम टुकड़ी हमारी तरफ बढ़ रही है!
ध्रुव मृत है और नागराज शोका-कुल! हमारा नेतृत्व करने वाला भी कोई नहीं है!
कैसे लड़ेंगे हम यह युद्ध?

हम ये युद्ध जीतेंगे...
... और दुश्मन को नेस्तनाबूद करके जीतेंगे!
कुमारी विसर्पी! आप... आप अलंध्या से कैसे बाहर आ गई?
विसर्पी?
मैं विषांक द्वारा रचित छाया विसर्पी हूं!... और कुमार विषांक की अनुपस्थिति में मुझे नागों के नेतृत्त्व का महान अवसर दिया गया है!
" अब चाहे ब्लैक पॉवर्स आए या कोई और- "
" दुश्मन को हम एक ही नाम से बुलाएंगे- "
" गाजर- मूली- "
" क्योंकि वे उसी की तरह कटेंगे- "
षष्ठम अध्याय
संकट मोचन
विकराल रूप था नागराज और नागसेना की तरफ बढ़ती ब्लैक आर्मी का -
ऐसा कि अगर मौत भी सामने पड़ जाए तो शायद वह भी रास्ता बदलकर गुजर जाए-
पर छाया विसर्पी के नेतृत्त्व संभाल लेने से नाग सेना का हौसला और भी बुलंद हो गया था-

और वहां से दूर- ब्लैक पॉवर्स की दूसरी टुकड़ी, यतियों की सेना और नागराज के मित्रों से टकरा रही थी-
हजारों हजार प्रतिद्वन्दी एक-दूसरे से टकरा रहे थे-
और इनमें से हर एक युद्ध अपने आपमें एक कहानी बयान कर रहा था-
यह एक ऐसा युद्ध था, जिसका वर्णन करने में एक युग बीत जाए-
और यह युद्ध मामूली ब्लैक पॉवर्स लड़ रही थीं-

इसका अंदाजा लगाना ज्यादा मुश्किल नहीं था कि वह युद्ध कितना विकराल होगा, जब विकट ब्लैक पॉवर्स दिव्य शस्त्रों से युक्त नागराज से लड़ेंगी-
और जिन्दगी ने अगर साथ दिया तो ध्रुव से भी-
और ध्रुव एवं उसकी जिन्दगी को बांधने वाली डोर -
देवायुध गृह में थी-
पता नहीं कि ये मैं कहां पर निकल आया हूं।
चारों तरफ शून्य है! अस्त्र तो छोड़ो, किसी सुई जैसी चीज का भी नामोनिशान नहीं है!
पर इतना भी पक्का है कि दिव्य वस्त्र मुझे गलत रास्ता नहीं दिखा सकता! यानी शस्त्रागार भी यहीं पर है और शस्त्र भी!
बस उसको देखने वाली दृष्टि चाहिए!
अंजान शक्तियों का धारक विषांक अपनी दृष्टि के क्षेत्र को किसी भी स्तर पर फैला सकता था-
देव-स्तर तक भी-
अद्भुत! तो ये है देवों का देवायुध गृह!
और यहां पर कोई रक्षक तक नजर नहीं आ रहा है!
स्पष्ट है कि ये आयुध अपनी रक्षा स्वयं करने की क्षमता रखते हैं!
इनमें से किसी भी आयुध को अकारण हाथ लगाना मौत को दावत देना होगा!
वैसे भी मुझे यह पता नहीं है कि परम सृजन अस्त्र दिखता कैसा है! अब कैसे ढूंढूंगा मैं उस अस्त्र को?
एक तरीका है! मुझे परम विनाशक अस्त्र का संधान करने वाला मंत्र अभी तक याद है!
मैं अगर परम विनाशक का संधान करने की कोशिश करूंगा...
... तो परम विनाशक की काट, परम सृजन अस्त्र मुझको रोकने की कोशिश जरूर करेगा और यही उस अस्त्र की पहचान होगी!
ओ ssss प्रचंडाय... विनाशाय...
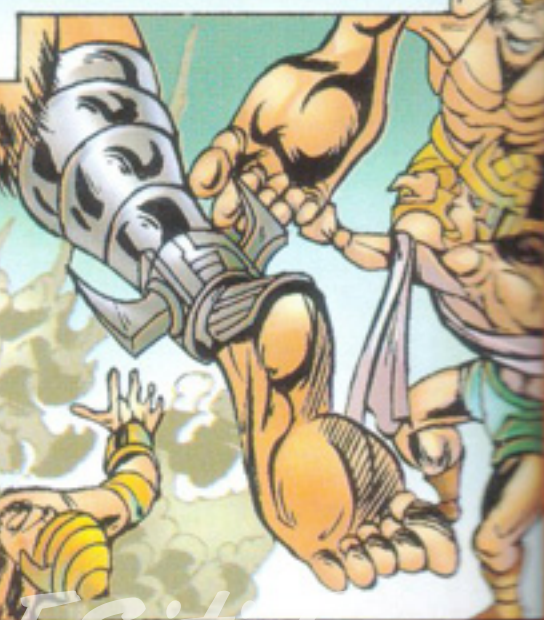
विषांक की ध्वनि तरंगों का जवाब आने में देर नहीं लगी-
भूखंड खंडित...
आऽऽऽह!
ये क्या? क्या ये परम सृजन अस्त्र का प्रहार था!
ये प्रहार पूज्यनीय सृजन अस्त्र का नहीं...
...बल्कि अस्त्रागार रक्षक अस्त्रामन का है!
तू कौन है रे, प्राणी? और इस निषिद्ध क्षेत्र में किस कारण से घुस आया है?
अस्त्रामन को नागशासक विषांक प्रणाम करता है!
मुझे परम सृजन अस्त्र की तलाश है! पूरी सृष्टि के वर्तमान रूप को बचाने के लिए उसका मिलना बहुत जरूरी है!
एक तुच्छ नाशवान प्राणी को सृष्टि की रचना करने की क्षमता रखने वाले सृजन अस्त्र का नाम भी जबान पर नहीं लाना चाहिए!
उसे पाने की इच्छा रखना तो दूर की बात है!
मेरे पास तर्क-वितर्क का समय नहीं है, अस्त्रामन!
मुझे परम सृजन अस्त्र दे दें, क्योंकि यह उसकी जान का सवाल है जो ब्रह्मांड की रक्षा करने की क्षमता रखता है!
जो अपने प्राणों की रक्षा नहीं कर पाया वह भला ब्रह्मांड की रक्षा क्या करेगा? जा प्राणी!
तेरे पास जीवित वापस जाने का एक ही मौका है!
क्योंकि अस्त्रामन का हर अंग अपने आपमें एक प्रलयंकारी अस्त्र है!
ले, तेरे जाने से पहले, तेरी मेहनत के इनाम के रूप में मैं तुझको परम सृजन अस्त्र की छाया अवश्य दिखा देता हूं!
देख!
अपनी तस्वीर भी बना लें, अस्त्रामन!
ताकि उस पर आपके प्रिय हार चढ़ा सकें!
क्षमा करना!
पर मेरे पास समय कम है! कृपया रास्ता छोड़ दें!

तूने मुझ पर वार करके मुझको तुम्हारा संहार करने का कारण दे दिया है प्राणी! और अस्त्रामन का काम ही संहार करना है!
याद है न कि अस्त्रामन का हर अंग एक शस्त्र है!
और इन शस्त्रों में हर अस्त्र-शस्त्र की काट मौजूद है!
अस्त्र-शस्त्र स्वयं युद्ध नहीं जीतते! उनका प्रयोग करके योद्धा युद्ध जीतते हैं!
और आज तक तुम्हारा सामना देवों से ही हुआ है!
विषांक जैसे नाग योद्धा से नहीं!
हे महादेव, अगर मेरा मकसद सही है...
... तो मुझे तीसरी आंख की ज्वाला शक्ति प्रदान करें!
आऽऽऽह!
देखा, अस्त्रामन! महादेव भी मेरे साथ हैं!
पर... तुम्हारा अंत करके मुझे अच्छा नहीं लगा...
महादेव के भक्त का अंत करके मुझे भी अच्छा नहीं लगेगा! पर क्या करूं?
यह मेरा क्षेत्र है! यहां पर महादेव प्रभु का नहीं, मेरा राज चलता है!
और मेरा दंड भी!
अद्भुत! नए-नए अस्त्र आपस में जुड़कर इसका नया शरीर बना रहे हैं!
यानी... अस्त्रामन अनश्वर है!
सही समझे नश्वर प्राणी!
और मुझको पार करके किसी भी अस्त्र तक पहुंचना असंभव है!

ये तो विचित्र स्थिति हो गई है! तुमको पार करके कोई आ नहीं सकता!
और विषांक को कोई रोक नहीं सकता!
छाया विषांकों! जाओ और परम सृजन अस्त्र की तलाश करो!
ओह! ये छायाएं तो मुझे पार करती हुई निकली जा रही हैं!
पर मेरे पास इनको नष्ट करने वाले शस्त्र हैं!
ओह! तू मेरे वार को एक नई चाल से काट रहा है! लगता है तेरे छाया रूप परम सृजन अस्त्र को ढूंढ ही लेंगे!
इसमें मुझे तो कोई शक नहीं है!
इन सबको एक साथ नष्ट करने वाले!
शक नहीं, भ्रम बोलो!
ये छाया रूप परम सृजन अस्त्र को कैसे ढूंढ पाएंगे...
ऊर्जास्त्रों की एक बाढ़ अपने-अपने निशानों की तरफ बढ़ चली-
और साथ ही उनको रोकने के लिए सर्प भुजाओं की सेना भी लपक पड़ी-
...जब सारे देवास्त्र एक जैसे ही दिखेंगे!
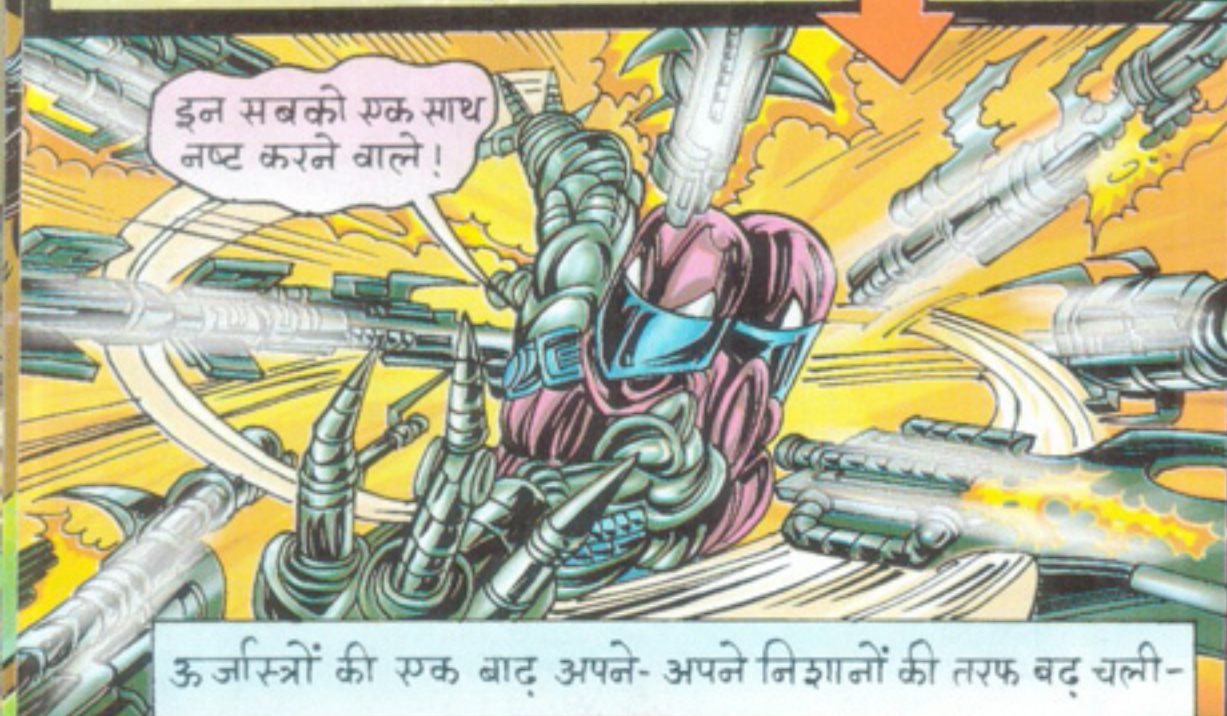
अब छाया विषांको की आवश्यकता नहीं रही थी-
क्योंकि अब सृजन अस्त्र को पहचान पाना ही असंभव था -
अच्छा हुआ तूने हार मान ली विषांक! अब कम से कम तू ज़िन्दा तो लौट सकेगा!
चाहे खाली हाथ ही लौटे!
लौटना तो मुझे है ही, अस्त्रामन...
...पर खाली हाथ नहीं!
अगर मैं परम सृजन अस्त्र को पहचान नहीं सकता...
... तो पूरे देव शस्त्रागार को अपने साथ ले जाऊंगा!
तूने... तूने पूरे शस्त्रागार को उठा लिया! असंभव!
पर तू एक गलती भी कर गया! तेरे दोनों हाथ अब व्यस्त हैं! अब तू मेरे वार से कैसे बचेगा?
बचूं या न बचूं, पर मरने से पहले इन शस्त्रों को मुझे अलंध्या तक पहुंचाना ही है!
तुम तो क्या, अभी मौत भी मुझे रोकने की कोशिश करेगी तो वह भी असफल होगी!
शाबाश, विषांक! तुम परीक्षा में सफल हुए!
जो प्राणी अपनी जान दांव पर लगा सकता है...
... वह सृजन अस्त्र का कभी गलत प्रयोग नहीं करेगा!
चलो! मैं चलता हूं तुम्हारे साथ!
पर... तुम क्यों?
क्योंकि मैं ही परम सृजन अस्त्र हूं!
चलो!

एक अवरोध पार हो गया था! पर दूसरा अवरोध बचा हुआ था-
और इस अवरोध को दूर किए बिना नागराज की यति सेना ब्लैक पॉवर्स को टक्कर नहीं दे सकती थी-
क्योंकि यहीं से वह यति शक्ति, यतियों को मिलनी थी जो ब्रह्मांड पर छाए खतरे को टाल सके-
मुश्किल तो बहुत हुई पर हिमालयों पर मौजूद यतिलोक का आयाम द्वार मैंने खोज ही लिया! अब देखना यह है कि वह खतरा कौन सा है जिसके बारे में...
...यति रानी मुझे आगाह कर रही थीं!
ओऽऽऽह!
ओऽऽऽह!
ये मैं कहां पर आ गया हूं!
कहीं गलती से मैंने किसी दूसरे आयाम का द्वार तो नहीं खोल लिया है!
तुमने ऐसे आयाम को खोला है प्राणी, जिसे किसी महाशक्ति ने अवरुद्ध कर रखा था!
ये कौन बोल रहा है?
आस-पास तो कोई नजर नहीं आ रहा है!

ये क्षेत्र ब्रह्मांड की सीमा के परे है जीव! यहां पर जीवन सिर्फ ध्वनि और प्रकाश के रूप में रह सकता है। कोई भी जीव इस रूप में पहली बार इस क्षेत्र में आया है! ये विभिन्न आयामों के बीच का क्षेत्र है! और यह ब्रह्मांड के असंख्य आयामों को एक-दूसरे से जोड़ता है!
तुम साधारण प्राणी नहीं हो सकते! तुम पर जरूर किसी देव का आशीर्वाद है!
मुझ पर तो नहीं, पर मेरे पिता पर जरूर है! देव कालजयी का!
और तुम्हारी रगों में तुम्हारे पिता का रक्त है! शायद इसीलिए तुम अभी तक जीवित हो! पर अधिक समय तक नहीं रहोगे! देव भी इस स्थान पर प्रकाश या ध्वनि रूप में ही आ सकते हैं! कहो, क्यों आए हो तुम यहां पर?
यतिलोक के द्वार की तलाश में! मुझे पिताजी का वचन निभाना है!
एक निर्दोष यति बालक के प्राण बचाने हैं!
असंभव कार्य है! उस द्वार को किसी आयामक की शक्ति ही खोल सकती है! बलपूर्वक खोलने का अर्थ आयामक की शक्ति को चुनौती देना है!
जरूरी हुआ तो दूंगा! आप कृपा करके मुझे यति लोक का द्वार दिखाएं!
असंख्य द्वार हैं यहां पर! मुझे खुद नहीं पता कि यतिलोक का द्वार कौन सा होगा, और कहां होगा? यह असंभव कार्य है! लौट जाओ!
यह मैं नहीं कर सकता... अरे! मेरा पैर कहां गया?
मैंने कहा न, इस क्षेत्र में, इस रूप में जीवन नहीं रह सकता! जल्दी ही तुम्हारा शारीरिक अस्तित्व मिट जाएगा!
सिर्फ कुछ पलों की देर है!
उन कुछ पलों में मैं उस द्वार का पता लगा लूंगा!
यतिलोक से संपर्क में जोड़ लूंगा!
उस बंधन के द्वारा जो दो जीवित प्राणियों के बीच में होता है! करुणा का बंधन!
एक-दूसरे की सहायता और रक्षा करने का बंधन!
आऽऽऽह!
ये यति पुत्र की पुकार है!
संपर्क जुड़ गया है! आवाज उधर से आई है!
यहां से!
पर... ओफ़ नहीं!
आयामक शक्ति ने यतिलोक के द्वार को एक सूर्य के अंदर सुरक्षित कर दिया है!
ताकि न कोई अंदर आ पाए और न ही बाहर आ पाए!
सूर्य की ज्वाला मुझे भस्म कर देगी!
पर अगर रुका तो भी मैं नहीं बचूंगा!
बेहतर होगा कि मैं अंदर घुसने का प्रयास करते हुए मरूं!

नागीश ने आगे बढ़ने की ठान तो ली थी-
पर किसी महासूर्य की ऊष्मा को सहन कर पाना ब्रह्मांड की किसी भी शक्ति के लिए असंभव कार्य था-
महासूर्य के पास जाने की कोशिश में नागीश का बचा खुचा शरीर धधक उठा-
और फिर धीरे- धीरे आग- आग में मिल गई-
और उसके साथ- साथ यतियों के ब्लैक पॉवर्स से जीत सकने की आस भी रण की धूल में मिल गई-
नागीश का अस्तित्व मिट गया था-
ब्लैक पॉवर्स, शक्तिहीन यतियों पर हावी हो रहे थे-
पर इतिहास गवाह है कि युद्ध बल से नहीं, हौंसले से जीते जाते हैं-
यतियों! इस युद्ध को लड़ने के लिए हमने तुम्हारे युवराज की जान दांव पर लगाई है!
बता दो इन ब्लैक पॉवर्स को कि तुम्हारे युवराज की जान की कीमत पूरी ब्लैक पॉवर्स का समूल नाश है!
और अगर किसी यति योद्धा को अभी भी शक हो तो मैं अपने आपको भी दांव पर लगाती हूं!
रानी यति के शब्दों और कार्यों ने यति सेना के खेमे में-
एक नई ऊर्जा का संचार कर दिया-
ये क्या हो रहा है?
एकाएक यतियों में इतना जोश आ गया है कि वे सीमित शक्ति से ही हमारी सेना को टक्कर दे रहे हैं!

ये अभी शक्तिहीन नहीं हैं! ये मरेंगे तो जरूर लेकिन साथ-साथ तुमको भी मार जाएंगे, क्रूरपाशा!
क्योंकि मेरी छठी इन्द्रिय कहती है कि विषांक परम सृजन अस्त्र लेकर वापस लौट सकता है! वह आएगा, ध्रुव जी उठेगा, नागराज भी शोकमुक्त हो जाएगा, और उन दोनों के उठ खड़े होने के बाद शायद तुम खड़े होने लायक न रहो!
फिर मैं क्या करूं महाकाल छिद्र?
यतियों को हथियार डालने पर मजबूर करो! वे तो कह रहे हैं कि उन्होंने अपने युवराज की जान दांव पर लगा दी है! पर क्या सचमुच ऐसा ही है?
अपने युवराज की जान अपनी आंखों के सामने जाती देखकर वे क्या करेंगे?
मैं समझ गया! अब आप तमाशा देखें?
और फिर-
ओफ़! ये क्या है?
किसी प्रकार का महा अस्त्र लगता है!
नहीं! हमको कोई सूचना देना चाहता है!
देखो! यह गोला चमक रहा है!
इसमें आकृतियां उभर रही हैं!
यतियों! हमको यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम अपने बजाय अपने युवराज का बलिदान देने के इच्छुक हो!
लो, मैं सम्राट क्रूरपाशा का सेवक कालीवान इसकी बलि देकर तुम सबकी इच्छा पूरी कर देता हूं!
ओह नहीं!
हम तो ये भूल ही गए थे कि हम तो नहीं, पर क्रूरपाशा आयामक के जरिए यतिलोक का आयाम कभी भी खोल सकता है!
हमारी वजह से युवराज की जान जाएगी!
हम ये युद्ध नहीं लड़ेंगे, रानी यति!
चाहे ऐसा करके हम आपकी आज्ञा का उल्लंघन ही क्यों न करें!
हथियार डाल दो योद्धाओं!
"देखा महाकाल छिद्र! अब ये मेमनों की तरह कटेंगे-"

"शाबाश क्रूरपाशा! यति सेना के खत्म होने से पहले नागराज की शक्ति आधी रह जाएगी-"
"पर ये क्या? यति एकाएक प्रतिरोध क्यों करने लगे?"
"ओफ् नहीं! यतिलोक के दृश्यों को देखिए महाकाल छिद्र!"
"आखिर यह कौन सा भयावह प्राणी है जो यति आयामक के अवरोध के बावजूद यतिलोक में जा घुसा है-"
तुम्हारे युवराज! अब सुरक्षित हैं यति योद्धाओं!
अब इन ब्लैक पॉवर्स को हमेशा के लिए मौत के अंधेरे में गर्त कर दो!
पर ये हैं कौन, रानी यति!
पुत्र ने पिता का वचन पूरा किया है, यतिपति!
तो क्या ये?
"हां! हम पर एक बहुत बड़ा ऋण चढ़ गया है, यतिपति! अगर जान देकर भी उसे चुका पाई तो अपने आपको भाग्यशाली समझूंगी।"
तू... तू तो उस आयाम द्वार से अंदर आया हुआ प्रतीत हो रहा है जो महासूर्य के अंदर स्थित है! उसको तूने कैसे खोला? और... वहां तक तू जिन्दा कैसे पहुंचा?
तू आखिर है कौन?
अगर तू यति युवराज को छोड़कर वापस चला जाए तो मैं दोस्त हूं! और नहीं गया तो तेरी मौत हूं!
और तेरी इस मौत का नाम नागीश है!
और सुन! सूर्य की लपटों ने मुझे भस्म करने की कोशिश तो की! पर जल्दी ही उनको पता चल गया कि मेरी रगों में सूर्य की गर्मी से भी ज्यादा गर्म चीज मौजूद है!
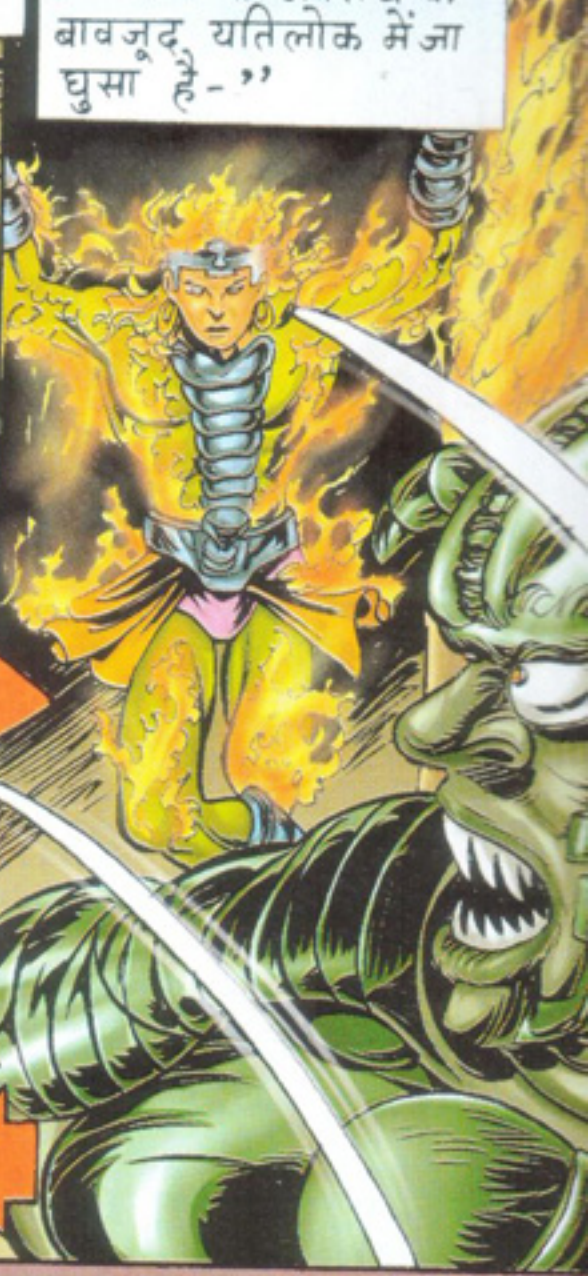
धन्यवाद? पर क्यों?
और वह है हलाहल! सूर्य की गर्मी को हलाहल की ऊष्मा ने सोख लिया! मैं आयामक द्वार तक पहुंच तो गया था पर उसे खोल पाना असंभव सिद्ध हो रहा था!
पर एकाएक आयाम द्वार का अवरोध कुछ पलों के लिए कमजोर हो गया और मैं उसमें इतना बड़ा छिद्र करने में सफल हो गया कि मेरा शरीर अंदर घुस सके!
और यह जरूर तुम्हारे यहां आने के कारण हुआ होगा! तुम्हारे यति लोक में प्रवेश करने के कारण अवरोध पल भर के लिए हटा जरूर होगा!
और इसके लिए मुझे तुम्हारा धन्यवाद जरूर करना चाहिए!
मुझे अंदर आने और बाहर जाने में मदद करने के लिए!
बाहर जाना तो अभी बाकी है बच्चे!
जानता हूं! सूर्य द्वार के रास्ते से मैं तो बाहर जा सकता हूं! पर यति युवराज को नहीं ले जा सकता!
अब तू हमको उसी द्वार से बाहर लेकर जाएगा, जिधर से तू अंदर आया है!
तू भी बाहर जाएगा और ये यति भी! पर सिर्फ तुम्हारी आत्माएं! और वह भी दूसरी दुनिया में!
क्योंकि तू जानता नहीं है कि तेरा सामना कालीवान से है! और काली का वरदान है मुझे कि मैं विष से नहीं मर सकता!
नागीश अद्भुत शक्ति धारक तो जरूर था, पर अनुभवी नहीं था-
और ये बात उसके खिलाफ जा रही थी-
परम युद्ध में जीत हार का दारोमदार अब नन्हें कंधों पर आ टिका था-
उनकी जीत या हार का इस युद्ध पर गहरा असर पड़ने वाला था-
मेरा दिल किसी अनहोनी की आशंका से घबरा रहा है, रिचा!
बार-बार ध्रुव की शक्ल मेरी आंखों के आगे घूम रही है!
मन कर रहा है कि इसी पल उसके सामने जाकर उसको सारी सच्चाई बता दूं!
पर पता नहीं क्यों ऐसा लग रहा है कि अब मैं उससे कभी मिल नहीं पाऊंगी!
ध्रुव मिलेगा, नताशा! जरूर मिलेगा! उसको तो अभी जलज से मिलना बाकी है!
ध्रुव से तो तब मिलेंगे जब यहां से बचेंगे! समय बहुत कम है! और हमारे पास कोई प्लान भी नहीं है!
अब तो चिप कंट्रोल सेंटर पर भी कड़ा पहरा होगा।
आऽऽह!
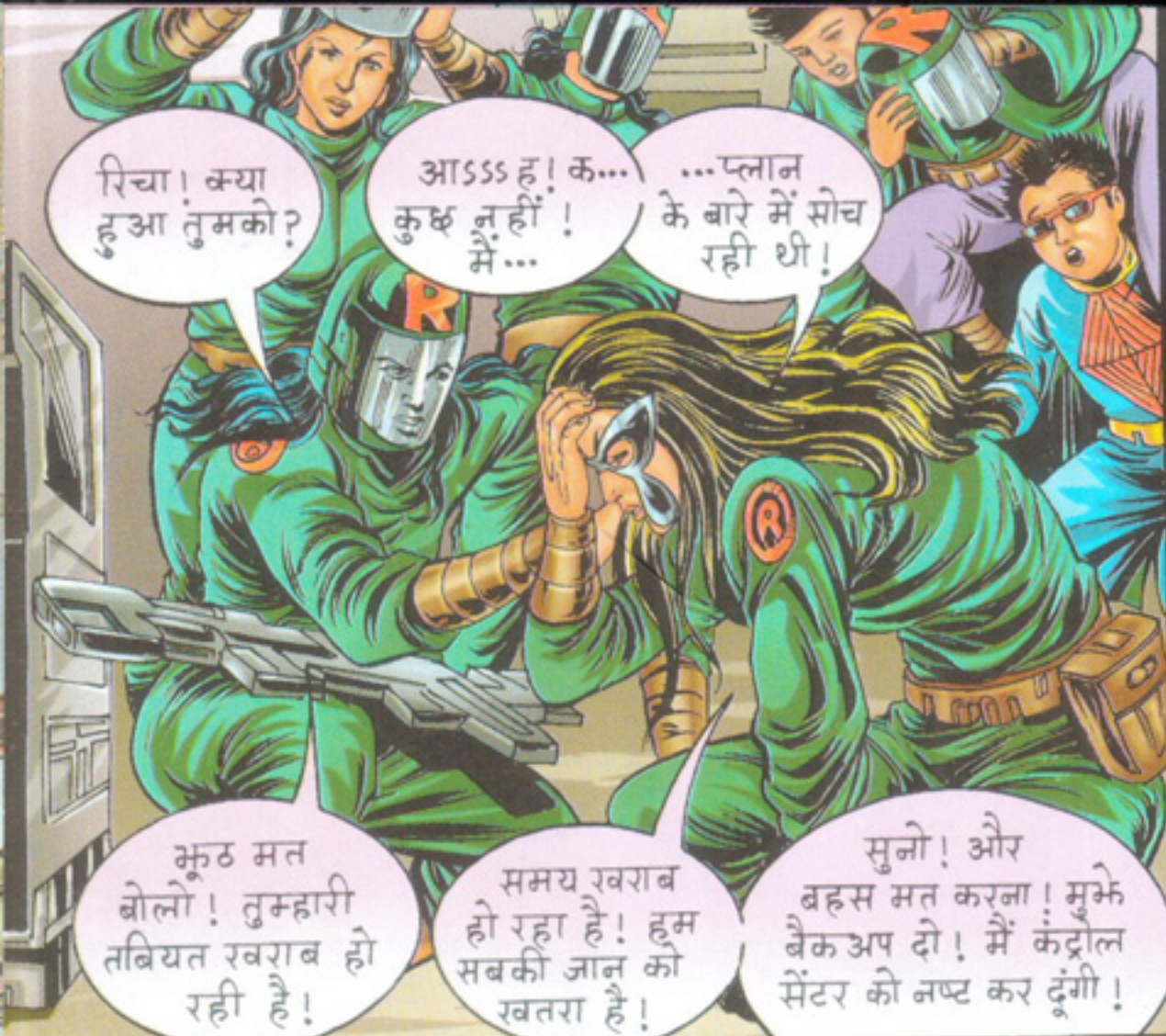
रिचा! क्या हुआ तुमको?
आऽऽऽह! क... कुछ नहीं! मैं...
...प्लान के बारे में सोच रही थी!
झूठ मत बोलो! तुम्हारी तबियत खराब हो रही है!
समय खराब हो रहा है! हम सबकी जान को खतरा है!
सुनो! और बहस मत करना! मुझे बैकअप दो! मैं कंट्रोल सेंटर को नष्ट कर दूंगी!
बच्चों का ध्यान रखना!
रिचा!
मां! ये तुम क्या...
सुनो! जिन्दगी भर मां की बात मानना!
अब ज्यादा इमोशनल होने की जरूरत नहीं है!
सोचो! कंट्रोल सेंटर पर कैसे पहुंचा जा सकता है?
आई हैव ए प्लान!
जलज, तुम यहां के सारे रास्ते जानते हो! और ऋषि, तुम कम्युनिकेशन के साधनों से अच्छी छेड़छाड़ कर लेते हो!
मेरे प्लान का पहला चरण तुम लोगों की सफलता पर निर्भर करेगा!
ओ. के. कैप्टेन! पर पहले प्लान तो बताएं!
और फिर-
MEDIA
रुको! कौन हो तुम?
मीडिया रूम में घुसने से पहले अथोरिटी स्लिप दिखाओ!
गधे के बच्चे! तू मुझसे स्लिप मांगेगा?
ये... आवाज तो... सॉरी कमांडर! मैं आपको पहचान नहीं पाया!
जा... जाइए सर!
अब हम मीडिया सेंटर के अंदर हैं!
ओए कमाल कर दिया! इतनी अच्छी मिमिक्री कैसे करी तूने जलज?
मिमिक्री किसने की?
मेरा फेवरिट पास्ट टाइम है, अपने वाई फाई मोबाइल में सबकी आवाजें टेप करना!
इसमें कमांडर की कई आवाजें रिकॉर्ड हैं! वही काम आ गई!
तब तो इसमें रोबो की आवाज भी होगी!
ढेर सारी!
तो ला फोन! साउंड एडिट करके एक नया ऑर्डर तैयार करना है!

कुछ ही मिनटों के बाद रोबो सिटी में एक महत्वपूर्ण संदेश हर स्क्रीन पर गूंज रहा था-
कंट्रोल सेंटर की निगरानी कर रहे सारे सोल्जर्स, तुरन्त ईस्ट कॉरीडोर में पहुंचे!
वहां पर हमला किया जा रहा है!
ये हमारे एक्सप्रेस ऑर्डर्स हैं!
ये क्या हो रहा है? हमने तो ऐसा कोई मैसेज नहीं दिया!
कुछ गड़बड़ है! तुरन्त कुछ सोल्जर्स को मीडिया सेंटर में भेजो!
और मुझे एनाउंसिंग सिस्टम से कनेक्ट करो!
अब एक नया मैसेज गूंज रहा था-
सोल्जर्स जहां पर हैं वहीं पर रहें! पहला वाला आदेश किसी की शरारत है!
अपनी-अपनी पोजीशन लिए रहो! ये रोबो का हुक्म है!
अब हम क्या करें? ईस्ट कॉरीडोर में जाएं या नहीं?
नहीं! अभी-अभी नया ऑर्डर आया है न कि यहीं रहना है!
पर कंफ्यूजन अभी खत्म नहीं हुआ था-
सोल्जर्स शरारतों से भ्रम में न रहें! वे तुरन्त ईस्ट कॉरीडोर की तरफ रवाना हों!
हद हो गई यार! मोबाइल सिस्टम भी डेड है!
अब क्या करें?
ऐसा करते हैं कि आधे यहां पर रुकते हैं और आधे ईस्ट कॉरीडोर में जाते हैं!
जलज और ऋटषि ने अपना काम कर लिया था-
बस कर! अब निकल ले यहां से!
अरे! ये तो कमांडर लग रहे हैं!
जाओ! मीडिया सेंटर में कोई छुपा हुआ है! ढूंढो जाकर उसे!
कौन छुपा है अंदर सर?
"तुम्हारी मौत-"
"और मीडिया सेंटर की भी-"

मीडिया सेंटर तबाह हो चुका था-
संदेश व्यवस्था ठप्प हो चुकी थी-
और अब बारी कंट्रोल सेंटर की थी-
कई सोल्जर्स दूसरी तरफ रवाना हो रहे हैं!
लगता है जलज और ऋषि ने अपना काम कर दिया है!
अब हमको अपना काम करना है!
हेssss, सोल्जर्स!
और फिर-
सोल्जर्स की बंदूकें तन गईं-
उंगलियां ट्रिगरों पर पहुंच गईं-
ढीली पड़ गईं-
रास्ता साफ हो रहा था-
हां! आगे का सफर मुझे अकेले ही तय करना है!
और ब्लैक कैट नताशा के साथ उस रास्ते पर बढ़ रही थी-
बस, रिचा!
हमारा तुम्हारा साथ यहीं तक का था!

मैं जानती थी कि अंदर भी थोड़ी बहुत सुरक्षा मौजूद होगी! और उससे मैं निपट लूंगी!
मैं जानती हूं कि मेरी बीमारी ने मेरे शरीर को परमानेंट नुकसान पहुंचा दिया है!
मैं ज्यादा दिनों तक जिन्दा नहीं रहूंगी!
और अगर मौत आनी ही है...
...तो उसका वक्त और तरीका मैं खुद चुनूंगी!
अब यहां पर मुझे रोकने वाला कोई नहीं है!
अब इस मेन चिप कंट्रोल सेंटर को नष्ट करके!
ओ... मा...
...गॉड!
दुम भी हिली तो उड़ा दी जाओगी ब्लैक कैट!
कहो! कैसा लगा मेरा इंतजाम! रोबो दुश्मन से हमेशा एक कदम आगे रहता है!
पर अब तुम वह एक कदम भी नहीं चल पाओगी!
जहां खड़ी हो वहीं पर मारी जाओगी!
और कंट्रोल रूम का एक पेंच तक नहीं छू पाओगी!
मैं खड़ी भी रहूंगी...
...और तुम्हारे सारे पेंच ढीले भी कर दूंगी!
इसकी दुम लम्बी कैसे होती जा रही है?
टेलिस्कोपिक टेल है!
इलेक्ट्रोनिकली कंट्रोल्ड!
पर ये लंबी क्यों हो रही है?

ओऽऽऽ नोऽऽऽ
अब मैं समझा कि ये क्या करने जा रही है?
शूट हर! इसको तुरंत शूट कर दो!
पर तभी-
आऽऽऽह!
आदेश मिलते ही चारों तरफ से गोलियां बरस पड़ीं-
नहीं! जब तक मेरी टेल इस हॉल में मौजूद हर एक यंत्र को अपनी गिरफ्त में नहीं ले लेती, तब तक कोई वार मुझे छू भी नहीं सकता!
ब्लैक कैट लड़खड़ाई-
ब्लैक कैट की दुम चारों तरफ अपना शिकंजा कसती जा रही थी-
और उसके शरीर में कई छेद उभरने लगे-
और ब्लैक कैट का शिथिल शरीर शांत पड़ता चला गया-
हा हा हा! टल गया खतरा!
ओह नहीं! नहीं!
नहीं! ओफ़! मुझे जल्दी करनी होगी! इन सारे कंट्रोल्स के कोड्स को अपने शरीर के कंप्यूटर सिस्टम में ट्रांसफर करना होगा!
आऽऽऽऽऽ

ईssssss
रिचा!
रिचा का बलिदान व्यर्थ नहीं जाना चाहिए!
नहीं जाएगा!
बिल्कुल नहीं जाएगा!
रुक जाओ नताशा! अब कुछ नहीं हो सकता! रिचा ने अपनी जान एक उद्देश्य के लिए कुर्बान की है!
और हमें उस उद्देश्य को पूरा करना है!
रिचा का बलिदान व्यर्थ नहीं गया था-
इस धमाके ने रोबो के साम्राज्य की कमर को तोड़ दिया था-
ओफ्! सारे कंट्रोल कमांड्स ट्रांसफर नहीं हो पाए!
अब मैं या तो अंडरग्राउंड सिटिज में मौजूद अपने आदमियों को कंट्रोल कर सकता हूं...
... या फिर रोबो सिटी में मौजूद सोल्जर्स को!
यहां की कहानी तो नताशा और उसके साथी खत्म करके ही रहेंगे!
बेहतर है कि मैं अपना ध्यान अंडर ग्राउंड पर लगाऊं!
ग्रैंडमास्टर रोबो सिटी से निकल चुका था-

ब्लैक कैट का बलिदान अपना असर दिखा रहा था-
रुको, नक्षत्र!
यानी... रोबो का प्रभाव इनके दिमाग से मिट चुका है!
सबकी चिप्स निष्क्रिय हो चुकी है!
इनके लड़ने में भी अब वह तेजी नहीं है!
अह! मेरा दिमाग...
...हल्का-हल्का क्यों लग रहा है!
कमांडर!
इनके चेहरों की देखो!
इनके चेहरों पर छाई ब्लैक पॉवर्स की शैतानियत गायब हो रही है!
हां, सचमुच!
कमांडर, ग्रैंडमास्टर रोबो सिटी छोड़कर भाग गया है!
क्या? हम उसके आदेश पर अपनी जानें दांव पर लगा रहे हैं!
और वह...
ग्रैंडमास्टर रोबो हमारा कमांडर नहीं हो सकता!
आप जो दिशा दिखाएंगी हम उसी दिशा में जाएंगे!
अब आप हमारी कमांडर हैं मैडम नताशा!
गुड! अब सबसे पहले अंडरग्राउंड सिटीज में तैनात अपने आदमियों से संपर्क करो, और उनको तुरन्त सारे ऑपरेशंस रोकने का आदेश दो!
एक मोर्चा जीत लिया गया था-
और अब बारी दूसरे मोर्चे की थी-
आऽऽऽह!
तुम... तुम होश में आ गए ध्रुव!
अब मैं ब्लैक पॉवर्स को ऐसा वार करने का दूसरा मौका नहीं दूंगा!
पर मुझे मौत के मुंह से वापस लाया कौन?
वही जिसने तुमको मौत के हवाले किया था!
वो अपनी जान पर खेलकर देवायुध ग्रह से परम विनाशक की काट लेकर आया है!
फिर भी मैं आपलोगों से विनती करता हूं कि मुझे इस महापाप का दंड अवश्य दें!
तुम्हारा दंड यही है कि तुम उनको दंड दो...

... जिन्होंने तुम्हारा अपने बुरे स्वार्थों के लिए दुरुपयोग किया है!
और तुम्हारा दंड क्या होना चाहिए, ध्रुव?
जो अपने उस मित्र की तरफ देख भी नहीं रहा है, जो उसकी पुकार सुनकर आयामों के सीने को चीरकर उसकी मदद के लिए आ पहुंचा है!
जिंगालू!
तुम यहां पर कैसे आ गए?
सप्तम अध्याय
आयामक
यह तो मुझे खुद भी पता नहीं है दोस्त!
लेकिन इतना जरूर पता है कि तुम्हारे दुश्मनों से मेरा नाता तुमसे ज्यादा पुराना है! मैं भी मौत के मुंह से उसी तरह लौटकर आया हूं जैसे कि तुम आए हो!
मुझे पूरी बात बताओ दोस्त!
जिंगालू पूरा घटना-क्रम शुरू से सुनाता चला गया -
तुमको मौत का मुंह कैसे निगल गया?
और ध्रुव की भवें सिकुड़ती चली गईं -
तुम्हारे आने में कोई रहस्य जरूर है जिंगालू!
वर्ना तुम इस आयामक में इस तरह से प्रवेश नहीं कर सकते थे!
कोई शक्ति जरूर तुम्हारी मदद कर रही थी! तुमको खींच रही थी!
और वह शक्ति आयामक की ही हो सकती है! क्योंकि आयामक अभी भी तुम्हारे नियंत्रण में है!
तुम ठीक कह रहे हो!
क्रूरपाशा जिस आयामक की मदद से यतियों को गुलाम बनाना चाहता था, उसी ने उसकी मौत जिंगालू को यहां पर बुलाया है!
नहीं, जिंगालू! आयामक को चुराने का कारण सिर्फ यति शक्ति को गुलाम बनाना नहीं हो सकता! कारण कुछ और ही है, और बहुत गहरा है!
एकदम सही कहा तुमने! और अब जब इस मोड़ तक हम पहुंच ही गए हैं तो बेहतर होगा कि तुम सत्य जान ही लो, जिंगालू!
कौन हो तुम?
यह तो मैं खुद नहीं जानता! बस भटकों को मंजिल दिखाना मेरा काम है, यही जानता हूं!
इसीलिए मैंने स्वयं अपने आपको ही 'अजनबी' बुलाना शुरू कर दिया है!
"खैर मेरी सच्चाई छोड़ो, आयामक की सत्यता सुनो-"
"त्रेतायुग में रावण का वध करने के बाद जब राम ने लंका को विभीषण के हवाले किया तो वे जानते थे कि विभीषण कमजोर राजा है! वह शायद राक्षसी शक्तियों को संभाल नहीं पाएगा और राक्षस कभी न कभी पूरे ब्रह्मांड में फिर से उत्पात मचाएंगे-"
"इसीलिए उन्होंने लंका को एक दूसरे आयाम में भेज दिया जिसका नाम अलंद्या था-"

"उस आयामक का संपर्क पूरे ब्रह्मांड से काट दिया गया और अलंध्या के आयाम को खोलने की शक्ति रखने वाली एकमात्र चाबी को राम जी ने अपने पास संभाल कर रख लिया-"
"और वह चाबी थी आयामक यंत्र-"
"जो हर ब्रह्मांड का हर आयाम खोलने की शक्ति रखता था-"
"जब श्रीराम ने अपने नश्वर शरीर को त्यागा तब वे आयामक को हनुमान जी के हाथों में सौंप गए-"
और आयामक को आदेश दे गए कि वह हनुमान और उनके वंशजों का आदेश मानेगा-"
"तब से वानर विकास की श्रृंखला पार करके यति बन गए और हनुमान जी के वंशज जिंगालू के हाथों तक आयामक सुरक्षित रहा-"
"अलंध्या यानी पाप के आयाम को आज़ाद कराने का एकमात्र रास्ता था, आयामक को पाना-"
"और वह भी तब जब आयामक सक्रिय हो! क्योंकि आयामक को सिर्फ जिंगालू ही सक्रिय कर सकता था-"
"इसीलिए शीतनागों और यतियों के बीच युद्ध का नाटक रचा गया और जिंगालू को मारकर क्रूरपाशा ने सक्रिय आयामक हथिया लिया-"
आयामक का मुख्य उद्देश्य तो अलंध्या के आयाम को खोलना था! और किसी को शक ना हो, इसलिए ऐसा दिखावा किया गया कि आयामक हथियाने का कारण यतियों को अपने पक्ष में करना था!
ओह! इतना गहरा षड्यंत्र!
जिसने पूरे शांत हिमालय क्षेत्र में एक तूफान पैदा कर दिया!
एक मिनट जिंगालू!
यानी अगर जिंगालू चाहे तो वह आयामक को फिर से अलंध्या का आयाम बंद करने का आदेश दे सकता है!
हां! और अगर ऐसा हो गया तो अलंध्या नगरी के साथ-साथ बाहर से आई ब्लैक पॉवर्स भी लुप्त हो जाएंगी!
तब तो ये परम युद्ध दो अलग स्तरों पर लड़कर ही जीता जा सकता है!
मैं यहां पर रुककर ब्लैक पॉवर्स की सेना का विनाश करूंगा।
और ध्रुव जिंगालू के साथ जाकर आयामक को हासिल करके अलंध्या का विनाश करेगा!
वर्ना ब्लैक पॉवर्स कभी नष्ट नहीं होंगी!

उत्तम योजना है श्वेत शक्तियों! एक दिव्यास्त्र धारक ही ब्लैक पॉवर्स की सेना को रोक सकता है, और एक दिव्यास्त्र धारक ही आयामक की तलाश कर सकता है! क्योंकि यह तो स्पष्ट है कि आयामक जहां पर भी होगा, वहां तक पहुंच पाना साधारण प्राणी के बस की बात नहीं होगी!
देखा आपने महाकाल छिद्र? भला ये कौन हो सकता है, जिसको अलंध्या की इतनी विस्तार से जानकारी हो!
आप भी यह रहस्य नहीं सुलझा पा रहे हैं!
अगर ये युद्ध हम हारे तो इसका एक बड़ा कारण ये ही होगा!
इसका रहस्य भी सुलझ जाएगा, क्रूरपाश! पर ये युद्ध हम नहीं हारेंगे! आयामक यंत्र तक पहुंच पाना असंभव है!
अभी हमने ब्लैक पॉवर्स की हलकी टुकड़ी भेजी है! अब अपनी सबसे शक्तिशाली टुकड़ियों को भेजो!
और नागशक्ति एवं यतिशक्ति को नेस्तनाबूद कर दो!
हो सके तो नागराज को भी!
"क्योंकि ध्रुव तो अपने आप ही मौत के मुंह में जा रहा है-"
हम कहां जा रहे हैं, जिंगालू?
यह तो मुझे भी नहीं पता! बस मैं आयामक से संपर्क कर रहा हूं और उसकी शक्ति मुझको खींच रही है!

... और इसके अलावा...
बस ! मुझे आभास हो रहा है !
आयामक यहीं पर है !
पर कहां ?
यहां तो दूर-दूर तक कुछ भी नजर नहीं आ रहा है !
यानी आयामक अलंघ्या के केन्द्र में है !
मेरा यही ख्याल है !
अरे ! वह क्यों है ?
देवाशीष !
तुमने हमको धक्का मारा !
पर क्यों ?
पर आयामक यहीं पर है ! शायद वह किसी अदृश्य कवच में छुपा है !
नहीं जिंगालू ! अगर आयामक ने अलंघ्या का द्वार खोला है और अभी भी यहीं पर मौजूद है तो अलंघ्या उसके चारों तरफ बनी होगी !
इसलिए !
हे भगवान ! लावे का फव्वारा !
हां ! यहां पर रुकना मौत को दावत देना है ! हजारों ऐसे छेद हैं यहां पर ! और वे कब फटेंगे, कोई नहीं जानता !
और आयामक इनके बीच में स्थापित है !
सतह से दस किलोमीटर नीचे ! मैं उसे ढूंढ चुका हूं !
वहां तक पहुंचना असंभव है !
जाना तो है ही देवाशीष ! यह तय है !
बस ये तय करना बाकी है कि कैसे ?
ये फव्वारे रुक... रुककर फटते हैं ! हमको इनके फटने के बीच का समय नोट करना होगा !
और उस समय के दौरान ही इन छेदों में घुसकर सुरक्षित स्थान पर पहुंचने का रास्ता ढूंढना होगा !
और उस सुरक्षित स्थान का पता अपनी अंडरग्राउंड स्कैनिंग से तुमको लगाना है !

मैं ऐसे किसी सुरक्षित रास्ते को ढूंढ नहीं पा रहा हूं!
अब तो मानोगे कि अंदर जाना असंभव है!
यहां पर सिर्फ एक ही काम असंभव है! हमारा आगे जाने का विचार छोड़ना!
तो क्या करोगे? लावे की नहर पार करोगे?
जहां पर तुमको भस्म होने में एक पल भी नहीं लगेगा!
मुझे नहीं लगेगा! पर इसको तो लगेगा!
क्या है ये?
महाशीत अस्त्र! ये हमारे शरीरों को शून्य से सैकड़ों डिग्री के नीचे तापमान में ढक देगा!
"और मुझे उम्मीद है कि लावे की गर्मी हमारे शरीरों तक पहुंचने से पहले ही हम लावे की नहर पार कर लेंगे-"
"और अगर न कर पाए तो-"
"नहीं कर पाए तो इस वार्तालाप का कोई अर्थ ही नहीं रह जाएगा-
मौत को सीधी चुनौती दे डाली थी इन दो जांबाजों ने-
और मौत ने इस चुनौती को-
स्वीकार करने से इंकार कर दिया था-
आऽऽह!
हम पार हो गए!
यकीन नहीं होता!
यकीन तो हमको भी नहीं होता ...
... कि कोई हमारे हाथों से मरने के लिए मौत को पार करके आएगा!
ओह! ब्लैक पॉवर्स की एक विशाल सेना यहां पर भी आयामक की रक्षा के लिए तैनात है!
परम युद्ध अपना दायरा फैलाता जा रहा था-

और श्वेत शक्तियां इस दायरे को समेटने की कोशिश कर रही थीं-
ब्लैक पॉवर्स के सामने नाग-शक्ति ठहर नहीं सकती !
क्योंकि हमारी संख्या अनंत है !
तुम जितने ब्लैक वारियर्स मारोगे उससे दुगुने पैदा होते रहेंगे !
खच खच छ्च
ऐसा है तो मारने की गति को...
स्थिति पलट गई-
...पैदा होने की गति से ज्यादा तेज करना होगा !
सूर्यास्त्र !
नागराज के दिव्यास्त्र अपना विनाशकारी रूप दिखा रहे थे-
और रही सही कसर मानव और नागसेना की जुगलबंदी पूरी कर रही थी-
हमारे अस्त्र इनको मार नहीं सकते पर 'स्टन' जरूर कर सकते हैं !
आगे का काम तुम्हारा है फुंकारी !
युद्ध में नागराज के उतरते ही-
लो, काम खत्म !
अब अगला शिकार ढूंढें योद्धा मानव !

इधर नागराज के दिव्यास्त्र कहर बरसा रहे थे-
और दूसरे मोर्चे पर यति शक्ति और नागराज के मित्र ब्लैक पॉवर्स की टुकड़ियों को कड़ी टक्कर दे रहे थे-
अष्टम अध्याय
सुप्त पाशा
नागराज तो नागराज, अब इसके मित्र भी ब्लैक पॉवर्स की टुकड़ियों को कड़ी टक्कर दे रहे हैं!
अब मैं और नहीं देख सकता! अगर ध्रुव और जिंगालू आयामक तक पहुंच गए तो सब खत्म हो जाएगा!
अब मैं अपनी दस विकराल शक्तियों के साथ खुद जाऊंगा!
मसल डालूंगा सबको!
नहीं! अभी वह वक्त नहीं आया है!
सुप्त-पाशा को जगाओ!
जवाब तुरन्त ही मिल गया-
सम्राट भ्राता सुप्तपाशा की जय हो!
अब हम अजेय हैं!
जाओ आराम करो ब्लैक पॉवर्स! मेरे हाथ-पैर चलाने के लिए जगह खाली कर दो!
वैसे भी अब तुम लोगों की कोई आवश्यकता नहीं है!
और परम युद्ध के उस मोर्चे पर-
अचानक सब कुछ थम गया-
ये... ये क्या है!

आआऽऽ
ये सुप्तपाशा कौन है?
नागपाशा का तीसरा रूप?
शायद दूसरा! पर इसके बारे में मैं अलंध्या में रहकर भी ज्यादा जान नहीं पाया हूं! क्योंकि ये सोता रहता है!
बस इतना पता है कि इसके सोने के दौरान हर दिन इसमें पांच मानवों जितनी शक्ति और एक इंच का कद बढ़ जाता है!
और ये कम से कम दो सालों से सो रहा है!

विषांक को सुप्तपाशा की शक्तियां बताने की आवश्यकता नहीं थीं-
क्योंकि वे भी प्रत्यक्ष नजर आ रही थीं और उनका असर भी-
मानवों और नागों के अस्त्र उसके शरीर पर बारिश की बूंदों की तरह बरस रहे थे-
और उनका असर भी बारिश की बूंदों जितना ही हो रहा था-
इमारत जैसे विशाल पैर, प्राणियों और मशीनों को एक ही तरह से रौंद रहे थे-
इन बढ़ते कदमों को रोकना जरूरी हो गया था-
इसको मैं रोकता हूं नागराज! सामान्य नागशक्ति इस पर काम नहीं करेगी!
मुझे नागऊर्जा का रूप लेना होगा!
और जैसे दो विराट पर्वत आपस में टकरा उठे-
और सुप्तपाशा नाम का पर्वत वहीं पर थम गया-
जितनी देर में मैं अपना 'ऊर्जा हस्त' इसके अंदर घुसाकर इसके दिल की धड़कन रोक दूं...
मेरी विषैली ऊर्जा तरंगें इसको मार तो नहीं सकतीं क्योंकि ये अमर है!
पर इसको उतनी देर के लिए भ्रमित जरूर कर सकती हैं!
... उससे ये अमर शैतान मरेगा तो नहीं, पर जड़ जरूर हो...
... अरे! इसका दिल!
इसके पास तो दिल है ही नहीं...
विषांक!
इसके अमर शरीर पर विषशक्तियां काम नहीं करेंगी!
दिव्यास्त्रों का ही सहारा लेना पड़ेगा!
दांव उल्टा पड़ गया था-
और ब्लैक एनर्जी ने नागऊर्जा का दूसरा दांव चलने का मौका नहीं दिया-

उसको तो अपना बचाव करना ही था-
चाहे इसकी कीमत हजारों जानें ही क्यों न हों -
दिव्यास्त्र अमर सुप्तपाशा को मार तो नहीं सकते थे, पर उसको पंगु जरूर बना सकते थे-
और ये बात सुप्तपाशा भी जानता था-
अरे! जगह-जगह से हमारी सेना पर प्रलयंकारी वार हो रहे हैं!
इसे रोकना होगा! बहुघाती अस्त्र का प्रयोग करना होगा!
बहुघाती अस्त्र में एक साथ असंख्य लक्ष्यों पर घातक वार कर सकने की क्षमता थी -
और इन वारों से लक्ष्यों का बच पाना -
असंभव था-
बहुघाती अस्त्र बेअसर रहा! कैसे?
देखते ही देखते क्षितिज तक फैला रण का मैदान नागों और मानवों की लाशों से पट चुका था-
इतना तेज, इतना भीषण और इतना घातक वार!
कुछ ही पलों में सब खत्म हो गया!
यकीन नहीं होता!
मेरे... मेरे सहायक मेरे सामने मारे गए! और मेरे दिव्यास्त्र भी काम नहीं आए!
पर क्यों? क्यों? क्यों...
... उन्होंने मुझ पर भरोसा किया! मेरा साथ दिया! और... मैं... मैं...
... कुछ न कर सका!
तूने एक नहीं हजारों जानों को खत्म किया है!
इसीलिए अब मैं भी तुझे एक नहीं...
... हजार मौतें मारूंगा!

प्रगट हो प्रचंडा...
अरे! ये क्या? प्रचंडा प्रकट होना तो दूर, मेरे हाथ में थमे दिव्यास्त्र भी गायब हो रहे हैं!
सिर्फ दिव्यास्त्र ही नहीं, दिव्य वस्त्र भी अदृश्य हो रहा है!
पर क्यों?
क्योंकि उसे भी तेरी तरफ लपकती मौत का एहसास हो गया है!
दिव्यास्त्र नहीं हैं तो न सही! नागशक्तियां तो हैं न मेरे पास!
ध्वंसक सर्प!
अरे! ये सर्प बाहर क्यों नहीं आ रहे! मेरे मुंह से विषैली फुंकार भी नहीं निकल रही है!
कहां गईं मेरी नाग शक्तियां!
वो भी अपनी दुम समेटकर गायब हो गई हैं!
अब मैं तुझे हजार मौतें मारूंगा नागराज!
अब बता, किस पर दांव लगाएगी? नागराज के बचने पर या मरने पर?
बोल, कुमारी विसर्पी?
बचने पर लगाऊंगी!
और क्या लगाएगी दांव पर?
तेरी जान?
मेरी जान! हा हा हा हा!
अरे नागराज सुप्तपाशा के इस गुप्त वार से कभी बच नहीं सकता!
क्योंकि इस वार का नाम है सुप्त वार! सुप्तपाशा ने नागराज और बाकी सबके दिमागों के उस हिस्से पर कब्जा करना शुरू कर लिया है जो प्राणियों को सुलाता और स्वप्न दिखाता है!
नागराज इस वक्त सुप्तपाशा के स्वप्न में है, प्रिए!

और अपने स्वप्न में सुप्तपाशा का राज चलता है। वही नियम बनाता है और वही नियम तोड़ता है।
किसी की स्वप्न में मौत होने से वह वास्तविक संसार में मरता नहीं है, क्रूरपाशा!
और उसने नियम बनाया है कि नागराज की कोई शक्ति उसके स्वप्न क्षेत्र में काम नहीं करेगी! अब वह नागराज को पीट-पीटकर मारेगा!
आऽऽऽह!
स्वप्न दिमाग से जुड़े होते हैं सुंदरी! और सुप्तपाशा के इस स्वप्न में जो मर जाता है उसका दिमाग वास्तविक दुनिया में मर जाता है!
और ब्रेन डेड तो मैन डेड!
ओहो! ये तो मौत का विवरण सुनकर ही बेहोश हो गई!
" अगर ये सच में नागराज को मरता देखती, तो न जाने इसका क्या हाल होता-"
आऽऽऽह! अब तो जैसे शरीर में उंगली उठाने तक की शक्ति नहीं बची है!
क्या... यही है मेरा अंत? इस परमयुद्ध का अंत!
हां, नागराज!
ये परम युद्ध के अंत की शुरुआत है!
विसर्पी! तुम... तुम तो छाया विसर्पी हो!
मैं विसर्पी हूं!
पर... तुम यहां युद्ध क्षेत्र में कैसे आ गई?
तुम्हारे स्वप्न में आना मेरा हक है नागराज!
और ये हक मुझसे कोई छीन नहीं सकता!
स्वप्न! ये स्वप्न नहीं है विसर्पी!
ये स्वप्न ही हैं नागराज! सुप्तपाशा के स्वप्न वार! और इसके नियम सुप्तपाशा ने बनाए हैं...
पर तुम भी सुप्तपाशा की स्वप्न डोर से जुड़े हो!
इसी डोर से काट डालो सुप्तपाशा को!
मैं बड़ी मुश्किल से बेचैनी का बहाना बनाकर अपने मानस रूप को तुम्हारे पास भेज पा रही हूं! मेरा भरोसा करो!
विसर्पी! विसर्पी सांस ले रही है!

ये क्या था ? क्या ये दुश्मन की कोई चाल थी? क्या मैं सचमुच स्वप्न में हूं ? और ये स्वप्न मुझे सुप्तपाशा दिखा रहा है ?
अगर ये सच है तो इस युद्ध का निर्णय शारीरिक शक्ति नहीं, बल्कि मानस शक्ति करेगी !
आऽऽऽह !
भयंकर पीड़ा हो रही है ! लगता है मौत कुछ ही पलों की दूरी पर है...
... मानस शक्ति का प्रयोग करने के लिए एकाग्रता चाहिए !
और वह मुझे मिल नहीं रही है !
नागराज को आगे सोचने का मौका नहीं मिला-
क्योंकि वह वार प्राणलेवा था-
वैसे भी, अगर ये सचमुच में सुप्तपाशा का स्वप्न है तो मैं इसे कैसे कंट्रोल कर सकता हूं !
लो, प्रिये। तुम शर्त हार गईं !
ये... ये नहीं हो सकता ! नागराज सपने में भी नहीं मर सकता ...
...चाहे वह सपना सुप्तपाशा का ही क्यों न हो !
ध्यान से देख !
अरे ! ये... ये सुप्तपाशा को क्या हो रहा है ?
ये... ये लड़खड़ा क्यों रहा है ?
क्योंकि इसने नागराज के दिमाग से अपने दिमाग को जोड़कर महाभूल की है !
अगर मैं सही समझी हूं तो नागराज मरने की आड़ में ध्यान केन्द्रित कर रहा था !
और अब सुप्तपाशा का दिमाग नागराज के कंट्रोल में है ! अब वह नागराज का स्वप्न देख रहा है !

" और ये अंदाजा लगाना तो तुम्हारे लिए भी मुश्किल नहीं होना चाहिए कि सुप्तपाशा का नागराज के स्वप्न में क्या हाल हो रहा होगा-"
तू... तू जीवित है!
असंभव!
और... तेरा आकार भी बढ़ रहा है!
कैसे?
मैं समझ गया!
तू... तू मुझे स्वप्न दिखा रहा है!
मेरे वार को मुझ पर ही चला रहा है!
मुझे सुप्त वार को वापस लेना होगा!
आक्!
सुप्तपाशा का दिमाग मर चुका था-
और अब उसका शरीर जिन्दा तो था, पर कोमा जैसी अवस्था में पहुंच गया था-
सुप्तपाशा को क्या हुआ? क्या ये मर गया है?
नहीं छाया विसर्पी! ऐसों को भगवान भी अपने पास नहीं बुलाता!
ये अनंत काल की निद्रा ले रहा है!
सुप्तपाशा ऐसे मर नहीं सकता!
नहीं मर सकता!
वह मरा कहां है? वह मर नहीं सकता! वह तो सो रहा है!
नागायण
नवम अध्याय
चरम
निद्रा मृत्यु का ही दूसरा रूप है!
बस! अब और नहीं! अब मैं खुद उतरूंगा रण में! और चुटकियों में इस परम युद्ध को अंजाम तक पहुंचा दूंगा!

परन्तु ये परम युद्ध कई स्थानों पर एक-साथ लड़ा जा रहा है! और हर मोर्चे का परिणाम हमारी जीत या हार पर भी असर डाल सकता है!
अब सिर्फ नागराज का सामना करने या उसको मारने से ही हम सारी श्वेत-शक्तियों को खत्म नहीं कर सकते!
पहले ब्लैक पॉवर्स की सेनाओं को कुछ मोर्चे पर युद्ध जीतने दीजिए!
हमारे कई महान योद्धा अलग-अलग मोर्चे पर मौजूद हैं! परन्तु श्वेत शक्तियां हर मोर्चे पर उनसे मजबूत सिद्ध हो रही हैं!
अब हर मोर्चे पर क्रूरपाशा लड़ेगा।
पर कैसे? खैर छोड़िए।
अगर आपके पीछे से अलंध्या में कोई समस्या खड़ी हो गई...
... या मुसीबत आ गई तो?
हम्म्! आओ मेरे साथ।
ये आप मुझे कहां ले जा रहे हैं?
मुझसे कोई गलती हो गई है क्या?
यहां तो बहुत अंधेरा है!
ये गर्भ गृह है गुरुदेव!
और ये हैं यहां के प्रभु! ब्लैक पॉवर्स के रक्षक महाकाल छिद्र!
प्र... प्रणाम करता हूं छि... छिद्र!
महाकाल छिद्र!
हकलाओ मत गुरुदेव!
अब इनको देखने की आदत डाल लो! क्योंकि अब तुमको किसी भी विपत्ति की स्थिति में इनसे ही आदेश लेना है!
क्योंकि तुम स्वयं रण में जा रहे हो! हैं न?
आप तो सब जानते ही हैं, फिर भी मैं आपसे आदेश लेने आया हूं!
जाओ! मैं श्वेत शक्तियों की हार को सामने देख रहा हूं!
आशीर्वाद लो हमारा क्रूरपाशा!
महाशक्तियां जाग्रत हों!
परम युद्ध का निर्णय होना अब तय था-

पर किसके पक्ष में, यह निर्णय होना अभी बाकी था-
यकीन नहीं होता!
और वर्तमान परिस्थितियों को देखकर यह साफ लग रहा था कि यह निर्णय कम से कम देवों के पक्ष में तो नहीं होगा-
हम देवों के लीडर धनंजय पर भारी पड़ रहे हैं!
क्योंकि हर जगह पर रोबो की ब्लैक आर्मी, शक्तिहीन देवों पर भारी पड़ रही थी-
खेल मत कर! अभी कई देव बाकी हैं! कुचल दे इसका सिर!
बड़े शौक से!
सुनना!
'फच्चाक' की आवाज होगी!
फच्चा...
ये आवाज़ तो अलग थी!
पर क्यों?
क्योंकि मेरी शक्तियां वापस आ रही हैं!
कोई चमत्कार हुआ है!
ये सचमुच चमत्कार ही था! ब्लैक व्हर्लपूल का घेरा तोड़कर पूरी स्वर्ण-नगरी अब सतह के ऊपर मंडरा रही थी-
ये तो स्वर्ण नगरी के उड़ते भवन हैं!
असंभव!
यकीन कर लीजिए पापा!
जयं!
जयं! तो... ये सब तूने किया है! पर कैसे?
स्वर्ण नगरी को बचाने के लिए करना पड़ा पापा! पर कैसे, ये बाद में पूछिएगा!
अभी तो हमको स्वर्ण नगरी की पूरी शक्ति पृथ्वी पर से ब्लैक पॉवर्स को मिटाने के लिए लगानी है!
ठीक है! अब इन टॉवर प्लेन्स को पूरी पृथ्वी पर फैला देंगे!
और ब्लैक पॉवर्स को चुन-चुनकर नष्ट करेंगे!
अभी उसकी जरूरत नहीं है, देव नायक!...
...क्योंकि ब्लैक पॉवर का केन्द्र खुद चलकर तुम्हारे पास आ गया है!
हे महादेव!
ये कौन है पापा?
काल गरुड़! एक महा-भयानक काली शक्ति!
और इस वक्त यह अमर क्रूरपाशा का एक रूप है!

गरुड़पाशा के एक-एक पर में जैसे सैकड़ों न्यूक्लियर मिसाइलों की शक्ति समाई थी-
एक-एक करके उड़ते टॉवर धूल बनते जा रहे थे-
देवों द्वारा रचा गया शक्ति ऊर्जा का कवच उस प्रहार को संभालने में असमर्थ था-
ऐसे तो शक्ति केन्द्र भी नहीं बचेगा, और हम देवों की शक्ति हमेशा के लिए मिट जाएगी!
इसे रोकना होगा!
धनंजय के शरीर पर अद्भुत देव यंत्र प्रकट होने लगे-
और विनाशक काले परों का बढ़ता वेग थम गया-
आऽऽऽऽ! बड़ी देर से मैं तेरी प्रतीक्षा में था, देवनायक धनंजय! आज तुझे मारकर मैं उस रोड़े को हटा दूंगा जो पृथ्वी पर काली शक्ति का राज्य फैलने देने में सबसे बड़ी बाधा है!
तू एक बार पहले भी त्रेतायुग में मेरे हाथों से मात खा चुका है काल गरुड़!
पर इस बार मैं तेरा प्राणांत कर दूंगा!
इस बार मैं अमर क्रूरपाशा का एक रूप हूं देव! और अमर मरा नहीं करते!
आऽऽऽह!
आकाश में दो महा-चक्रवात आपस में टकरा रहे थे-
और इस महायुद्ध को जीतने से क्रूरपाशा से भी ज्यादा बड़ा फायदा...

... ग्रैंडमास्टर रोबो को ही होना था -
आहा! आराम पड़ गया!
देवों और रोबो ब्लैक आर्मी के बीच होने वाली झड़पों के कारण मेरे शरीर के कंप्यूटर सिस्टम पर बहुत दबाव पड़ रहा था!
क्योंकि मुझे अपने आदमियों को अतिरिक्त ब्लैक शक्ति देनी पड़ रही थी!
लेकिन गरुड़पाशा ने आकर मेरी चिन्ता दूर कर दी! अब ये देवों को मेरे रास्ते से हटाएगा, और इसको हटाएगा नागराज।
फिर पूरी पृथ्वी पर ग्रैंडमास्टर रोबो का राज होगा! अमर ग्रैंडमास्टर रोबो का! क्योंकि उस वक्त मेरे शरीर में अमर भीरूपाशा भी घुलकर मिल चुका होगा!
हमारी!
चारों तरफ या तो मेरी जय-जयकार होगी या हाहाकार!
हमारी?
नगीना! तुम मुझसे अलग थोड़े ही हो!
इसीलिए मेरे मुंह से 'मेरी' शब्द निकल गया!
ये शब्द मुंह से नहीं, दिमाग से निकाल दो, रोबो!
वर्ना तुम्हारे शरीर को ठप्प करने वाला स्थायी कंप्यूटर कोड मुझे याद है!
"उसका प्रयोग करके कोई भी तुमको सम्राट से नौकर बना सकता है-"
सॉरी कमांडर! हम रोबो सिटी के बाहर मौजूद अपने लोगों से संपर्क नहीं कर पा रहे हैं!
कम्युनिकेशंस की गड़बड़ी है?
नहीं मैडम! उन सभी से हमारा संपर्क टूट गया है!
पर वे तो अपना काम लगातार कर रहे हैं! जैसे कि उनको अभी भी आदेश मिल रहे हों!
इसका एक ही कारण हो सकता है कमांडर!
रोबो खुद इनको आदेश दे रहा है! उसने कंट्रोल अपने शरीर के कंप्यूटर सिस्टम में ट्रांसफर कर लिए हैं!
ओह! और रोबो हमारी पहुंच से बाहर है!
इतनी मेहनत के बाद भी हमारे हाथ में कुछ नहीं आया!
मैडम! ये देखिए!
कौन हो तुम?
जो कुछ भी है! वह तुम्हारे हाथ में ही है, नताशा!
कुछ भी समझ लो! फिलहाल मैं कंप्यूटर जेनरेटेड इमेज हूं!
बस ये ध्यान रखो कि रोबो का शरीर भी एक कंप्यूटर है! और हर कंप्यूटर 'क्रैश' हो सकता है!
बस, उसे 'क्रैश' करवाने का तरीका आना चाहिए!

क्रैश करवाने के लिए कंप्यूटर के डिफेंसेज को पार करके उसके अंदर तक जाना पड़ता है!
और उसके सिक्योरिटी लॉक को तोड़ना पड़ता है! वायरस कोड से!
बिल्कुल सही!
कोड ही चाहिए तुमको!
तुमको कोड पता है?
अगर होता तो मैं तुम्हारा काम खुद कर देता!
पर वह मेरे पास है नहीं! उसे ढूंढो और रोबो को कंट्रोल में कर लो!
आसान है न? कर्रर्र...कर...
अरे! अरे! सुनो तो!
संपर्क टूट गया है मैडम!
ये कौन था?
पता नहीं! पहले कभी देखा नहीं!
पर ये जो कह रहा था वह ठीक कह रहा था!
रोबो के शरीर के हर मशीनी पार्ट को एक खास कंप्यूटर सिस्टम कंट्रोल करता है! और उसको एक परमानेंट कोड दिया गया है ताकि उसमें छेड़छाड़ न की जा सके!
पर आश्चर्य की बात यह है कि ये अजनबी इस बारे में कैसे जानता है?
ये समय इस बारे में सोचने का नहीं है नताशा! अगर वह अजनबी सही कह रहा था तो ये सोचो कि वह कोड हमको कैसे मिल सकता है!
मिल सकता है! वह कोड हमको रोबो खुद बताएगा!
आर यू जोकिंग?
तुमको हंसी आई?
नहीं!
तब ये जोक नहीं था!
कैप्टेन! तुम रोबो से तुरन्त कांटैक्ट करो और उसको बातों में तब तक फंसाए रखो जब तक मैं इशारा न करूं!
पर मैं बात करूंगा क्या?
ये भी मैं तुमको बताती हूं!
और फिर-
ग्रैंडमास्टर! आप कहां हैं? एक खुशखबरी सुनानी है!
कैसी खुशखबरी?
हमने दो गद्दारों को मार डाला है और चार अन्य को पकड़ लिया है!
शाबाश!
पर आप कहां पर हैं ग्रैंडमास्टर?
हम आपको बहुत देर से ढूंढ रहे हैं!
कांटैक्ट स्थापित हो गया है!
बात करते रहो! मैं इसके सिस्टम को 'हैक' कर रही हूं!

नताशा को सलाह देने वाला अजनबी अपनी चालें तो बहुत सोच-समझ कर चल रहा था -
लेकिन क्रूरपाशा के दस रूप उसकी हर चाल को चुनौती देते नजर आ रहे थे -
हा हा हा ! ब्लैक पॉवर्स को मारकर बहुत खुश मत हो श्वेत शक्तियों!
क्योंकि जब तक अलंघ्या है तब तक ब्लैक पॉवर्स पैदा होती रहेंगी ! अनंत काल तक और असंख्य तादाद में !
तुम इनको मारते- मारते थक जाओगे पर ये मरते- मरते भी कभी नहीं थकेंगी!
दशम अध्याय
निर्णय
ये तो बंधपाशा है ! क्रूरपाशा का रूप ! इसके खुद युद्ध में उतर आने से इनका पलड़ा भारी हो जाएगा !
वैसे ये सच कह रहा है ! जैसे एक बॉयोरोबॉट के लड़ने की भी कोई न कोई निश्चित सीमा तो होती है !
पर इनकी कोई सीमा नहीं है !
इनकी तादाद तो अभी से बेहिसाब नजर आ रही है !
इन सबको मारने के लिए तो मेरी एक विषफुंकार ही बहुत है, द्रोण !
भ्रमित मत हो, योद्धाओं ! बस लड़ते रहो ! इनको संभालने के लिए मैं खुद भी असंख्य तिलिस्मी शक्तियाँ पैदा कर सकती हूं !

हर योद्धा अपनी तरफ से भरसक प्रयत्न कर रहा था-
लेकिन ब्लैक पॉवर्स की तादाद बढ़ती ही जा रही थी-
ये तो बाढ़ में भरी नदी की तरह बढ़ते ही जा रहे हैं!
हम इस बाढ़ में डूब जाएंगे।
इस बाढ़ को रोकने के लिए मेरे पास एक तिलिस्मी बांध है दोस्तों।
और अगले ही पल -
अरे। ब्लैक पॉवर्स आपस में ही एक-दूसरे को क्यों काट रही हैं।
तुम सब पागल हो गए हो क्या?
पागल होने की हालत तो तुम्हारी है बंधपाशा!
ये तो तिलिस्मी जाल में फंसे हैं। और इसमें फंसकर इनको यति ब्लैक पॉवर्स की तरह दिख रहे हैं!
और ब्लैक पॉवर्स यतियों की तरह!
अब ये आपस में ही लड़ मरेंगे!
अब हम पांचों के सामने तुम अकेले हो।
मैं अकेला कहां हूं?
तुम सब भी तो मेरे साथी हो।
ये बंध कुछ ही देर में तुम्हारी इच्छाशक्ति को समाप्त करके तुमको मेरा गुलाम बना देगा।
परम युद्ध में स्थितियां तेजी से बदल रही थीं-
यतियों को अपनी पूरी शक्ति की जरूरत आन पड़ी थी-
क्योंकि तिलिस्म टूट चुका था-
और यही स्थिति ध्रुव और जिंगालू की भी थी-
ये सेना तो बहुत बड़ी है।
मेरी एक्सरे स्कैनिंग विजन भी इनका छोर नहीं देख पा रही है!

और न ही इनके शस्त्रों का!
ओफ्! इतने सारे शस्त्रों से तो बच पाना असंभव है!
असंभव में ही संभव छुपा होता है जिंगालू!
इनको मुझ पर छोड़ो! तुम आयामक यंत्र का ध्यान करो!
आश्चर्य है!
आयामक के संकेत हर दिशा से आ रहे हैं!
शायद आयामक के स्थान पर ही ये ब्लैक आर्मी खड़ी है!
पर तुम तो आयामक को थोड़ी दूर से भी नियंत्रित कर सकते हो! कोशिश करके देखो!
वह कोशिश मैं कर चुका हूं ध्रुव! पर विफल रहा! या तो आयामक मेरी आज्ञा को मान नहीं रहा है या फिर मुझे उसके और पास जाना पड़ेगा!
तो फिर हम आगे बढ़ेंगे! इस ब्लैक आर्मी की सेना को चीरकर!
तुम मेरे पीछे-पीछे आना!
इस सेना के बीच में घुसकर शस्त्रों को चला पाना आसान नहीं होगा ध्रुव!
मैं शस्त्र को चलाऊंगा भी नहीं देवाशीष!
बल्कि शस्त्र मुझे चलाएगा!
अद्भुत!
चलायमान ने ब्लैक पॉवर्स की सेना को पिघलते मक्खन की तरह चीरना शुरू कर दिया-
ये चलायमान अस्त्र युद्ध के तीनों कार्यों को एकसाथ कर सकता है!
हमला, बचाव और सुरक्षा!

लेकिन ब्लैक पॉवर्स तो हर जगह पर छिपी हुई थीं-
हाऽऽऽ
इन शस्त्रों में भरी ब्लैक ऊर्जा के स्पर्श अस्त्र से तेरा नाश हो जाएगा, यति!
फिर आयामक को आदेश देने वाला कोई नहीं बचेगा!
नाश होना तो तय था-
चाहे जिंगालू का-
या ब्लैक पॉवर्स का-
ये... ये मुझे छूते ही नष्ट हो गए!
पर कैसे?
जैसे भी हुए हों!
फिलहाल तो ये मुझे रास्ता दिखा गए हैं!
ब्लैक आर्मी को नष्ट करने का!
महात्मा का... कालछिद्र जी!
अलंध्या के गर्भ में मौजूद हमारी अनश्वर आर्मी पिट रही है!
यानी इतना घातक होता है हलाहल! क्या ये अमृत को भी नष्ट कर सकता है!
कर सकता है! तुम शायद क्रूरपाश की चिन्ता कर रहे हो!
हम देख रहे हैं!
ये इस यति के शरीर में मौजूद हलाहल का असर है! उस महाविष का स्पर्श काली ऊर्जा को छूते ही नष्ट कर सकता है!
और मैं... महात्मा नहीं, महाकाल छिद्र हूं!
पर चिन्ता मत करो! इस आयाम में इस वक्त एक ही हलाहल विषधारी है और वह अलंध्या के गर्भ से जीवित सतह तक नहीं आ पाएगा!
क्रूरपाश सुरक्षित है!
क्रूरपाश एकदम सुरक्षित था-
क्योंकि जिंगालू सुरक्षित नहीं था-
हम ब्लैक आर्मी के बीचों-बीच पहुंच चुके हैं जिंगालू!
आयाम से संपर्क साधकर उसकी स्थिति पता लगाओ! जल्दी!
मैं अभी आऽऽऽह!
जिंगालू! ये क्या हो रहा है तुमको?
प... पता नहीं!
मेरा शरीर गल रहा है!

इसका शरीर रानी यति की साधना के प्रभाव से जीवित हुआ है, ध्रुव !
परन्तु इसके शरीर के जो कण हलाहल कुंड में घुल गए थे वे जुड़े भी हलाहल मिश्रण से ही थे ! अब जैसे-जैसे जिंगालू ब्लैक पॉवर्स को नष्ट करने के लिए हलाहल का प्रयोग कर रहा है...
... वैसे-वैसे इसके कण अलग होते जा रहे हैं ! अब ज्यादा समय नहीं है !
आयामक को आदेश दो कि वह अलंध्या के आयाम को फिर से अपने अंदर समेट ले !
पर... आयामक है कहां पर ?
यहीं पर ! तुम आयामक के अंदर खड़े हुए हो, जिंगालू !
तुम्हारा आदेश पाते ही आयामक सिमटना शुरू हो जाएगा !
और अलंध्या के साथ-साथ ब्लैक पॉवर्स भी खत्म हो जाएंगी !
और ये काम तुमको खुद खत्म होने से पहले करना है !
जिंगालू !
मैं... मैं कोशिश कर रहा हूं !
पर आयामक से... संपर्क नहीं हो पा... रहा है !
पर मैं मरूंगा भी तो... इन ब्लैक पॉवर्स को... साथ लेकर... मरूंगा !
आऽऽऽह !
धड़ाम
जिंगालू !
जिंगालू के शरीर के सभी कण एक धमाके के साथ अलग हुए-
और चारों तरफ बिखरे हलाहल के कणों ने ब्लैक पॉवर्स का विनाश कर दिया -
ओफ् ! ये क्या हुआ ?
अब आयामक को आदेश देने वाला कोई नहीं है ! ध्रुव भी हलाहल के प्रभाव से अचेत हो गया है !
और ब्लैक पॉवर्स की सेना एक बार फिर से पैदा होकर इधर बढ़ी चली आ रही है !
अब कौन रोकेगा इस विनाश को ?
ऐ ! मैंने तुम्हारी स्कैनिंग की है !
पर तुम तो...
मुझे पहचानकर...
... अच्छा नहीं किया !
श्वेत शक्तियां एक-एक करके-

शून्य में विलिन हो रही थीं-
परन्तु अंधकार को नष्ट करने के लिए प्रकाश की एक किरण भी काफी होती है-
और वह किरण शायद यतिलोक से ही आनी थी-
मैंने कहा न कि नागशक्तियांsss
...मुझे खत्म नहीं कर सकतीं!
पर मैं...
...किसी भी नागशक्ति को खत्म कर सकता हूं! नागराज के पास अगर दिव्यवस्त्र नहीं होता तो उसकी मौत भी मेरे ही हाथों से होनी थी!
पर चल! नागराज न सही, पर तू भी तो उसी का खून है!
तेरा खून बहाकर मैं नागराज का ही खून बहाऊंगा!
पलभर के लिए दोनों ने एक-दूसरे को नजरों से तौला-
न जाने कौन, किस पर पहला वार करने वाला था-
पर वार कहीं और से ही हुआ-
ये क्या?
ओफ्! चारों तरफ से चट्टानें गिर रही हैं! धरती में दरारें पड़ रही हैं!
यानी...
सही समझे कालीवान!
यतिलोक टूट रहा है! बिखर रहा है!
ओह! यानी खंडहर ग्रहों का हाल भी खंडहर भवनों जैसा ही होता है!
प्रकृति के इस भयानक रूप से लड़ने की क्षमता मुझमें नहीं है!
वैसे भी, अब तुम सबको मारने का काम विध्वंसक प्रकृति स्वयं ही कर रही है!
यति युवराज को बचाता हुआ नागीश भी-
उस भीमकाय चट्टान से अपने आपको बचा नहीं पाया-
मेरा काम खत्म हुआ! अब मुझे वापस अपने आयाम...

...अलंध्या में...
...पहुंच जाना चाहिए!
ताकि तुम जल्दी से जल्दी क्रूरपाशा को अपनी सफलता की सूचना दे सको!
नागेश!
और... यतिकुमार भी! तुम यहां कैसे आ गए? मैंने अपनी आंखों से तुमको मरते देखा था!
मुझसे आंखें मिलाओगे तो वही देखोगे जो मैं दिखाना चाहूंगा!
सम्मोहन! यानी यति आयामक का टूटना एक भ्रम था!
सही जवाब! और वह इसलिए ताकि तुम यति आयामक से वापस जाने की कोशिश करो, और मुझे उस आयाम द्वार की स्थिति का पता दो जिससे तुम अंदर आए थे!
और एक बार पता लग जाने के बाद उस आयामक द्वार को फाड़कर यहां तक आना मेरे लिए ज्यादा मुश्किल काम नहीं था!
तेरी मौत शायद अलंध्या में लिखी थी!
ये ब्लैक सॉ... सर्पों को ढूंढ-ढूंढकर मारती है! सामान्य सर्प हों या इच्छाधारी!
ओऽऽऽह!
सचमुच! ये तो नागशक्तियों को ढूंढ-ढूंढकर मार रही है!
और इनके खत्म होने के बाद मेरी बारी आएगी!
और-
ओफ! आखिरी सर्प!
अब एक ही रास्ता बचा है!
मूर्ख बच्चे! मैंने कहा न कि सर्प शक्तियां मुझ पर असर नहीं करतीं!
तुमने तो ये भी कहा था कि ब्लैक सॉ सर्प शक्तियों का पीछा नहीं छोड़ेगी!
कहा था!
ब्लैक सॉ सर्प शक्तियों को तेजी से काट रही थी-
और सही कहा था!
खच्च
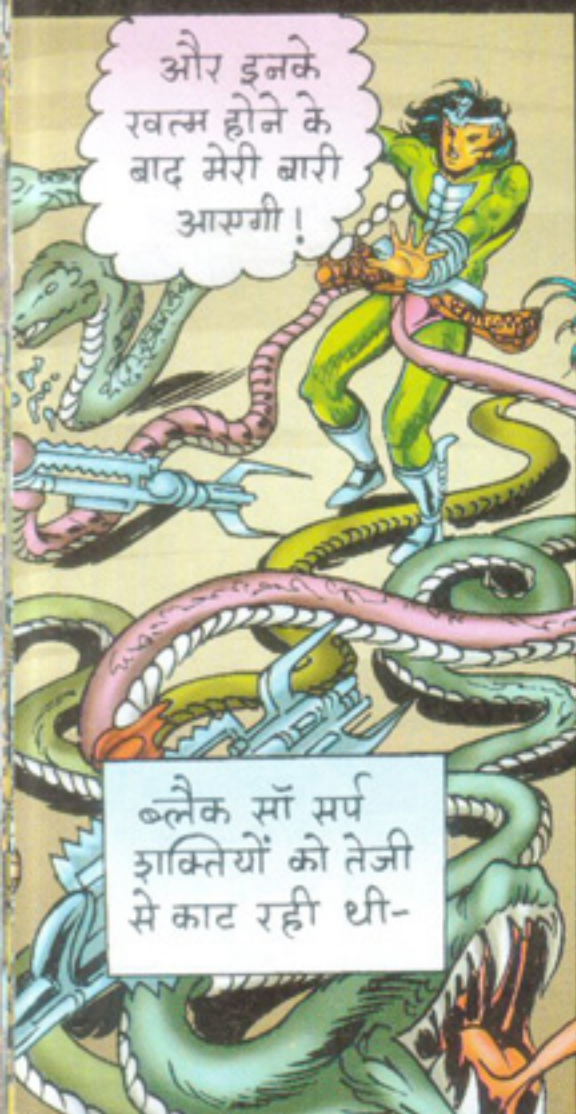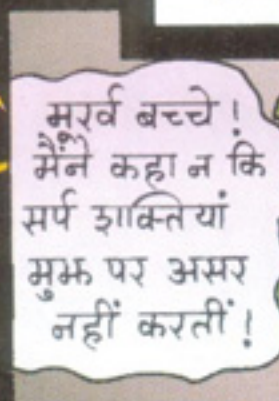
माफ करना भाई कालीवान! तुम्हारा क्रूरपाशा तक समाचार पहुंचाने का काम तो अधूरा ही छूट गया।
पर चिन्ता मत करना! इंतजार करना!
" पिताश्री उसे जल्दी ही तुम्हारे पास नर्क में भेज देंगे-"
नागराज के दिव्य अस्त्र बहुत तेजी से ब्लैक आर्मी का संहार कर रहे थे-
अब ये शिकंजा ढीला करने की बारी थी-
और नागशक्ति के साथ-साथ मानव सेना भी भारी अस्त्रों की मदद से इस संहार में अपना योगदान दे रही थी-
अलंध्या नगर पर शिकंजा कसता जा रहा था-
बस! नागराज बस!
बच्चों पर अपनी शक्तियां आजमाकर इतना खुश क्यों हो रहा है!
आ! हम पर आजमा अपनी शक्तियां!
एक पल में तेरे योद्धा होने का भ्रम दूर हो जाएगा!
अब ये युद्ध आर-पार का होगा!
अब भीरूपाशा से सलाह लेने का वक्त आ गया है, विषांक! उसको तुरन्त यहां पर बुलाने का प्रबंध करो!
सिर्फ वही इसकी मृत्यु का मार्ग बता सकता है!
मैं अभी किसी तीव्र उड़न सर्प को यति सेना के पास भेजता हूं, नागराज!
ओफ़! क्रूरपाशा खुद युद्ध में कूद पड़ा है!
अच्छा ही है! अब इस युद्ध का फैसला और जल्दी होगा!
सिर्फ क्रूरपाशा ही नहीं, प्रस्तरपाशा और कालहास्यपाशा भी उसके साथ हैं! फैसला इतनी जल्दी नहीं होगा!
क्योंकि ये सभी अमर हैं!

विषांक के आदेश पर नागफनी सर्प ने भीरूपाशा तक पहुंचने में ज्यादा समय तो नहीं लगाया था-
परन्तु इस बीच में स्थितियां तेजी से बदल रही थीं-
बस, भीरूपाशा! थोड़ी ही देर में तेरा नामोनिशान मिट जाएगा! तेरे अंदर के अवयवों को तो मेरा तंत्र रसायन अपने अंदर घोलकर रोबो के पास ट्रांसफर कर ही चुका है!...
... अब बारी तेरे बाहरी शरीर की है! फिर तू रोबो की रगों में बहते खून और कंप्यूटर ऊर्जा के साथ जिएगा!
अरे! अरे! गगनगामी भीरूपाशा को कहां ले जा रहा है! कुछ गड़बड़ है! मुझे जल्दी करनी होगी!
भीरूपाशा का शरीर गलता जा रहा था-
और क्रूरपाशा और उसके रूपों को खत्म करने के रास्ते भी खत्म होते जा रहे थे-
तूने मेरे सामने आकर चुनौती देने का जो साहस किया है उसको हम 'आत्महत्या' कहते हैं!
तू मर तो नहीं सकता, पर अब तू जिन्दगी का वह रूप देखेगा जो मौत से कहीं ज्यादा भयानक होता है!
मुझे डराओ मत विषांक! क्योंकि मैं जितना डरता हूं...
... मुझे उतनी ही ज्यादा हंसी आती है!
और मुझे जितनी हंसी आती है...
... उतने ही ज्यादा दुश्मन मेरे ठहाकों की प्रतिध्वनि से टकराकर चिथड़ों में बदल जाते हैं!
उनके खून की पिचकारियां बन जाती हैं! लोथड़े हवा में उड़ने लगते हैं!
ये देखकर मुझे और हंसी आती है!
इससे और ज्यादा दुश्मन मरते हैं! और ये सिलसिला दुश्मनों का अंत होने तक चलता रहता है!

आऽऽऽह! इसकी क्रूर हंसी के कंपनों में तो ग्रहों तक को हिला देने की शक्ति है! मेरा कोई भी वार इस तक पहुंच नहीं सकता! पहुंच भी जाए तो इसको मार नहीं सकता!
पर ये मुझे मार सकता है! और अब ये अपनी हास्य ऊर्जा को मुझ पर केन्द्रित कर रहा है!...
...और मेरी नागशक्ति भी मुझे ज्यादा देर तक बचा नहीं पाएगी!
आऽऽऽह!
अब पलटवार करना ही पड़ेगा! और उसके लिए मुझे अपनी सारी बची-खुची नागशक्ति को एकत्रित करना होगा!
विषांक की अद्भुत मानसिक ऊर्जा चारों तरफ फैलने लगी-
और अलंध्या की जमीन ऊपर उठकर-
पहाड़ों का रूप धारण करने लगी-
अब हास्य ऊर्जा उन पहाड़ों से टकराकर प्रतिध्वनि पैदा कर रही थी-
और हास्यपाश इस वार को झेलने में असमर्थ था-
कुछ ऐसा ही हाल प्रस्तरपाश का था-
देखते ही देखते उसका बचा खुचा शरीर पहाड़ों के टूट रहे ढेर के नीचे दब चुका था-
और चारों तरफ फैल रही हास्य ऊर्जा पलटकर हास्यपाश पर वार कर रही थी-
नागराज के सूर्य की शक्ति वाले दिव्यअस्त्र उसके शरीर को रेत के कणों की तरह बिखेर रहे थे-

अब तू अकेला है क्रूरपाशा! जैसे तेरे दूसरे रूप मरे तो नहीं, पर चूर-चूर हो गए वैसा ही तेरा अंत भी होगा!
मैं! और अकेला?
तू इस बात का अनंतकाल तक पश्चाताप करता रहेगा कि तू आखिर अमर क्यों हुआ!
मैं अकेला कहां हूं नागराज! सृष्टि की सभी काली शक्तियां मेरे साथ हैं!
अब तुम तो पश्चाताप करने के लिए भी नहीं बचोगे नागराज!
आऽऽऽह!
तेरे अगर असंख्य प्रतिरूप हैं...
... तो मेरे दिव्य वस्त्र में भी असंख्य विनाशक शस्त्र हैं, क्रूरपाशा!
जैसे कि ये घूर्णास्त्र!
आऽऽऽह! ये तो महाविनाशक अस्त्र हैं! इन्हें वापस ले ले, नागराज!
मेरी जान बख्श दे! बख्श दे!
नागराज हारे हुओं की याचना कभी नहीं ठुकराता! ले, मैंने वापस ले लिया घूर्णास्त्र!

घूर्णास्त्र के दिव्य वस्त्र में वापस जाते ही-
दिव्य वस्त्र चिथड़ों में बदलने लगा-
ये... ये क्या? क्या ऐसा घूर्णास्त्र की बची शक्ति के कारण हो रहा है!
नहीं नागराज! ऐसा दरिद्रपाशा के कारण हो रहा है! जो सूक्ष्म रूप में तुम्हारे अस्त्र के साथ ही तुम्हारे दिव्य वस्त्र में घुस गया है!
और जहां दरिद्रपाशा रहे वह जगह तो साबुत रह ही नहीं सकती!
तेरे दिव्यास्त्रों का भंडार नष्ट हो गया है नागराज!
ज्यादा खुश मत हो क्रूरपाशा!
दिव्य वस्त्र जल्दी ही दरिद्रपाशा को काबू में कर लेगा!
जरूर कर लेगा! लेकिन तब तक तू मेरे काबू में आ चुका होगा!
आऽऽऽह!
मैं अभी भी सिर्फ नागशक्तियों की मदद से ही इसको मार सकता हूं! पर उसके लिए हमको भीरूपाशा की मदद चाहिए! आखिर भीरूपाशा है कहां?
भीरूपाशा आ गया नागराज!
पर... पर... ये इसको क्या हो गया है?
कुछ गड़बड़ है! भीरूपाशा होश में आओ! भीरूपाशा तुम जानते हो कि क्रूरपाशा को कैसे खत्म किया जा सकता है?
जान... ता... हूं, पर... मैं...
भीरूपाशा! ये तो... गायब हो रहा है!
हे भगवान! ये आखिरी रास्ता था हमारे पास!
अब न तो क्रूरपाशा मरेगा और ना हम जीतेंगे!
जीत अभी भी संभव थी-
बस जरूरत थी एक मास्टर स्ट्रोक की-
ओफ्! इधर सेना नहीं आ रही है! ये तो नेत्रापाशा है!... और ध्रुव अब अकेला भी है!

आहा! आज युद्ध का असली मजा आएगा! आज तो महारथियों के महारथी ध्रुव को मारने का मौका मिला है!
क्रूरपाशा की बड़े दिनों से तुझसे दो-दो हाथ करने की इच्छा थी! चल वो न सही, उसका दूसरा रूप नेत्रा ही सही!
सुना है तेरे पास दिव्यास्त्र है! छोड़ उन्हें मुझ पर! मारकर दिखा मुझे!
मैं तुझे मारने से पहले थोड़ी देर चूहे-बिल्ली वाला खेल खेलना चाहता हूं!
ये युद्ध तो मैं भी देखना चाहता हूं! एक तरफ है अमर क्रूरपाशा का अमर रूप महायोद्धा नेत्रा! और दूसरी तरफ ऐसे महारथियों को धूल चटाने वाला ध्रुव!
बस ध्रुव यह नहीं जानता था कि उसके कई परमविनाशक अस्त्र यहां पर काम नहीं आएंगे! क्योंकि आयामक की शक्ति उनको विध्वंस करने से रोकेगी! अगर आयामक ने ऐसा न किया तो दिव्यास्त्र आयामक को ही नष्ट कर सकते हैं!
ध्रुव की शक्तियां कमजोर हो रही थीं-
और नेत्रापाशा की शक्तियां और तीव्र-
तू मेरी नजरों से छुप नहीं सकता ध्रुव! क्योंकि मेरी नजरें तेरा पीछा कर सकती हैं!
ध्रुव के लिए छुपने के रास्ते भी खत्म हो रहे थे-
और जिन्दा रहने के रास्ते भी-
112
Provide By : www.ESitt.in/forum
ESiti Forum

क्योंकि नेत्रा की उड़ती आंखें ध्रुव को घेर चुकी थीं-
और बिल्ली, चूहे का शिकार करने ही वाली थी-
ये ध्रुव का अंत है! ध्रुव एक नेत्र से बच सकता है, दस से बच सकता है पर बत्तीस से नहीं! दुखद है!
पर वह अजनबी वह बात भूल गया था जो ध्रुव को याद थी-
ये महाघातक थे! पर थे तो ये नेत्र ही-
जो धूल का एक कण भी सह नहीं सकते-
ध्रुव के उस वार ने चट्टान को धूल बनाकर बिखेर दिया और सारे नेत्र उस गुबार में घिर गए-
और उनके पास मलने के लिए हाथ भी नहीं थे-
उनको पता भी नहीं चला कि कब उनके चिथड़े उड़ गए-
कमाल है! ऐसा तो मैं सोच भी नहीं पाया था!
नेत्रों की फौज तो खत्म हो गई थी-
पर नेत्रों को पैदा करने वाला संयंत्र अभी तक जिन्दा था-
कोई बात नहीं! जहां तलवार काम नहीं आती, वहां सुई काम आती है!
जो मेरे नेत्र नष्ट करता है मैं उसके नेत्र छोड़कर उसका बाकी सबकुछ नष्ट कर देता हूं!
बहुत हो गया ये चूहे बिल्ली का खेल!
नेत्रापाश की काली शक्ति अब तुझे भस्म के रूप में बदल देगी! बस, तेरे नेत्रों को छोड़कर!
हा हा हा! ये छोटे-छोटे तीर! ये शायद तेरी मौत के पहले की छटपटाहट है! तड़प ले, तड़प ले!
मैं तो तड़प लूंगा! पर तू तड़प भी नहीं पाएगा, नेत्रापाश!
ओफ़! ये अपनी शक्ति को बढ़ाता जा रहा है, और मेरे घातक दिव्यास्त्र यहां काम नहीं कर रहे हैं!
तू चाहे अमर ब्लैक पॉवर हो, पर तेरा शरीर तो मानव संरचना पर ही आधारित है!

और मानव शरीर के नर्वस सिस्टम में खास स्थानों पर सुइयां चुभोकर उसके अंगों को जड़ किया जा सकता है! उन्हीं खास स्थानों पर...
... जहां पर तेरे शरीर में ये छोटे बाण चुभे हुए हैं!
तू अमर तो अभी भी है, पर पेड़ की तरह जड़ हो गया है!
एक धमाके के साथ मूर्ति के समान जड़ हो चुका नेत्रापाश नीचे गिरा-
और उसी के साथ एक नई गड़गड़ाहट पैदा होने लगी-
अरे! आयामक सिकुड़ रहा है! शायद इसने जिंगालू का आदेश थोड़ी देर से माना है!
आदेश तो आयामक को जरूर मिला है! पर जिंगालू से नहीं!
जिंगालू तो मरकर जीवित हुआ था और इसीलिए वह आयामक उसे आकर्षित तो कर सकता था, पर उसका आदेश नहीं मान सकता था!
फिर ये आदेश देने वाला कहां से पैदा हो गया?
खैर! कोई भी हो!
पर अब आयामक द्वारा सिकुड़ता यह केन्द्र ध्रुव को भी पीस डालेगा और नेत्रापाश को भी! इस अंत से इन दोनों को कोई नहीं बचा सकता!
क्रूरपाश के रूप एक-एक करके समाप्त हो रहे थे और साथ ही उसकी शक्ति भी क्षीण हो रही थी-
आऽऽऽह! इस बार की ब्लैक ऊर्जा में अनोखा पैनापन है! हमारी पुरानी तकनीक इसको संभाल नहीं पाएगी!
आऽऽऽह!
पापा!
मेरा परम ऊर्जा रूप भी इसको रोकने में असफल रहा जयं! तुम सब यहां से भाग जाओ!
कम से कम... ऐसे देवजाति तो जीवित रहेगी!
रहेगी पापा! रहेगी!
पर भागकर नहीं...
...जीतकर!
मुझे इसे रोकने का तरीका समझ में आ गया है!
नहीं जयं! शक्ति केन्द्र की तरफ मत जाओ!

क्योंकि अब इसका निशाना शक्ति केन्द्र ही है! ये शक्ति केन्द्र को तोड़कर... देव-शक्ति की रीढ़ तोड़ देना चाहता है! रुको जयं!
पर जयं के दिमाग में कुछ और ही था-
रुको जयं! शक्ति केन्द्र में जाना मौत को दावत देना है! अब ये गरुड़पाशा के हाथों से नहीं बचेगा!
हाथों से नहीं, परों से कहिए!
परन्तु अब उसके पर नहीं बचेंगे!
गरुड़पाशा के वार से पूरा शक्ति केन्द्र कांप रहा था-
अगले ही पल शक्ति केन्द्र से अद्भुत तरंगें निकलकर गरुड़पाशा के चारों तरफ फैल रही थीं-
और गरुड़पाशा के वार आश्चर्यजनक रूप से कमजोर पड़ते जा रहे थे-
पर जयं को ये अवरोध उसकी मंजिल तक पहुंचने से नहीं रोक सकता था-
और आखिरकार-
अरे! गरुड़पाशा तो हवा में रुक सा गया है! ये... ये चमत्कार तुमने कैसे किया जयं?
इसके चारों तरफ की हवा को सांद्र किरणों से गाढ़ा करके! भारी हवा में ये अपने पंख नहीं हिला सकता, जबकि इस हवा में जेट शक्ति से उड़ने वाले हमारे यान उड़ सकते हैं!
एक और पाशा शक्ति खत्म हो गई महाकाल छिद्र! और... और इधर देखिए! साकार-आकार की तिलिस्मी शक्ति ने पांचों महारथियों की मदद से बंधपाशा को भी निष्क्रिय कर दिया है!
अब मुझे तो डर लग रहा है! कहीं मेरा प्रिय शिष्य क्रूरपाशा भी इसी हालत में न पहुंच जाए!
यही तो मेरी योजना है गुरुदेव!
मैं यही चाहता हूं कि अमर क्रूरपाशा नागराज के हाथों से मारा जाए!
इसी में मेरी जीत छुपी है और श्वेत शक्तियों की हार!
क्या?
मैंने सब सुन भी लिया है दुष्ट, और देख भी लिया है!
शक तो मुझे पहले से ही था कि नागपाशा के पीछे किसी और का हाथ है!
अब तू मेरे हाथों से जिन्दा नहीं बचेगा!

और तेरे खत्म होते ही तेरी योजना का खात्मा भी हो जाएगा!
पर मेरे वार से ज्यादा नहीं! लगता है अब क्रूरपाशा कुंवारा ही मरेगा!
यह तो पता नहीं कि वह वार विसर्पी का क्या हाल करता-
पर यह जरूर पता चल गया कि वह गुरुदेव का क्या हाल करने वाला था-
आहा! वार तो शक्तिशाली है तेरा!
गुरुदेव! ये क्या मूर्खता है?
मूर्खता तो तेरी है महाकाल छिद्र!
नागू!
जो मुझे सामने देखकर भी तू पहचान नहीं पाया!
मूर्ख तो तुम दोनों हो जो आंखें रहते हुए भी अंधे बने रहे! मैं विसर्पी नहीं, छाया विसर्पी हूं!
और बाधाबंध के टूटते ही वह वापस नागद्वीप जा पहुंची थी ताकि अगर नागशक्ति पर भी काली शक्तियों का साया मंडराए तो वह उसे संभाल सके!
विसर्पी ने तो अपने आपको तभी मुझसे बदल लिया था, जब वह नागराज से रूठने का नाटक करके जंगल में अपने दो अनुचरों के साथ जा रही थी!
अब तू मुझे छू भी नहीं सकता, और मैं तुझे मार सकती हूं!
हां। और मेरे सामने विसर्पी भाभी पर वार करने की जुर्रत कर बैठा!
नागू, जाओ! नागराज को क्रूरपाशा को मारने से रोको! वर्ना न जाने ब्रह्मांड पर कौन सी आफत आ पड़ेगी!
अरे! ये क्या हो रहा है?
हमारे चारों तरफ की चीजें सिमटती सी क्यों लग रही हैं!
ये भ्रम नहीं है नागू! अलंध्या सचमुच सिमट रही है!
यह सच था और इसका कारण यह था-
और मैं नागराज का!
तुम... तुम दोनों कौन हो? आयामक तुम्हारे आदेश पर अलंध्या को समेट रहा है! यानी तुम जिंगालू के पुत्र हो!
और आप जरूर ध्रुव हैं!

नागराज का बेटा?
चमत्कार होने कभी बंद नहीं होंगे!
अलंध्या नगरी के साथ-साथ-
उसके कारण पैदा हुई ब्लैक पॉवर्स भी नष्ट होती जा रही थीं-
ये क्या... क्या हो रहा है?
मेरी ब्लैक आर्मी कहां गायब हो रही है!
तेरी पाप की लंका का विनाश हो रहा है, क्रूरपाशा! और ये विनाश तेरे विनाश के साथ ही खत्म होगा!
सपने देखना छोड़ दे नागराज! काला अंधकार कभी खत्म हुआ है जो आज खत्म होगा!
प्रकाश के तले ही तो अंधकार पनपता है!
और फिर तेरे सामने फैला अंधकार तो अमर है!
अलंध्या नष्ट हो या ब्लैक आर्मी...
...क्रूरपाशा के कई रूप अभी भी जीवित हैं!
और हर रूप की एक ही इच्छा है!
तेरा जहरीला खून पीना!
नागराज का दिव्य वस्त्र अभी भी दरिद्रपाशा से जूझ रहा था-
लेकिन बाजी हर करवट के साथ पलट रही थी-
तू अगर अनेक है...
...तो हम भी एक और एक ग्यारह हैं!
ध्रुव! वाह, अब तो मेरे दो से चार हाथ हो गए हैं!
क्रूरपाशा के रूप नागास्त्र और दिव्यास्त्रों की बाढ़ में घिर रहे थे-
ब्लैक पॉवर के क्षीण होने से क्रूरपाशा का अंत निश्चित था-
और नागू को यह अनहोनी रोकनी थी-
पर अनहोनी रोकने से पहले उसे खुद रुक जाना पड़ा-

सही समय पर मैंने इस दुष्ट को पकड़ लिया! वर्ना ये तो ब्रह्मांड का भविष्य बदल देता!
हार में जीत छुपी थी-
और जीत में हार-
धनंजय! तुम यहां पर कैसे आ गए?
अलंध्या का आयाम अवरोध टूट रहा है ध्रुव! अब हम यहां तक आने में समर्थ हैं!
महाशक्तियां जमा हो गई थीं-
और उनके वारों से बिलबिलाकर क्रूरपाशा के रूप उसी के अंदर घुसने लगे थे-
यति आयाम का अवरोध भी टूट चुका है! अब एक-एक यति सौ-सौ ब्लैक पॉवर्स के बराबर है! अब क्रूरपाशा का कोई रूप नहीं बचेगा!
परन्तु अभी भी क्रूरपाशा सब पर भारी पड़ रहा था-
ओफ़! यह मर नहीं सकता! यह अमर है! इसको मारने का तरीका सिर्फ भीरूपाशा बता सकता था...
"और वह इस रहस्य के साथ न जाने कहां पर गायब हो चुका है-"
ये दिग्गज इतनी आसानी से कैसे पकड़े गए? सच्चाई जाननी पड़ेगी!
मारो! संपर्क टूटना नहीं चाहिए!
ब्लास्ट दगा-
पैर में छेद हो गया-
पर ममी का पैर तक नहीं हिला-
कमाल है! ममी मर चुकी है! ये... ये सचमुच काबू में आ गए हैं!
काबू... में... आ...
ममी के पैर पर ब्लास्ट मारो कैप्टेन!
क्या?

आऽऽऽह! रोबो के परमानेंट कोड जानने की कीमत टांग पर सिर्फ एक ब्लास्ट! सौदा महंगा नहीं है! रोबो जड़ हो गया है! और उसका डाटा उसके कंप्यूटर सिस्टम से इस लैपटॉप पर तेजी से ट्रांसफर हो रहा है!
लेकिन... लेकिन... ये क्या?
ये डाटा तो...
डाटा क्या?
क्या कहता है रोबो का डाटा?
इसमें रोबो के साथ साथ...
...किसी भीरूपाशा का डाटा भी है! उसकी पूरी मेमोरी है!
भीरूपाशा! क्या ये नागपाशा का कोई रिश्तेदार है?
हो सकता है! पर अगर ऐसा है तो ये डाटा नागराज तक पहुंचाना जरूरी है! पर ये डाटा नागराज तक पहुंचेगा कैसे?
वन मिनट! मुझे एक और मैग्नेटिक इमेज मिल रही है!
अब कौन है?
ये तो... नगीना है! चक्कर कुछ समझ में नहीं आ रहा है!
पर मुझे एक चीज समझ में आ रही है! अगर ये नगीना नागिन है और मैग्नेटिक वेव्स के रूप में है तो इसी के जरिए हम डाटा नागराज तक भेज सकते हैं!
क्योंकि नागराज के शरीर में किसी भी इच्छाधारी नाग को समा लेने की क्षमता है!
हूम! आइडिया ट्राई करने में बुराई नहीं है!
मैं ब्रह्मांड रक्षकों की फ्रीक्वेंसी का प्रयोग करती हूं!
अच्छा है! वर्ना मैं भी मदद के लिए तैयार था!
अनोखी मैग्नेटिक तरंगों पर तैरता डाटा—
आयामों की खाई को पाटने लगा—
और—
ओह!
क्या हुआ नागराज?
पता नहीं! मुझे अपने शरीर में ब्लैक ऊर्जा का बहाव महसूस हो रहा है! और इसमें नाग-ऊर्जा और तंत्र ऊर्जा भी हैं!
और मुझे...
...क्रूरपाशा को समाप्त करने का रास्ता भी नजर आ रहा है!
यह अवश्य भीरूपाशा की ब्लैक ऊर्जा है जो तुम्हारे शरीर में समा रही है!
क्रूरपाशा के शरीर की हर कोशिका के साथ एक अमृत कण जुड़ा हुआ है! इसको मारने के लिए मुझे इसकी हर कोशिका को अलग करना होगा!
और यह काम सिर्फ इच्छाधारी शक्ति कर सकती है!
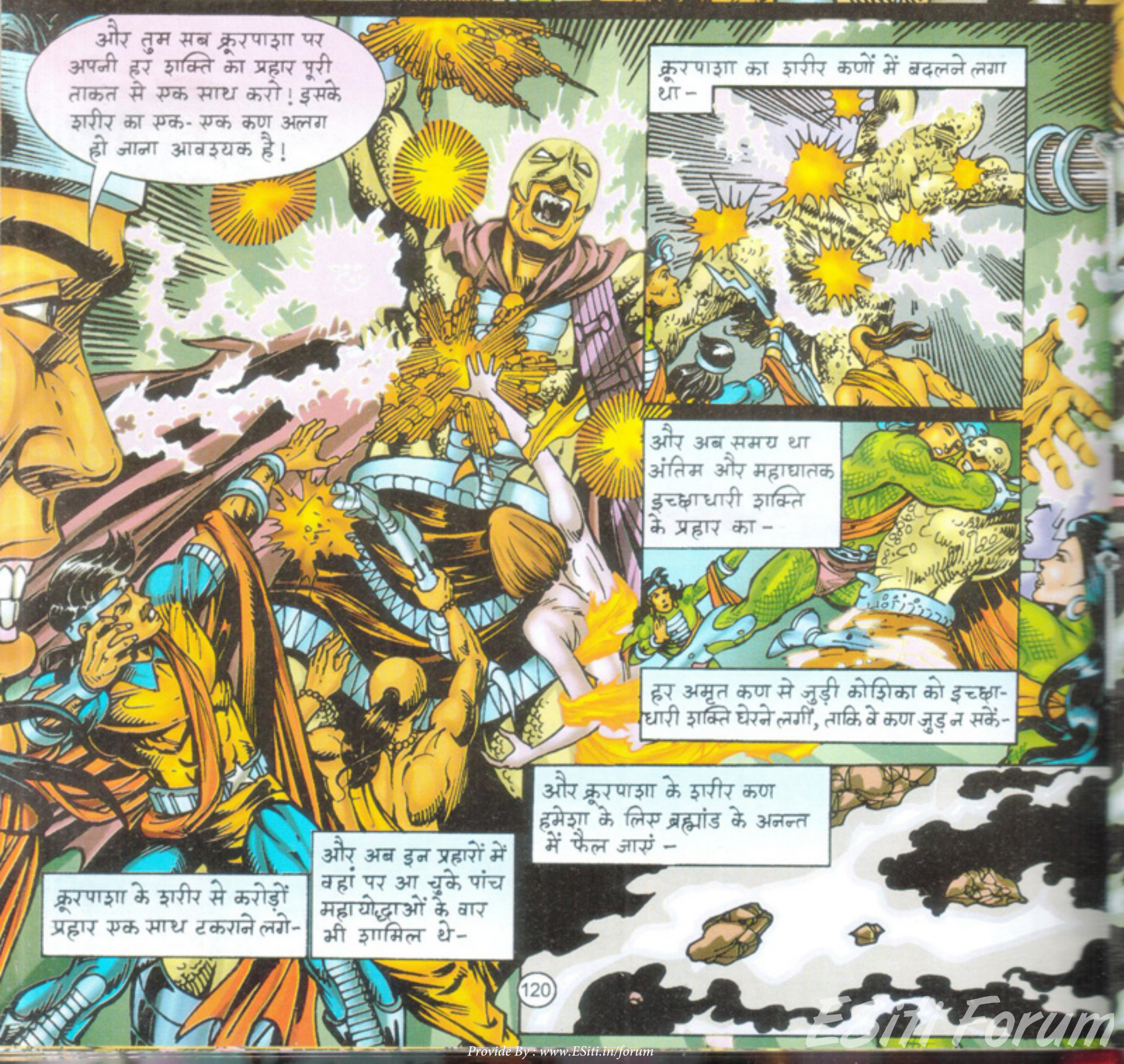
परन्तु क्रूरपाशा जैसी ब्लैक पॉवर को विखंडित करने के लिए हमको अपनी पूरी शक्ति की जरूरत पड़ेगी! ...
... और मुझे चाहिए होगी असीमित इच्छाधारी ऊर्जा!
मैं यहां पर मौजूद हर एक इच्छाधारी सर्प शक्ति को अपने शरीर में प्रवेश करने का आह्वान करता हूं!
और तुम सब क्रूरपाशा पर अपनी हर शक्ति का प्रहार पूरी ताकत से एक साथ करो! इसके शरीर का एक-एक कण अलग हो जाना आवश्यक है!
क्रूरपाशा का शरीर कणों में बदलने लगा था-
और अब समय था अंतिम और महाघातक इच्छाधारी शक्ति के प्रहार का-
हर अमृत कण से जुड़ी कोशिका को इच्छाधारी शक्ति घेरने लगीं, ताकि वे कण जुड़ न सकें-
और क्रूरपाशा के शरीर कण हमेशा के लिए ब्रह्मांड के अनन्त में फैल जाएं-
और अब इन प्रहारों में वहां पर आ चुके पांच महायोद्धाओं के वार भी शामिल थे-
क्रूरपाशा के शरीर से करोड़ों प्रहार एक साथ टकराने लगे-

क्रूरपाशा और उसके साथ-साथ काली शक्तियों का ब्रह्मांड पर राज करने का सपना भी धुआं बनकर उड़ गया है श्वेत शक्तियों!
इसके लिए मेरा अभिवादन भी स्वीकार करो और आशीर्वाद भी!
और साथ में मेरा धन्यवाद भी।
तूने ठीक वही किया जो मैं चाहता था गोरखनाथ!
अब काली शक्तियों को ब्रह्मांड पर फैलने से कोई नहीं रोक सकता!
तू... तू ये क्या बकवास कर रहा है, अजनबी!
काली शक्तियां तो खत्म हो चुकी हैं!
तू... तू आखिर है कौन?
चेहरा जरूर दिखाऊंगा...
... पर मुंह दिखाई में ब्रह्मांड का राज देना पड़ेगा, गोरखनाथ!
महाकाल छिद्र! तो... तो तू ही वह अजनबी था जो क्रूरपाशा को हराने के लिए कदम-कदम पर हमारी मदद कर रहा था।
ये... ये कैसा षड्यंत्र है?
सीधी सादी योजना थी जो तू देखते सुनते भी समझ नहीं पाया! यही काम मैंने रावण के समय में किया था! पर उस मूर्ख ने अमृत को एक ही स्थान यानी अपनी नाभि में इकट्ठा कर रखा था! पर क्रूरपाशा का अमृत पूरे शरीर में फैला था!
वह अमर था! और अमर क्रूरपाशा को सिर्फ नागराज जैसी शक्ति ही नष्ट कर सकती थी! यह पूरा खेल इसीलिए रचा गया था ताकि नागराज क्रूरपाशा को नष्ट कर दे और वह अमर काली ऊर्जा के रूप में फैलकर पूरे ब्रह्मांड को अपने आगोश में ले ले!
अब यह काली शक्ति ब्रह्मांड के हर आयाम में फैलेगी और देखते-देखते हर जड़ और चेतन के अन्दर प्रवेश कर जाएगी!
श्वेत शक्तियां पूरी तरह से समाप्त हो जाएंगी! उनका अमृत उनका ही नाश कर देगा!
ओफ्! ये मैंने क्या किया? हे ईश्वर, माफ कर देना मुझे!
पाप मुझे नहीं हरा पाया! पर छल ने हरा दिया!

अब ब्रह्मांड को बचा पाना असंभव है! इस अमर काली शक्ति को नष्ट करने का या रोकने का कोई जरिया हमारे पास नहीं है!
है, बाबा है!
अगर ये ब्लैक पॉवर अमर हैं तो हमारे शरीरों में भी एक ऐसी चीज है जो अमर है...
...हमारी आत्माएं!
हम सबकी पुण्यात्माएं इस दुष्टात्मा को अपना प्रभाव फैलाने से रोकेंगी!
साथियों, परमयुद्ध परम बलिदान मांगता है...
...और वह बलिदान देने का समय आ गया है!
मैं आप सभी पुण्यात्माओं से आपकी आत्माएं मांगता हूं!
हम खुशी से तैयार हैं!
हमारी सहायता करें बाबा।
वैसे तो क्रूरपाश जैसी अमर दुष्टात्मा को रोकने के लिए तुम्हारी और ध्रुव की पुण्यात्माएं ही सक्षम हैं!
परन्तु फिर भी मैं परमात्मा की शक्ति से तुम सबकी आत्माओं को स्वतंत्र करता हूं!
अलंद्या के आयाम का काला आकाश पुण्यात्माओं की असंख्य छायाओं से भर गया-
और ब्रह्मांड को लीलने के लिए फैलती क्रूरपाश की अमर ऊर्जा के चारों तरफ एक बांध सा बनने लगा-
नहीं! ये नहीं हो सकता!
ये हो रहा है महाकाल छिद्र!
और इस परमयुद्ध में आखिरी आहुति मैं दूंगा!
तुझे नष्ट करने के लिए!
ब्रह्मांड का विनाश थम गया था-

ये क्या था मम्मी? कोई आवाज नहीं हुई लेकिन लगा कि जैसे कोई धमाका हुआ है!
हां! सुपर सोनिक बूम के जैसा!
ऐसा आभास तो मुझे भी हुआ है!
आकाश भी एकाएक साफ हो गया है! लगता है जैसे कि अंधेरा खत्म हो गया है!
ये नागराज और तुम्हारे पिता ध्रुव जैसी पुण्यात्माओं के परम त्याग का परिणाम है बच्चों!
त्याग? इसका क्या मतलब है बाबा?
अपने प्राणों का बलिदान दिया है उन्होंने! उन्होंने एक ऐसा परमयुद्ध जीता है जिसको जीतने की उम्मीद मैंने छोड़ दी थी!
ओफ़!
ये उन पुण्यात्माओं के लिए शोक करने का समय नहीं है नताशा! उन्होंने मानवता को एक नया जीवन दिया है!
परमात्मा की सहायता की है उन्होंने!
सिर्फ इतना ही नहीं! वे मानवता की रक्षा के लिए कुछ और भी छोड़कर गए हैं!
अपनी अगली पीढ़ी!...

... इनके रहते ब्लैक पॉवर्स जैसी दुष्ट शक्तियां दुबारा सिर उठाने की हिम्मत भी नहीं करेंगी! और अगर करेंगी तो कुचल दी जाएंगी!
और इन भविष्य के रक्षकों को संवारना और संभालना तुम्हारी जिम्मेदारी है, नताशा!
एक परमयुद्ध समाप्त हो गया था! परन्तु चुनौतियां समाप्त नहीं हुई थीं! और न ही खत्म हुए थे उन चुनौतियों से निपटने वाले-
ये पल एक युग की इति था-
तो दूसरे युग का आरंभ-

प्यारे नागायण प्रेमियों,

2007 से शुरु हुआ यह सफर 2009 में खत्म हुआ। इस लम्बी सीरीज को सफल बनाने में आपसे जो सहयोग मिला उसके लिए राज कॉमिक्स आपका आभारी है। इन 24 महीनों में हर दिन नागायण पर कुछ ना कुछ काम चलता रहा। आपके लिए एक पार्ट के बाद दूसरे पार्ट का इंतजार जरूर कठिन रहा लेकिन यहां हर समय नागायण ही चलती रही। पता ही नहीं चला कि यह समय कब कट गया। इस अभूतपूर्व चित्रकथा के लिए मैं अनुपम एवं जॉली सिन्हा जी का आभार जरूर प्रकट करना चाहूंगा जिन्होंने मुश्किल समय और कई विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी इस महागाथा को ना केवल पूरा किया अपितु अद्भुत यादगार बना डाला। नागराज और सुपर कमाण्डो ध्रुव के बीसियों पात्रों को लेकर एक युग की रचना करना आसान काम नहीं था किंतु अनुपम जी और जॉली जी ने इसे भलि-भांति अंजाम दिया। यह इतिहास केवल अनुपम जी और जॉली जी ही रच सकते थे। आरंभ में इसके केवल चार पार्ट्स की प्लानिंग की गई थी लेकिन जैसे-जैसे कथा आगे बढ़ी इसका जादू बढ़ता चला गया। हमें लगा कि एक युग गाथा को चार पार्ट में खत्म करना उसकी हत्या कर देने के बराबर होगा। तब इस सीरीज से पार्ट्स का प्रतिबंध हटा दिया गया। अब अनुपम जी और जॉली जी इसे और बेहतरीन बनाने में जुट गए। हर काण्ड पहले से अच्छा साबित हुआ। अब यह अंतिम पार्ट **'इतिकाण्ड'** आपके हाथों में है इसका सही विश्लेषण, मूल्यांकन आपके ऊपर छोड़ता हूं। अपनी अमूल्य राय से अवश्य अवगत कराएं।

नागायण के पश्चात् नागराज एक बार फिर महानगर से अपनी यात्रा शुरु कर रहा है। **'नागराज के बाद'** जी हां महानगर में अगर नागराज ना हो तो क्या होगा? ऐसी ही कहानी शुरु हो रही है **'नागराज के बाद'** में। क्या हुआ नागराज को? कहां है नागराज? शुरु हो रही है नागराज की तलाश की कहानी। आतंकहर्ता नागराज की **'नागराज अण्डर अरैस्ट'** सभी पाठकों को पसंद आई जिसकी मुझे बहुत खुशी है। **इटली सीरीज** की आगामी कॉमिक्स और भी लाजवाब होगी इसका मैं आपसे वायदा करता हूं। **इटली सीरीज** के बाद आ रही है आतंकहर्ता नागराज की टू इन वन कॉमिक्स डोगा के साथ **'26/11'** जिसमें आपको देखने को मिलेगी एक जबरदस्त कूट प्रबंध अर्थात् कॉन्सपीरेसी। **'26/11'** के एकदम बाद हम ला रहे हैं एक नया नागराज, एक नया डोगा। नरक नाशक नागराज और दनादन डोगा कॉमिक्स का नाम होगा **'हल्ला बोल'**। विस्तृत विवरण के लिए पढ़ें **'ओमेर्टा'** का ग्रीन पेज।

प्यारे दोस्तो! बहुत दुख के साथ आप सभी को सूचित कर रहा हूं कि राज कॉमिक्स के नवरत्नों में से एक श्री जे. एस. बेदी जी अब हमारे बीच नहीं रहे। उनकी श्रद्धांजलि को समर्पित ग्रीन पेज उन्हीं की कॉमिक्स जलयक्ष में प्रकाशित किया जाएगा। 31 जनवरी 2009 को अनुपम सिन्हा जी की माता जी का देहांत हो गया। राज कॉमिक्स की तरफ से मैं उन महान आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करता हूं। परम पिता परमेश्वर माता जी की आत्मा को शांति प्रदान करें और अनुपम जी के परिवार को यह अपूर्णिय क्षति सहने की ताकत प्रदान करें।

अभी बस इतना ही, अब मिलूंगा अगले ग्रीन पेज पर।

अपने पत्र हमें आप इस पते पर भेजें : **ग्रीन पेज नं. 283, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-84**

Forum पर अपनी पोस्ट आप **www.rajcomics.com** पर करें।

जनून!

धन्यवाद

आपका—संजय गुप्ता

GREEN PAGE NO. 283